मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई – पत्रिका

वर्ष: 3। अंक: 19। पृष्ठ: 47। मूल्य: निःशुल्क । इंदौर–उज्जैन। शुक्रवार 1 मार्च 2024। फाल्गुन/चैत्र मास (1), विक्रम संवत् 2080 । इ. संस्करण

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।।

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
(हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन
मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर–वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)

सम्पादक
डॉ. अलका शर्मा (दिल्ली)

उपसम्पादक
श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा (लखनऊ)
सुश्री इंदु सिंह "इन्दुश्री" (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

• गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
• पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
• समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	संपादक की कलम से	डॉ. अलका शर्मा	03
2	महाशिवरात्रि महोत्सव	सुजाता प्रसाद	06
3	शिक्षा और साहित्य के विकास में...	आकांक्षा यादव	09
4	पत्रकारिता और प्रौद्योगिकी...	सोनल मंजू श्री ओमर	15
5	बसंत तुम्हारा अभिनंदन है	चेतना साबला	19
6	पापा	संजय जांगिड 'भिरानी'	19
7	पर्यावरण चिन्तन 13	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	20
8	भक्ति और शक्ति का संगम...	श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा	21
9	क्रान्तिकारियों के बलिदान का...	कृष्ण कुमार यादव	24
10	भारतीय संस्कृति की जड़ो...	डॉ. अलका शर्मा	28
11	मेरा गाँव	प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे	30
12	सखि! वसंत ऋतु आए	डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक	30
13	ईमानदारी स्वयं में ही एक बहुत...	सीताराम गुप्ता	31
14	महाशिवरात्रि का महत्व	डॉ. अर्चना प्रकाश	33
15	अहमियत (लघुकथा)	दया शर्मा	35
16	गीत – मैं खिलौना हूँ उसका	डॉ. निशा नंदिनी भारतीय	36
17	आत्मिक सुख, शांति एवं आनंद...	डॉ. अजय शुक्ला	37
18	सन्तश्रेष्ठ तुकाराम	भावना दामले	40
19	लघुकथा	पंडित कैलाशनारायण	42
20	सांस्कृतिक कवयित्री महादेवी	डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम	43
21	संग्रह करना बुरी बात	गौरीशंकर वैश्य विनम्र	45
22	तूं विद्या की देवी है हंसवाहिनी!	मधुबाला शांडिल्य	46
23	उठो हो गई भोर	ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र	47

संपादक की कलम से

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

शं नो द्यावा पृथिवी पूर्वहुतौ। शमन्तरिक्षम दृश्ये नो अस्तु।।
शं न औषधिवर्रीनि भवन्तु। शं नो राजस्पतिरस्तु जिष्णु।।

(धुलोक और पृथिवी हमारे लिए सुखकारक हो। अंतरिक्ष भी हमारी दृष्टि के लिए कल्याण कारी हो। औषधियाँ व वृक्ष भी हमारे लिए कल्याणकारी हो, लोकपति इंद्र भी हमें शांति प्रदान करें)

अध्यात्म संदेश पत्रिका परिवार के समस्त सुधी जनो को नमो नमः

विधाता प्रदत्त सृष्टि में प्रकृति ने सम्पूर्ण विश्व को अनेको सौगाते दी है। जिसमे भारत वर्ष सर्वाधिक सौभाग्यशाली है यहां प्रकृति का इतना वैविध्य व नैसर्गिक सौंदर्य देखने को मिलता है। जिसमे ऋतुओं का क्रमशः परिवर्तन जीवन की एकरसता को दूरकर मन मे उत्साह, उल्लास, नवऊर्जा का संचार करने में पुर्ननवा का काम करता है -

क्रमशः वेश बदलती ऋतुएं। करे प्रकृति का नित नव श्रृंगार।।
सुदूर फैली हरीतिमा युक्त सघन वन उपवन करे हर्षित सबका मन।।

भारत को इसी कारण ऋतुओं की विविधताओं का देश कहा जाता है जब एक ऋतु से हम आकुल-व्याकुल हो उठते है तभी कुछ समय बाद दूसरी ऋतु दस्तक दे देती है। अभी शिशिर ऋतु अपनी अंतिम सांसे गिन रही होती है कि ऋतुराज बसन्त का आगमन होते ही धीमी धीमी बयार हर हृदय की कली को खिला देती है इसी लिए इस ऋतु से होली में वातावरण खुशनुमा हो जाता है। मानो ऋतुराज महंत के स्वागत में सम्पूर्ण प्रकृति झूम झूम कर तत्पर हो -

अगः धूम लिए घूम रहे सुमन दिश दिगंत।
आये महंत बसंत।
खड-खड़ खड़ ताल बजा नाच रही विसुध हवा।
डाल-डाल पर अलि पिक के गायन ने बांधा समा।
तरु-तरु की ध्वजा उठी। जय जयकार का न है अंत।
आये महंत बसंत।

*सभी स्थानों पर विजय प्राप्त कराने वाली **विजया एकादशी 6 मार्च** को मनाया जाएगा।*

प्रचंडं प्रकष्टम प्रगल्भं परेशं अखंडम अजम भानुकोटिप्रकाशं,

*महाकाल भोलानाथ के अर्चन वंदन का पावन दिन **महाशिवरात्रि 8 मार्च** को धूम धाम से मनाया जाएगा ।*

फाल्गुन मास के आते ही सारा वातावरण रंगीन ही जाता है। खेतो में लहराती पीली सरसों, हरे हरे पेड़ो पर कूकती कोयलें, पलाश के केसरिया फूल, बौराये आमों की गंध। कुल मिलाकर रंग

बिरंगी **होली** का पर्व सभी गिले शिकवे भुलाकर समाज मे आपसी सौहार्द्र का संदेश देता होली का पर्व इस बार 25 मार्च को फाल्गुन पूर्णिमा के दिन मनाया जाएगा।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारत सरकार की ओर से ज्ञानपीठ अवार्ड तुलसी पीठ के संस्थापक व अध्यक्ष, जगतगुरु, संस्कृत के महान विद्वान, 22 भारतीय भाषाओं के ज्ञाता, 240 से अधिक धर्म विषयक पुस्तको के लेखक श्री **"रामभद्राचार्य"** जी को दिया गया। दूसरा ज्ञानपीठ अवार्ड महान लेखक, शायर कवि **"गुलजार"** जी को दिया गया

भारत सरकार के द्वारा बिहार के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर जी, राम मंदिर आंदोलन के मुख्य स्तंभ और बाजपेयी के सरकार भूतपूर्व उप- प्रधानमंत्री श्री लाल अड़वाणी, ऋषि व किसानों के मुखिया भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी, भूत पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव जी, हरित क्रांति के जन्मदाता महान ऋषि वैज्ञानिक डॉ. एस स्वामीनाथन जी इन सभी हस्तियों को भारत सरकार की ओर से भारत का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया।

अध्यात्म संदेश पत्रिका का मार्च मास का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम आनंदित है। पत्रिका की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए अपने ज्ञानवर्धक लेखों के माध्यम से सहयोग करने वाले सभी विद्वानों को नमन करते हुए आशा करती हूँ कि भविष्य में भी पत्रिका के प्रति आप सभी का स्नेह पूर्ववत बना रहेगा।

रंग बिरंगी होली की अग्रिम शुभकामनाओ सहित -

संपादक
डॉ. अलका शर्मा

प्रतिक्रियाऐं

अध्यात्म संदेश : आत्मा का संदेश

महोदया,

पिछले कुछ अंकों से मैं अध्यात्म संदेश पत्रिका पढ़ता आ रहा हूँ। कभी–कभी पत्रिका का अंक नहीं भी मिलता है। परंतु इसके प्राप्त अंकों को देखकर और उन्हें पढ़कर मन इतना गदगद हो जाता है कि आनंद की सीमा नहीं रहती। साहित्य और पत्रकारिता दोनों का श्रेष्ठ संगम इस पत्रिका में मिलता है। पत्रिका को जो कलेवर दिया जाता है, वह अलग ही तरह का होता है।

प्रथम तो हर बार इसका आवरण ही इसकी आध्यात्मिक शक्ति और इसके रूप–सौंदर्य का आकर्षण बन जाता है। यही पाठक को स्वयं पर अटकाए रखता है। यह पत्रिका का पूरा दर्पण होता है। आलेखों की सामग्री तो अत्यंत स्तरीय होती ही है, उनकी प्रस्तुति भी अति आकर्षक होती है। हर पत्रिका में सभी लेखों का स्तर समान रूप से अच्छा नहीं हुआ करता, परंतु इस पत्रिका के हर अंक के सभी लेख इसके आभूषण होते हैं। यहाँ तक कि इसका फोंट भी बड़ी सूझ–बूझ का परिचायक है। जब इस पत्रिका में इस तरह का अध्यवसाय देखने को मिलता है तो लगता है कोई अलौकिक शक्ति उसका प्रेरणा–स्रोत बन रही है।

आलेखों के साथ चित्रों की प्रस्तुति भी बहुत योजनाबद्ध होती है। सभी चित्र अनोखे और बखूबी तैयार किए गए होते हैं और मनमोहक होते हैं। लेख–सामग्री की तरह ये भी अपनी ओर बरबस ध्यान आकर्षित करते हैं।

आध्यात्मिक पत्रिकाओं में अनाध्यात्मिक लोग रुचि नहीं रखते, परंतु एक बार जब यह पत्रिका किसी के हाथों में आ जाती है तो यह सबसे बरबस अपने पन्ने खुलवा लेती है और उसे कुछ न कुछ पढ़ने को विवश किया करती है। दर असल इस पत्रिका में अध्यात्म के वे पहलू ही शामिल नहीं होते, जो व्यक्ति को सुदिशा प्रदान करते हैं और जीवन का आनंद लेने में सहायक होते हैं, इसमें जीवन के लिए आवश्यक अन्य ज्ञान की बातें भी होती हैं। वास्तव में यह पत्रिका पाठक के मन में आत्मा के संदेश के रूप में उतरती है। इसलिए मैं समझता हूँ कि जिस अध्यात्मवादी को यह पत्रिका पढ़ने को मिलती होगी, इसे प्राप्त करके वह आनंद में डूब जाता होगा।

यह पत्रिका संपादकमंडल, विशेषकर संपादक, के अत्यधिकश्रम का परिणाम है और हर प्रकार से सराहनीय है। मैं समझता हूँ, वर्तमान में यह मंजे हुए हाथों में है, क्योंकि कोई किसी पत्रिका की इससे बेहतर प्रस्तुति की कल्पना नहीं कर सकता। पत्रिका की सम्पादक महोदया का तो इसे संवारने में सीधा हाथ है ही, इसकी सलाहकार समिति के सभी साधक महानुभावों का भी इसे पूरा आशीर्वाद प्राप्त हुआ लगता है। साथ ही इसमें अपने प्रधान संपादक, वरिष्ठ संपादक, उप संपादक का भी पूरा सहयोग झलकता है। इसके विशिष्ट प्रकार के ग्राफिक वर्क की भी इसे नूतन रूप देने में विशिष्ट भूमिका है। सबका निष्ठापूर्ण सहयोग इस पत्रिका को स्वर्ग की पत्रिका बनाता नजर आता है। इसकी प्रस्तुति से ऐसा नहीं लगता कि पाठक इसकी हार्ड कॉपी नहीं पढ़ रहा है। यह कुछेक उन पत्रिकाओं में से है, जिन्होंने अपने बारे में लिखने को मुझे विवश किया है और उनमें भी यह श्रेष्ठ है। सम्पादक की प्रतिभा इसमें खूब निखरकर आई है।

मैंने ये कुछ शब्द लिखे हैं, यह और भी अधिक सराहाना की अधिकारिणी है। दरअसल यह उन सभी निष्कर्षों पर खरी है, जो पत्रिकाओं को श्रेष्ठता का सोपान दिया करते हैं। इस पत्रिका के संपादन से संपादक साध्वी का दर्जा प्राप्त करती लगती हैं। उन्हें साधुवाद, इस अनुरोध के साथ कि वे अन्य संपादकों को भी ऐसी सिद्धि का मंत्र दें।

सादर।

– रमेश चन्द्र
गुरुग्राम, हरियाणा

08 मार्च पर विशेष

महाशिवरात्रि महोत्सव

सुजाता प्रसाद
स्वतंत्र रचनाकार
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
नई दिल्ली, भारत

महाशिवरात्रि बाह्य जगत से अंतर्मन की यात्रा का विशेष दिवस है। महाशिवरात्रि चेतन मन की जागृति की रात है। आध्यात्मिक व्याख्या कहती है कि प्रकृति इस रात मनुष्य को परम सत्ता से जोड़ती है। महाशिवरात्रि की रात वह महान रात्रि है जिसका शिव तत्व से गहरा संबंध है। अगर हम संधि विच्छेद करके देखें तो महाशिवरात्रि शब्द तीन शब्दों से मिलकर बना हुआ है। जिसमें महा का अर्थ महान हुआ, शिव स्वयं देवता हुए और रात्रि का अर्थ रात हुआ। इन तीन शब्दों को मिलाने पर महाशिवरात्रि का सरल अर्थ हुआ ''शिव की महान रात''। महाशिवरात्रि को पूरे देश में महोत्सव के रुप में मनाया जाता है।

हिंदी तिथि के अनुसार हर माह के चौदहवें दिन या अमावस्या से पहले का एक दिन शिवरात्रि कहलाता है। एक कैलेंडर वर्ष में आने वाली सभी शिवरात्रियों में से महाशिवरात्रि को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है, जो अंग्रेजी तिथि के अनुसार फरवरी–मार्च महीने में मनाया जाता है। इस प्रकार पूरे साल में बारह शिवरात्रि होती हैं, उनमें से फाल्गुन माह की शिवरात्रि का विशेष महत्व होता है। इसीलिए फाल्गुन माह की शिवरात्रि को महाशिवरात्रि पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन भक्त पूरी श्रद्धा से अपने आराध्य शिव की आराधना करते हैं।

महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव के साथ माता पार्वती की पूजा करने का विधान है। धार्मिक मान्यता है कि इस दिन व्रत–पूजा करने से भक्तों को सुख समृद्धि, सौभाग्य वृद्धि का आशीर्वाद मिलता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान शिव और उनकी शक्ति माता पार्वती की आराधना करने से भक्तों पर भगवान शिव और मां पार्वती की विशेष कृपा मिलती है। महाशिवरात्रि के दिन देवों के देव महादेव को रंग चढ़ाने के बाद से ही होली पर्व की भी शुरुआत हो जाती है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस तिथि को भगवान शिव ने कैलाश पर्वत पर माता पार्वती से विवाह किया था। महाशिवरात्रि को शिव के विवाहोत्सव के रूप में मनाया जाने की परंपरा है। शिव–पार्वती के विवाह के अलावा एक मान्यता यह भी है कि महाशिवरात्रि की रात भगवान शिव ने तांडव नृत्य किया था। और हम जानते हैं कि तांडव नृत्य को सृजन और विनाश की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। क्योंकि ऐसा माना जाता है कि सृष्टि के आरंभ में इसी दिन मध्यरात्रि को भगवान शिव कालेश्वर के रुप में प्रकट हुए थे। कहते हैं कि महाकालेश्वर भगवान शिव की वह शक्ति है जो सृष्टि का समापन करती है। मान्यता है कि

जब भगवान शिव तांडव नृत्य करते हैं तो पूरा ब्रह्माण्ड विखडिंत होने लगता है। इसलिए महाशिवरात्रि की इस रात को कालरात्रि भी कहा गया है।

पौराणिक कथा के अनुसार फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को ही भगवान शिव सर्वप्रथम शिवलिंग के रूप में प्रकट हुए थे। इस प्रकार शिव के निराकार रूप से साकार रूप में अवतरित होने की रात्रि महाशिवरात्रि कहलाती है। वास्तव में शिवलिंग असीम ऊर्जा का पिंड है।

शिवपुराण में भी वर्णित है कि महाशिवरात्रि की उस रात ज्योतिर्लिंग के प्रकट होने के आदि और अंत का पता ही नहीं चल सका। स्वयं भगवान ब्रह्मा और विष्णु भी समर्थ नहीं हुए। भगवान शिव को इसलिए स्वयं भू कहा जाता है। स्वयं भू का अर्थ होता है प्राकृतिक, जो अजन्मा हो, या जो स्वयं पृथ्वी से प्रकट हुआ हो। समय की उस घड़ी में शिव का वह स्वरुप महाशिव कहलाया और वह रात्रि महाशिवरात्रि। इसीलिए हर वर्ष भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग के प्राकट्य दिवस के दिन महाशिवरात्रि मनाने की परंपरा शुरू हुई। सनातन धर्म में महाशिवरात्रि का पावन पर्व भगवान शिव के दिव्य आविर्भाव का मंगल सूचक पर्व है।

एक मान्यता के अनुसार इस दिन कैलाश पर्वत के साथ एकात्म हो गए थे शिव। इसीलिए साधकों की आस्था के अनुसार इस दिन भगवान शिव पर्वत की तरह स्थिर और निश्चल हो गए थे। वहीं यौगिक परंपरा में शिव को आदि गुरु माना जाता है, अर्थात पहले गुरु जिनसे ज्ञान उपजा। यहां उन्हें किसी देवता की तरह नहीं पूजा जाता है। कहते हैं ध्यान में मग्न शिव अनेक सहस्राब्दियों के बाद एक दिन पूर्ण रूप से स्थिर हो गए। वह दिन महाशिवरात्रि का ही था। उनके भीतर की सारी गतिविधियां शांत हो गई थीं और वे पूरी तरह से स्थिर हो गए थे। इसलिए साधक महाशिवरात्रि को स्थिरता की रात्रि के रूप में भी मनाते हैं।

एक मान्यता यह भी कहती है कि महाशिवरात्रि के दिन समुद्र मंथन (अमृत मंथन) के दौरान जब देवताओं और राक्षसों ने समुद्र

की गहराई में छुपे अमृत को पाने के लिए समुद्र मंथन किया तो अमृत कलश के साथ विष से भरा एक पात्र भी निकला। तब भगवान शिव ने देवताओं और समस्त जीवों की रक्षा के लिए उस विष को पी लिया था। इस प्रकार देवाधिदेव भगवान शिव के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय पाने के दिवस के रूप में भी मनाई जाती है महाशिवरात्रि।

महाशिवरात्रि मनाने का वैज्ञानिक महत्व भी है। महाशिवरात्रि की रात में पृथ्वी का उत्तरी गोलार्द्ध इस तरह से अवस्थित होता है कि मनुष्य के अंदर की ऊर्जा का प्रवाह प्राकृतिक रूप से उर्ध्वगामी यानी ऊपर की ओर होता है। अर्थात महाशिवरात्रि की रात में ब्रह्माण्ड में ग्रहों एवं नक्षत्रों की ऐसी स्थिति होती है जिससे एक विशेष ऊर्जा का प्रवाह होता है। महाशिवरात्रि एक ऐसा शुभ दिन है, जब प्रकृति सहज ही मनुष्य को उसके आध्यात्मिक शिखर तक पहुंचने में मदद करती है। रात्रि जागरण के इस अवसर पर साधक अपनी रीढ़ की हड्डी सीधी रखते हुए ध्यान मुद्रा में उर्जा के प्राकृतिक प्रवाह का आवाहन करते हैं। रात्रि जागरण करके इस ऊर्जा का उपयोग आत्मचेतना को जागृत करने में किया जाता है। पांच इंद्रियों के विकार को दूर कर अपनी चेतना को शिव के साथ तंत्र (सिस्टम) में स्थिर करना इसका उद्देश्य होता है। महाशिवरात्रि के दिन रात्रि जागरण का विशेष महत्व होता है। कहते हैं कि महान पर्व महाशिवरात्रि पर रात्रि जागरण से जीवन के कष्ट दूर होते हैं, इसलिए साधक महाशिवरात्रि की रात सोते नहीं हैं।

मंत्र में शक्ति निहित होती है। जब कोई व्यक्ति मंत्रों का वाचिक या मानसिक जाप करता है, तो उसके मस्तिष्क से सकारात्मक ऊर्जा निकलती है, जिससे नकारात्मक विचार प्रभावहीन होने लगते हैं। मंत्र जाप एक प्राचीन परंपरा है, जो हमारे मन को शांति प्रदान करता है। इसीलिए मंत्र जाप करना आध्यात्मिक साधना और ध्यान का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।

भगवान शिव की आराधना में भी मंत्र जाप का विधान है।

भगवान शिव की आराधना का मूल मंत्र है **"ॐ नमः शिवाय"** जिसका अर्थ होता है, मैं भगवान शिव को नमन करता/करती हूं। ऊं नमः शिवाय एक चमत्कारी मंत्र है और इस मंत्र का आध्यात्मिक महत्व है। धर्मग्रंथों के अनुसार **"ॐ नमः शिवाय"** मंत्र के जप से भगवान शिव अति शीघ्र प्रसन्न होते हैं। साथ ही यह भी कहा गया है कि इस मंत्र के जप से भक्तों के सभी दुःखों का निवारण हो जाता है और उन पर भगवान शिव की असीम कृपा बरसती है। अपने आराध्य देव शिव के लिए किया गया यह बहुत ही सरल एवं शक्तिशाली मंत्र है।

भगवान शिव की आराधना का दूसरा मंत्र है **"महामृत्युंजय मंत्र"**। महामृत्युंजय मंत्र का जाप प्रायः किसी भी प्रकार के भय जैसे शत्रु के भय, मृत्यु के भय आदि से मुक्ति पाने के लिए किया जाता है।

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

अर्थात हम भगवान शिव की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो सुगंधित हैं और हमारा पोषण करते हैं। जैसे फल शाखा के बंधन से मुक्त हो जाता है वैसे ही हम भी मृत्यु और नश्वरता से मुक्त हो जाएं।

महामृत्युंजय मंत्र **'मृत्यु को जीतने वाला महान मंत्र'** जिसे त्रयंबकम मंत्र भी कहा जाता है। यह मंत्र भगवान शिव की स्तुति में की जाने वाली वन्दना है। इस मन्त्र में शिव को **'मृत्यु को जीतने वाला'** बताया गया है। इस मंत्र के विभिन्न नाम और रूप हैं। भगवान शिव के उग्र रूप की ओर संकेत करते हुए इसे रुद्र मंत्र कहा जाता है। शिव के त्रिनेत्र की ओर इशारा करते हुए इसे त्रयंबकम मंत्र कहा जाता है। इसे मृत–संजीवनी मंत्र भी कहा जाता है। महामृत्युंजय मंत्र, गायत्री मन्त्र के समकक्ष ही सनातन धर्म का सबसे व्यापक रूप से प्रयोग किए जाने वाला मंत्र है। ऋषि–मनिषियों ने महा मृत्युंजय मंत्र को वेद का हृदय कहा है। चिंतन और ध्यान के लिए प्रयोग किए जाने वाले अनेक मंत्रों में गायत्री मंत्र के साथ महामृत्युंजय मंत्र का सर्वोच्च स्थान है।

शिव ब्रह्म हैं, शिव हैं शक्ति,
शिव ओंकार हैं, शिव हैं भक्ति।
शिव सत्य हैं, शिव दिग्–दिगंत
शिव अनादि हैं, शिव आदि–अनंत।

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः।
जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता वास करते हैं।

08 मार्च पर विशेष

शिक्षा और साहित्य के विकास में नारी के बढ़ते कदम

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास नदेसर,
कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी

शिक्षा, साहित्य और संस्कृति न सिर्फ व्यक्ति को समुन्नत बताते हैं बल्कि समाज और राष्ट्र को भी समृद्ध बनाते हैं। वैदिक काल से ही ऋषि–मुनियों ने इस परंपरा को बढ़ाया और भारत **'आदि गुरू'** कहलाया। ऐसा नहीं है कि मात्र ऋषि–मुनियों ने ही ज्ञान की लौ जगाई, बल्कि हमारे वेद और ग्रंथ नारी शक्ति के योगदान से भरे पड़े हैं। नारी को आरंभ से ही सृजन, सम्मान और शक्ति का प्रतीक माना गया है। शास्त्र से लेकर साहित्य तक नारी की महत्ता को स्वीकार किया गया है– **"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता।"**

नारी–शिक्षा, समाज का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसके बिना समाज अधूरा है। समाजशास्त्री मानते हैं कि व्यक्ति के जीवन निर्माण में अनेक तत्वों का योगदान होता है, उनमें प्रमुख हैं– परिवेश, वंशानुक्रम, माँ का व्यक्तित्व, संस्कार और शिक्षा। अपने यहाँ तो शिशु का विकास माता के गर्भधारण के समय से ही माना जाता है। पौराणिक आख्यानों में प्रह्लाद, ध्रुव, अभिमन्यु, शुकदेव इत्यादि के तमाम ऐसे उदाहरण उपलब्ध हैं। महाभारत में एक जगह कहा गया है, **"माता के सामान कोई शिक्षक नहीं है।"** वाकई यह सही भी है कि माँ बच्चे की प्रथम शिक्षक होती है। वह उसे मुस्कान के साथ वो परिवेश, संस्कार और सदगुण देती है, जो उसकी शिक्षा का आधारभूत तत्व होता है। औपचारिक शिक्षा से पूर्व बच्चा घरेलू माहौल में ही शारीरिक, मानसिक, आध्यत्मिक, चारित्रिक व सांस्कृतिक विकास की ओर अग्रसर होता है। अरस्तू ने कहा था, **"शिक्षा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करती है,"** वाकई इसमें माँ अर्थात नारी का अनुपम योगदान होता है।

भारतीय संस्कृति में नारी की शिक्षा और साहित्य में उनके योगदान पर नजर डालें तो वैदिक काल में यह पूर्ण विकास पर थी। वैदिक काल में शिक्षा के द्वार सभी नारियों के लिए खुले थे और पुस्तक रचना, शास्त्रार्थ, साहित्य तथा अध्यापन कार्य के द्वारा नारी उच्च शिक्षा

का उपयोग करती थी। ईसा से 500 वर्ष पूर्व वैयाकरण पाणिनि ने भी नारियों के द्वारा वेद अध्ययन की चर्चा की है। वैदिक युग में छात्राओं के दो वर्ग थे। **प्रथमत:**, सद्योवधु वे छात्राएं थीं जो विवाह के पूर्व तक कुछ वेद मंत्र व याज्ञिक प्रार्थनाएं पढ़ लेती थीं। **द्वितीयत:**, ब्रह्मवादिनी, जो आजीवन शिक्षा ग्रहण करने में लगी रहती थीं। पुत्री का उपनयन संस्कार व स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकार भी प्राप्त था। उच्च शिक्षा के लिए पुरुषों की भाँति नारियों भी शैक्षिक अनुशासन के अनुसार ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर शिक्षा ग्रहण करतीं, तत्पश्चात विवाह करती थीं। **विश्ववरा, अपाला, लोमशा तथा घोषा** जैसी विदुषियों ने वेद मंत्रों की रचना की और ऋषि पद को प्राप्त कर लिया था। अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा भी विदुषी थीं, और भी कई ऋषि स्त्रियों की रचनाएं ऋग्वेद संहिता में मिलती हैं। ऋग्वेद में तो सरस्वती को सबसे पवित्र नदी मानने के साथ–साथ **'वाणी प्रार्थना'**, **'कविता की देवी'** एवं **'बुद्धि को तीव्र करने वाली और संगीत की प्रेरणादायी' कहा गया है।**

परवर्ती वैदिक युग में नारी की स्थिति में कुछ परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। इस काल में वैदिक काल की अपेक्षा स्त्रियों की शिक्षा में कमी आई, लेकिन उपनिषदों के विकास में गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों का योगदान नहीं भुलाया जा सकता। इसी काल की एक घटना गौरतलब है जब एक वाद–विवाद के दौरान महर्षि याज्ञवल्क्य विदुषी गार्गी को धमकाते हुए कहते हैं कि ज्यादा बहस नहीं करो वरना तुम्हारा सिर तोड़ दिया जाएगा। इससे उस काल की स्थिति का पता चलता है। फिर भी स्त्रियों का इस युग में उपनयन संस्कार किया जाता था और संभ्रान्त परिवारों में उनकी शिक्षा पर आग्रह दिखायी पड़ता है। न केवल धर्मशास्त्र, अपितु दर्शन जैसे दुरुह विषय में भी स्त्री की दखलंदाजी दिखायी पड़ती है। कुछ स्त्रियाँ अध्यापिका का कार्य भी करती थीं। धार्मिक क्रियाकलापों में **'रुद्रयात'**, **'जीवायत'** का सम्पादन मात्र नारी ही करती थी। पति की अनुपस्थिति में वह याज्ञिक अग्नि की भी देख–रेख करती थी। लेकिन अब इस युग में स्त्री शिक्षा के लिए बाहर भेजना अच्छा नहीं समझा जाता था। नजदीक के संबंधी, पिता, चाचा, भाई आदि शिक्षक हो सकते थे।

महाकाव्य अर्थात रामायण और महाभारत युग में स्त्री शिक्षा पर जोर दिया गया। रामायण में कौशल्या और तारा को **'मंत्रविद्'** कहा गया है। अत्रेयी वेदांत का अध्ययन करती हुई तथा सीता संध्या करती हुई दिखाई गई हैं। अत्रेयी ने तो वाल्मीकि आश्रम में बकायदा लव–कुश के साथ शिक्षा ग्रहण की। इसी प्रकार महाभारत में द्रौपदी को **'पण्डिता'** कहा गया है। वह युधिष्ठिर और भीम से धर्म व नैतिकता के संबंध में वार्तालाप करती हैं। महाभारत के अनुसार ही सुलभा आजीवन वेदांत का अध्ययन करती रही थीं।

रामायण और महाभारत काल के बाद शिक्षा और साहित्य में स्त्री की भागीदारी कम होती गयी और स्त्रियों को वैदिक अध्ययन के लिए अयोग्य घोषित कर दिया गया। उनका उपनयन बंद हो गया, इसलिए स्त्री की शिक्षा भी प्रभावित हुई। ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि वर्गों की स्त्रियों में शिक्षा का प्रचलन अवश्य था पर विरले ही स्त्रियाँ विदुषी होती थीं, जैसे अवन्तिसुन्दरी, लीलावती आदि। वस्तुत: जब 18–20 वर्ष की अवस्था में स्त्री का विवाह होता था, तब तो शिक्षा के लिए पर्याप्त संभावना थी। पर मात्र 12 वर्ष की अवस्था में विवाहित होने वाली लड़की के सामने वह संभावना कहाँ रह गयी? पर यहीं से समाज में तमाम कुरीतियाँ भी जन्म लेने लगीं।

बौद्ध काल में भी कुछ विदुषी नारियों का होना पाया जाता है। संभ्रांत जन अपनी लड़कियों को उच्च शिक्षा देते। इस काल में राजगृह के धनी श्रेष्ठी की पुत्री **'भद्रा कुंडकेषा'** ने अपनी विद्वता के कारण बड़ी प्रसिद्धि पाई। नारियों के लिए यद्यपि संघ के नियम कठोर थे, फिर भी ज्ञान प्राप्ति के लिए अनेक नारियाँ संघ की शरण जाती थीं। जातक ग्रंथों में ऐसी तमाम भिक्षुणियों का उल्लेख है। भिक्षुणी खेमा (क्षेमा) इस समय की अत्यन्त विदुषी महिला थीं। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि स्वयं कोशलराज प्रसेनजित उनकी विद्वता की प्रशंसा सुनकर सेवा में गये थे। सुभद्रा नाम की भिक्षुणी का संयुक्त निकाय में उल्लेख मिलता है, जो अपनी व्याख्यान–कला के लिये काफी प्रसिद्ध थीं। इसी प्रकार **'अमेरा'** और **'अदुम्बरा'** नामक विदुषी स्त्रियों का भी जातक ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है। बौद्ध–भिक्षुणियों **'सुभा'**, **'सुमेघा'** और **'अनोपमा'** ने तमाम अनुपम गीत रचे और थेरी–गाथा में इन्हें बकायदा संकलित भी किया गया। बौद्ध काल में वेश्याएं भी पर्याप्त शिक्षित और सुसंस्कृत होती थीं, इन्हें नगर–वधू कहा जाता था। वैशाली और आम्रपाली जैसी नगर–वधुओं का नाम उल्लेखनीय है। जैन साहित्य से भी प्राचीन भारत में स्त्री–शिक्षा पर प्रकाश पड़ता है। जैन–ग्रन्थों में कौशाम्बी नरेश की विदुषी पुत्री जयन्ती का उल्लेख है।

प्राचीन काल में नारी और पुरुष की शिक्षा में समानता के साथ विभिन्नता भी रहती थी। नारियों को विशेष रूप से ललित कला, संगीत, नृत्य आदि की शिक्षा दी जाती थी। महर्षि पतंजलि ने जिस **'शाक्तिकी'** शब्द का प्रयोग किया है वह **'भाला धारण करनेवाली'** अर्थ का बोधक है। इससे प्रतीत होता है कि नारियों को सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी। चंद्रगुप्त के दरबार में इस प्रकार की प्रशिक्षित नारियाँ रहती थीं। मौर्यकाल में अशोक के बौद्ध धर्म स्वीकार करने के कारण इसका प्रभाव बढ़ा और तमाम सुशिक्षित नारियाँ इससे प्रभावित हुई। अशोक की पुत्री राजकुमारी संघमित्रा बौद्ध धर्म की ज्ञाता थी। उसे सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए श्रीलंका भेजा था। इसी प्रकार एक अन्य विद्वान स्त्री चारुमति ने नेपाल में जाकर प्रचार–प्रसार किया था।

इस युग में अन्य देशों में भी शिक्षा का विधान धर्म–ग्रंथों द्वारा ही निर्धारित होता था। अवस्ता और पहलवी में नारी के लिए समस्त गृहकार्यों की शिक्षा पर बल दिया है। इसमें पशुपालन, धार्मिक रीतियों का पालन आदि सम्मिलित थे। कुरान ने बिना किसी भेदभाव के स्त्री–पुरुष को ज्ञानप्राप्ति का समानाधिकारी माना है। ईसाई धर्म आध्यात्मिक स्तर पर स्त्री–पुरुष को समान देखता था, किंतु उच्च शिक्षा के लिए स्त्री को **'नन'** (भिक्षुणी) का जीवन व्यतीत करना होता था। इन सबके बावजूद व्यावहारिक जीवन में नारी को शिक्षा हेतु उचित प्रोत्साहन नहीं मिलता था।

मौर्योत्तर काल में उत्तर भारत में स्त्रियों की शिक्षा पर जोर

नहीं दिया गया तथा वे वैदिक ग्रंथों का स्वाध्याय भी नहीं कर सकती थीं। पर दक्षिण भारत में आलवार संत **'अन्दाल'** काफी प्रसिद्ध हुई और उनकी रचनाएं **'नालाइरम'** काव्य संग्रह में संग्रहित हुई। संगम काल में स्त्रियों की स्थिति काफी सम्मानजनक थी। उच्च वर्ग की स्त्रियाँ ललित कला की शिक्षा पाती थीं और कुछेक ने तो कविताएं भी लिखीं। संगम साहित्य में तमाम कवयित्रियाँ भी शमिल हैं। सातवाहन काल में भी स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी। सातवाहन प्रशासन में मातृसत्तात्मक तत्व ज्यादा थे और नारियाँ शासन–संचालन में खुलकर भाग लेती थीं। तत्कालीन साहित्य में ऐसी तमाम कवयित्रियों का उल्लेख मिलता है जिन्होंने प्राकृत में अप्रतिम काव्य–रचना की। **'हाल'** की **'गाथा सप्तशती'** में तो सात कवयित्रियों– *बद्धवही* और *शशिप्रभा* की रचनाएं संकलित हैं।

भारतीय इतिहास में मध्यकाल को संक्रमणकालीन दौर माना जाता है। मध्यकाल के आरंभ में रचित कुछेक रचनाओं में नारी–शिक्षा पर प्रकाश डाला गया है। आठवीं सदी के प्रसिद्ध नाट्यकार भवभूति ने **'मालती माधव'** नाटक में वर्णन किया है कि कामन्दकी की शिक्षा–दीक्षा भूरिवसू व देवराट् के साथ एक ही विद्यालय में हुई थी। मध्यकाल में जैसे–जैसे स्त्रियों की शिक्षा और साहित्य पर आग्रह कम होता गया वैसे–वैसे तमाम बुराईयाँ भी दिखने लगीं। स्त्रियों में शिक्षा के सीमित प्रसार के चलते एक तरह जहाँ सती प्रथा, जौहर प्रथा, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल–विवाह जैसी तमाम बुराईयाँ समाज को खोखला कर रहीं थीं, वहीं अधिकतर दरबारी साहित्य के चलते समाज व साहित्य में प्रगतिशीलता का अभाव दिख रहा था। ऐसे में शिक्षा अभिजात व समद्ध वर्ग तक ही सीमित हो गई। अभिजात वर्ग की लड़कियों को लोकभाषाओं के अतिरिक्त संस्कृत में भी शिक्षा दी जाती थी। संगीत व नृत्य उनकी शिक्षा के प्रमुख अंग थे। यद्यपि कि विदुषी महिलाओं के दृष्टांत अपवाद स्वरूप ही मिलते हैं, फिर भी उनमें सर्वप्रमुख नाम कुमारिल भट्ट के शिष्य मंडन मिश्र की विदुषी पत्नी भारती का है। कवयित्री एवं वेदांत व मीमांसा की प्रकांड विद्वान भारती ने ही अद्वैतवाद के प्रवर्तक शंकराचार्य और मंडन मिश्र के मध्य हुए मूढ़ शास्त्रार्थ का निर्णय किया था। **'शंकर दिग्विजय'** में भी इसका उल्लेख प्राप्त होता है–**"विधाय भार्याविदुषीं सदस्यां। विधियतां वादकथा सुधीन्द्र।।"** 12वीं सदी के महान खगोल विज्ञानी आर्यभट्ट की विख्यात गणितज्ञ

बेटी लीलावती का नाम भी प्रमुख है।

चूंकि मध्य काल में शिक्षा एवं साहित्य में नारी की भागीदारी अत्यल्प रही अतः शासन व्यवस्था में भी महिलाओं की स्थिति विरले ही देखने को मिलती है। दक्षिण भारत में इस दौर में वारंगल शासक के रूप में रुद्राम्बा (1262–1296 ई0) का उल्लेख मिलता है। मार्कोपोलो ने इस महिला शासिका की प्रशासनिक क्षमता की खूब प्रंशसा की है। दिल्ली सल्तनत के इतिहास में पहली महिला शासक के रूप में रजिया सुल्ताना (1236–40 ई0) का नाम उल्लेखनीय है। इंदौर पर महारानी अहिल्याबाई ने 1766–1796 तक सफलतापूर्वक शासन किया। गोलकोंडा की रानी दुर्गावती और मेवाड़ की रानी कर्णावती का नाम भी गौरतलब है। इसके अलावा भी विशेषकर कुछेक मुस्लिम महिलाओं के शासन करने के साक्ष्य मिले हैं, पर उनका प्रभाव बहुत सीमित रहा। भक्तिकाल में मीराबाई (1498–1546 ई0) ने अलख जगाई। भगवान कृष्ण की उपासिका मीरा ने गीतों के माध्यम से राजस्थान में कृष्ण–भक्ति का प्रचार किया। मुख्यतः, ब्रजभाषा और आंशिक रूप में राजस्थानी में लिखे गीतों के अलावा मीरा ने गुजराती में भी कविताएं रचीं।

मध्य काल में नारी भले ही शिक्षा, साहित्य और संस्कृति में उपेक्षित रही हो, पर मध्य काल के दो प्रसिद्ध विद्वानों कालिदास और तुलसीदास को ज्ञान के उच्चतम सोपान तक ले जाने में उनकी पत्नियों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। कालिदास की पत्नी विद्योत्तमा ने जब उन्हें ऊँट को देखकर संस्कृत में **'उष्ट्र'** की जगह **'उट्र–उट्र'** कहते सुना तो वह काफी विचलित हुई और कालिदास को माँ काली की आराधना करने और ज्ञान–प्राप्ति की सलाह दी, जिसके फलस्वरुप कालिदास कालांतर में अग्रणी विद्वानों में शुमार हुए और कई कालजयी कृतियों की रचना की। इसी प्रकार तुलसीदास को यहाँ तक पहुँचाने में उनकी पत्नी रत्नावली का बहुत बड़ा योगदान रहा। तुलसीदास अपनी पत्नी से अगाध प्रेम करते थे। ऐसे में जब उनका विछोह सहन न कर सके तो रात्रि में बाढ़ में लाश को तख्त समझकर नदी पार कर गए और ससुराल की दीवार पर लटक रहे साँप को रस्सी समझकर पत्नी के कमरे में अर्धरात्रि को प्रवेश कर गए। यह सब जानने के बाद पत्नी रत्नावली ने कहा, ***"जितना प्रेम आप मुझसे करते हैं, उतना प्रेम ईश्वर से करते तो कहीं के कहीं पहुँच जाते।"*** पत्नी की यह बात तुलसी के हृदय में तीर की तरह चुभी और सांसारिक प्रेम से विरक्त होकर वे ईश्वर भक्ति में रम गए। यही तुलसी बाद में संत तुलसीदास कहलाए और रामचरित मानस जैसा कालजयी ग्रंथ लिखा। यद्यपि कि तुलसीदास ने लिखा कि–**"ढोल, गंवार, शूद्र, पशु नारीध्ये सब ताड़न के अधिकारी।"** पर वह इस बात को भूल गए कि एक नारी के चलते ही वह इन ऊँचाइयों को छू सके। इससे समाज में महिलाओं के प्रति सोच एवं शैक्षणिक विकास न होने का अंदाजा स्वतः लगाया जा सकता है।

मुगल काल में शिक्षा–साहित्य–कला–संस्कृति में काफी प्रगति हुई, पर महिलाओं की उपस्थिति नगण्य ही रही। इस समय की चर्चित महिलाओं में **गुलबदन बेगम, नूरजहाँ, जहाँआरा** तथा **जेबुन्निसा** के नाम प्रसिद्ध हैं। हुमायूँ की पत्नी गुलबदन बेगम ने **'हुमायूँनामा'** की रचना की तो जहाँआरा ने **'साहिबिया'** शीर्षक से कादिरी सिलसिला के आध्यात्मिक गुरु मुल्ला शाह का जीवन–वृतांत लिखा।

मध्यकाल की समाप्ति एवं अंग्रजों के भारत में आगमन के साथ धीरे–धीरे प्रगतिशील दृष्टिकोण समाज में दिखने लगा था। मुगल काल के अंतिम वर्षों में तमाम छोटे–छोटे राज्य पनपने लगे थे, पर नारी की शिक्षा एवं साहित्य में सहभागिता जस की तस रही। इस बीच छत्रपति शिवाजी की माता जीजाबई एवं नाना साहब के साथ शिक्षा लेने व युद्ध–कौशल सीखने के लिए रानी लक्ष्मीबाई का नाम लिया जा सकता है। 19 वीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण तथा सामाजिक व धार्मिक सुधार आंदोलन भी आरंभ हुए। तमाम समाज सुधारकों ने समाज में नारी की स्थिति के उन्नयन हेतु सती प्रथा, बहुविवाह प्रथा, बाल–विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा इत्यादि कुरीतियों का विरोध किया एवं नारी–शिक्षा व जागरुकता पर जोर दिया। इनमें राजा राम मोहन राय, देवेंद्र नाथ टैगोर, केशव चंद्र सेन, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फुले, महादेव गोविंद रानाडे, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, गोपालकृकृष्ण गोखले, एनी बेसेंट, सर सैय्यद अहमद खां, डी. के. कर्वे, बी. एम. मालाबारी इत्यादि का नाम लिया जा सकता है।

अंग्रजों के आगमन के साथ ही तमाम ईसाई धर्म प्रचारक भी भारत की ओर प्रवृत्त हुए एवं उन्होंने शिक्षा पर जोर दिया। 1819 में ईसाई धर्म प्रचारकों ने कलकत्ता में **'तरुण स्त्री सभा'** का गठन किया, जो कि स्त्री शिक्षा की ओर पहला बड़ा प्रयास था। जे.ई. वेथून के नेतृत्व में इसने नारी–शिक्षा की अलख जगाने हेतु तमाम कदम उठाए और 1849 में कलकत्ता में एक बालिका विद्यालय स्थापित किया। इसी दौर में ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने भी बंगाल में लड़कियों की शिक्षा के लिए 35 से ज्यादा स्कूल खुलवाए। तमाम समाज–सुधारक देश के विभिन्न अंचलों में नारी–उत्थान के लिए प्रयासरत दिखे। महाराष्ट्र में ज्योतिबा फुले ने पहल करते हुए दलितों और बालिकाओं को घर पर पढ़ाना आरंभ किया, फिर स्कूल भी शुरू किया। उनके स्कूल में कोई पढ़ाने को तैयार नहीं होता था। अंततः ज्योतिबा फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को पढ़ाया और मिशनरी नार्मल स्कूल में प्रशिक्षण दिलाया। इस प्रकार सावित्रीबाई फुले को प्रथम भारतीय प्रशिक्षित शिक्षिका बनने का गौरव प्राप्त हुआ। स्कूल जाते समय सावित्रीबाई को भी लोग तरह–तरह से अपमानित करते, किन्तु सावित्रीबाई फुले ने हार नहीं मानी और उनका बालिका विद्यालय चलता रहा। इस बीच महाराष्ट्र में **'सत्य शोधक समाज'** का गठन कर महात्मा ज्योतिबा फुले ने नारी की स्वतंत्रता व समानता एवं शिक्षा जैसे मुद्दों पर जमकर कार्य किया। ज्योतिबा फुले ने 1848 में दलितों एवं बालिकाओं के लिए प्राथमिक विद्यालय की स्थापना की और 1851 में पत्नी सावित्रीबाई फुले के सहयोग से पुणे में निचली जातियों की बालिकाओं के लिए प्राथमिक विद्यालय की स्थापना की।

भारतीय संस्कृति इस दौर में पाश्चात्य संस्कृति के भी सन्निकट आई। समाज में शिक्षित लोगों का रुतबा पढ़ा और लोग अपने घरों की लड़कियों को शिक्षा की ओर प्रवृत्त करने लगे। ऐसे में 1854 में सर चार्ल्स वुड के नेतृत्व में सर्वप्रथम शिक्षा आयोग ने 'महिला शिक्षा' का समर्थन किया। सन् 1882 के भारतीय शिक्षा

आयोग (हंटर कमीशन) के अनुसार भारत सरकार की ओर से शिक्षिका प्रशिक्षण का प्रबंध हुआ। आयोग ने नारी शिक्षा के संबंध में अनेक उत्साहवर्धक सुझाव प्रस्तुत किए किंतु धर्म परिवर्तन का भय रहने के कारण सुझाव अधिक कार्यान्वित न हो सके। इस बीच कलकत्ता विश्वविद्यालय से 1883 में कादंबिनी गांगुली एवं चंद्रमुखी बोस ने भारत की प्रथम महिला स्नातक होने का गौरव प्राप्त किया। नारी-शिक्षा का प्रसार बढ़ने से 19वीं शताब्दी के अंत तक भारत में कुल 12 कॉलेज, 467 स्कूल तथा 5628 प्राइमरी स्कूल लड़कियों के लिए थे। इनमें प्रायः सभी शैक्षिक संस्थाएँ जनता में नेतृत्व करनेवाले व्यक्तियों द्वारा संचालित थीं, और इनमें कुछ अँग्रेज व्यक्ति भी थे। संपूर्ण भारत में छात्राओं की संख्या 4,44,470 थी। शताब्दी के अंत तक शनैः-शनैः नारियाँ उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही थीं, किंतु उनमें मुस्लिम छात्राओं का अभाव था।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी नारी-शिक्षा को लेकर संजीदगी दिखने लगी थी। 19वीं शताब्दी में इंग्लैड, फ्रांस तथा जर्मनी में लड़कियों के लिए अनेक कॉलेज खुल चुके थे। इंग्लैंड में लड़कियों को लड़कों के ही समान शिक्षा देने की चेष्टा की जा रही थी। 19वीं शताब्दी के अंत में इंग्लैड में यह योजना बनाई गई कि नारी शिक्षा की समस्त शाखाओं को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाए। इसे किंग्स कॉलेज लंदन के एफ.डी. मॉरिस तथा अन्य लोगों ने बहुत बढ़ावा दिया। ऐसे में भारत में भी इस मांग का बढ़ना जायज था और प्रतिक्रियास्वरुप 1917-19 में सैडलर आयोग ने महिला शिक्षा के लिए स्वायत्तता पूर्ण संस्थाओं की स्थापना तथा व्यावहारिक शिक्षा पर जोर दिया, जिसके बाद नारी-शिक्षा का विकास और तेजी से हुआ।

महिलाओं की शिक्षा का अनन्य संबंध स्वतंत्रता आंदोलन से भी जुड़ा हुआ है। शिक्षित और जागरुक होती महिलाओं ने समानांतर रुप में अपने हकों की लड़ाई भी लड़ी। आजादी के दौर में तमाम सुशिक्षित महिलाओं ने स्वतंत्रता-आंदोलन में बढ़-चढकर हिस्सा लिया। एक तरफ इन्होंने स्त्री-चेतना को प्रज्वलित किया, वहीं आजादी के आंदोलन में पुरूषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर आगे बढ़ीं। इसी क्रम में महिला मताधिकार को लेकर 1917 में सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में वायसराय से भी एक प्रतिनिधिमण्डल मिला। **'भारत कोकिला'** के नाम से मशहूर सरोजिनी नायडू एक अच्छी कवयित्री भी थीं। स्वामी विवेकानंद की शिष्या मार्गरेट एलिजाबेथ नोबेल (भगिनी निवेदिता) ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षिका बनकर 'निवेदिता पाठशाला' के माध्यम से एक प्रभावी शिक्षा-पद्धति का आरम्भ किया। उनका मानना था,"पत्नीत्व से पहले नारीत्व और नारीत्व से पहले मानवता, **बालिका शिक्षण का ध्येय होना चाहिए।"** कलकत्ता विश्वविद्यालय में 11 फरवरी 1905 को आयोजित दीक्षान्त समारोह में वायसराय लॉर्ड कर्जन द्वारा भारतीय युवकों के प्रति अपमानजनक शब्दों का उपयोग करने पर भगिनी निवेदिता ने खड़े होकर निर्भीकता के साथ प्रतिकार किया। थियोसोफिकल सोसायटी के बैनर तले एनी बेसेंट ने भी स्त्री शिक्षा के लिए पुरजोर प्रयास किया। एनी बेसेन्ट ने ही 1898 में बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की नींव रखी, जिसे 1916 में महामना मदनमोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित किया। मदन मोहन मालवीय जी सदा बालिका शिक्षा को बालकों की शिक्षा से ज्यादा महत्व देते थे। उनका मानना था, ***"पुरूषों की शिक्षा से स्त्रियों की शिक्षा का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वही भारत की भावी संतानों की माता हैं। वे हमारे भावी राजनीतिज्ञों, विद्वानों, तत्वविज्ञानियों, व्यापार तथा कला कौशल के नेताओं की प्रथम शिक्षिका हैं।"***

20वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षो में भारत में इस बात पर ध्यान दिया गया कि नारी शिक्षा उनके समाजिक जीवन के लिए उपयोगी होनी चाहिए क्योंकि उस समय तक जहाँ तक लिखने-पढ़ने का संबंध था, लड़कों और लड़कियों की शिक्षा में कोई अंतर न था। उच्च शिक्षा की दृष्टि से सन् 1916 महत्वपूर्ण है। इस समय दिल्ली में लेडी हार्डिंग कॉलेज की स्थापना हुई तथा डी.के. कर्वे ने भारतीय नारियों के लिए एक विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसमें सबसे अधिक धन बंबई प्रांत के एक व्यापारी से मिलने के कारण उसकी माँ के नाम से विश्वविद्यालय का नाम श्रीमती नाथीबाई थैकरसी विमेंस यूनिवर्सिटी हुआ। डी.के. कर्वे ने इस बात का अनुभव किया कि नारी तथा पुरुष की शिक्षा उनके आदर्शो के अनुकूल होनी चाहिए। इसी समय से मुस्लिम नारियों ने भी उच्च शिक्षा में पदार्पण किया। नारी की प्राविधिक शिक्षा में कला, कृषि, वाणिज्य आदि का भी समावेश हुआ और नारी की उच्च शिक्षा में प्रगति हुई। धन के अभाव में लड़कियों के लिए पृथक कॉलेज तो अधिक न खुल सके किंतु राजनीतिक आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेने से नारी सहशिक्षा की ओर अग्रसर हुई। इस बीच भारत की प्रथम महिला बैरिस्टर के रुप में कोर्नोनिया सोराबजी (इलाहाबाद उच्च न्यायालय, 1923) की नियुक्ति नारी शिक्षा एवं नारी सशक्तिकरण की भी दिशा में एक मील का पत्थर बनी। सन् 1926 में एक अखिल भारतीय नारी सम्मेलन के द्वारा यह निर्णीत हुआ कि लड़कियों के लिए एक ऐसा विद्यालय खोला जाए जो पूर्ण रूप से भारतीय जीवन के आदर्शो के अनुकूल हो तथा उसका समस्त प्रबंध स्त्रियाँ स्वयं करें। अतः दिल्ली में ही लेडी इर्विन कॉलेज की स्थापना हुई जिसमें गृह विज्ञान तथा शिक्षिका प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान दिया गया।

सन् 1946-47 में प्राइमरी कक्षाओं से लेकर विश्वविद्यालय तक की कक्षाओं में अध्ययन करनेवाली छात्राओं की कुल संख्या 41,56,742 हो गई। इनमें प्राविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करनेवाली छात्राएँ भी थीं। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् यद्यपि नारी शिक्षा में पहले की अपेक्षा बहुत प्रगति हुई तथापि अन्य पाश्चात्य देशों की समानता वह न कर सकी। इस समय से नारी शिक्षा में संगीत एवं नृत्य की विशेष प्रगति हुई। सन् 1948-49 के विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने नारी शिक्षा के संबंध में मत प्रकट करते हुए कहा कि नारी विचार तथा कार्यक्षेत्र में समानता प्रदर्शित कर चुकी है, अब उसे नारी आदर्शो के अनुकूल पृथक रूप से शिक्षा पर विचार करना चाहिए। उच्च स्तर की शिक्षा में गृहविज्ञान, गृह अर्थशास्त्र, नर्सिंग तथा ललित कलाओं का प्रशिक्षण आवश्यक है। इसके बाद आगे चलकर हाई स्कूल की कक्षाओं में गृहविज्ञान को अनिवार्य बना दिया गया तथा पृथक रूप से भी अनेक कला

केंद्र लड़कियों की शिक्षा के लिए खोले गए। आजादी के बाद जैसे–जैसे शिक्षा का प्रसार बढ़ा नारी अन्य क्षेत्रों में भी विशेषज्ञता हासिल करने लगीं। 1951 में इला मजूमदार इंजीनियरिंग में स्नातक उपाधि पाने वाली प्रथम महिला बनीं। चिकित्सा–क्षेत्र में तो नारी ने बहुत पहले कदम रख दिए थे, जब कोलकाता मेडिकल कॉलेज से बिधुमुखी बोस और वर्जीनिया मैरी मित्तर ने चिकित्सा में प्रथम महिला स्नातक उपाधि प्राप्तकर्ता होने का गौरव प्राप्त किया था।

स्वतंत्रता के 10 वर्ष पश्चात छात्राओं की कुल संख्या 87,67,912 हो गई तथा नारी का प्रवेश शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में होने लगा। 19 मई सन् 1958 को नारी–शिक्षा की समस्याओं पर विचार करने के लिए एक राष्ट्रीय समिति नियुक्त हुई जिसने इनकी समस्याओं पर बहुत गंभीरता पूर्वक विचार करने के पश्चात् नारी के लिए उपयुक्त व्यवसायों की सूची सरकार के सम्मुख रखी और इन सभी व्यवसायों में महिलाओं के जाने योग्य वातावरण बनाने की बात कही। एक लंबे समय तक उच्च शिक्षा पाने के पश्चात् स्त्रियाँ अध्यापन, चिकित्सा कार्य अथवा कार्यालयों में ही अधिकतर काम करती नजर आती थीं पर वर्तमान दौर में देखें तो नारी हर क्षेत्र में परचम फैला रही हैं। राजनीति, प्रशासन, उद्योग, विज्ञान–प्रौद्योगिकी, फिल्म, साहित्य, मीडिया, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, वकालत, कला–संस्कृति, शिक्षा आई.टी., खेल–कूद, सैन्य से लेकर अंतरिक्ष तक नारी ने छलांग लगाई है। नारी की जागरूकता ने उसे अपनी अभिव्यक्तियों के विस्तार का सुनहरा मौका भी दिया है। साहित्य व लेखन के क्षेत्र में भी नारी का प्रभाव बढ़ा है।

नारी का जीवन साहित्य और कला के सृजन से स्वाभाविक रूप से जुड़ा हुआ है। साहित्य अपने समय, काल और परिवेश का साक्षी होता है। नारी के लिए लेखन केवल खाए–अघाए व्यक्ति का कोरा बौद्धिक विलास नहीं, बल्कि जीवन की यातनाओं, दु:खों और मुक्ति के संघर्षों से गहरा जुड़ाव है। नारी ने अपनी दुनिया को बदलने और उसे सुन्दर बनाने के संघर्ष में यथार्थ के कठोर धरातल पर साहित्य से रिश्ता बनाया। जब खुरदुरे यथार्थों के साथ इस सृजनात्मक क्षमता को शब्दों की धार मिल जाती है तो फिर गढ़ा जाता है एक नया साहित्य। साहित्यके माध्यम से नारी ने जहाँ पुराने समय से चली आ रही कुप्रथाओं पर चोट किया, वहीं समाज को नए विचार भी दिए। वे अपने लेखन से समाज में फैले दकियानूसी और रूढ़िवादी विचारों पर कुठाराघात करके सामाजिक समरसता की जमीन तैयार करना चाहती हैं।

अपनी विशिष्ट पहचान के साथ नारी साहित्यिक व सांस्कृतिक गरिमा को नई ऊँचाईयाँ दे रही है। *सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता (1956) प्रथम महिला साहित्यकार अमृता प्रीतम, प्रथम भारतीय ज्ञानपीठ महिला विजेता (1976) आशापूर्णा देवी, इस्मत चुगतई, शिवानी, चंद्रकांता, कुर्रतुल हैदर, महाश्वेता देवी, मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, ममता कलिया, मृणाल पाण्डे, चित्रा मुदगल, कृष्णा सोबती, निर्मला जैन, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, पुष्पा भारती, नासिरा शर्मा, सूर्यबाला, सुनीता जैन, रमणिका गुप्ता, अलका सरावगी, मालती जोशी, डॉ. कृष्णा अग्नि. नहोत्री, मेहरुन्निसा परवेज, ज्योत्सना मिलन, डॉ. सरोजनी प्रीतम, गगन गिल, सुषम बेदी, पद्मा सचदेव, क्षमा शर्मा, अनामिका, अरुधंती राय* इत्यादि नामों की एक लंबी सूची है, जिन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं को ऊँचाईयों तक पहुँचाया। उनका साहित्य आधुनिक जीवन की जटिल परिस्थितियों को अपने में समेटे, समय के साथ परिवर्तित होते मानवीय सम्बन्धों का जीता– जागता दस्तावेज है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक और दार्शनिक बुनियादों को समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करते हुये उन्होंने अपनी वैविध्यपूर्ण रचनाशीलता का एक ऐसा आकर्षक, भव्य और गम्भीर संसार निर्मित किया, जिसका चमत्कार सारे साहित्यिक जगत महसूस करता है।

शिक्षा से ही समाज में जागरूकता, तार्किकता, आधुनिकता और वैज्ञानिकता आएगी। पर नारी–शिक्षा में अभी भी तमाम रूढ़िगत बाधाएँ सामने आ रही हैं, मसलन– बेटी शिक्षा पर ज्यादा ध्यान न देना, विवाह के चक्कर में लड़कियों की पढाई न पूरी होने देना, लड़कियों की पढाई को कैरियर उन्मुख न मानना। 2011 की जनगणनानुसार देश में महिला साक्षरता मात्र 65.46 है और इनमें भी मात्र तेईस प्रतिशत को रोजगार मिल पाया है। इसके अलावा संस्थागत स्तर पर भी नारी–शिक्षा में कई बाधाएँ आ रही हैं, मसलन– घर के नजदीक स्तरीय स्कूलों और कॉलेजों का अभाव, स्कूलों में लड़कियों के लिए टॉयलेट सुविधा न होना, पिछड़ी और दलित लड़कियों के साथ स्कूलों में भेदभाव, कई बार लड़कियों का यौन शोषण जैसे तमाम पहलू ऐसे हैं, जिन पर गंभीरता से विचार करने की जरुरत है। हमारे समाज में लड़कियाँ कई तरह की मुश्किलों से घिरी हैं। पढ़ाने–लिखाने के नाम पर उनके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार खत्म नहीं हुआ। उलटा राह चलती हुई लड़कियों पर लोग झपट्टा मारकर उन्हें डराने में जुट गए हैं। ऐसे विपरीत परिस्थितियों में भी लड़कियाँ पढ़ाई में आगे बढ़ने को आतुर हैं और घर में 'कैद' रखने वाली मानसिकता के खिलाफ मुट्ठी तानकर खड़ी हो गई हैं। सी.बी.एस.ई. और अन्य बोर्डों द्वारा घोषित 10वीं व 12वीं के नतीजों में प्रायः हर साल लड़कियाँ ही बाजी मार रही हैं। यही नहीं डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजमेंट, चार्टेड एकाउंटेंट से लेकर सिविल सर्विसेज तक की परीक्षा में बेटियों ने शीर्ष स्थान प्राप्त किए हैं। यह दर्शाता है कि महिलाओं को यदि उचित परिवेश और परवरिश मिले तो उन्हें अपना रास्ता बनाने से कोई नहीं रोक सकता है। आजादी के आंदोलन में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष करने वाली महिलाओं ने पिछले सालों में सफलता के अनेक शिखर छुए हैं। शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के चलते आज नारी का स्वभाव और चरित्र बदला है एवं अपने अधिकारों के प्रति वह जागरूक हुई है। आज स्त्री सशक्तिकरण बेहद जरुरी मुद्दा है। इसके लिए जरुरी है स्त्री शिक्षा जिससे स्त्रियों में सचेतनता बढ़े। जैसे–जैसे शिक्षा और रोजगार तक उनकी पहुँच बढ़ती जा रही है, वैसे–वैसे देश की सामाजिक प्रगति कर रहा है। ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था होने के कारण भारत में महिलाओं के लिए कई संभावनाएँ पैदा हुई हैं। निश्चितत: उनके प्रति समाज का थोड़ा नजरिया बदला तो वे सफलता के आसमान चूमेंगीं। ■

08 मार्च पर विशेष

पत्रकारिता और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान

सोनल मंजू श्री ओमर
राजकोट, गुजरात

माना जाता है कि जिस देश मे स्त्रियों का सम्मान होता है वह देश अधिक उन्नति करता है। भारतीय समाज में महिलाओं को देवी का दर्जा दिया जाता है लेकिन देवी का दर्जा देना ही काफी नही है। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये नारी को सभी क्षेत्र में पुरुषों जितनी भागीदारी एवं समान अवसर भी देने होंगे।

नारियों के लिए आज की स्थिति फिर भी पहले से बेहतर है। लेकिन आज से कुछ वर्षों पहले किसी भी क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं की संख्या सिर्फ अंगुलियों पर गिनी जाने वाली थी। लेकिन अब समाज द्वारा वैश्विक स्तर पर सभी तरह के उद्यमों में महिलाओं के योगदान को स्वीकार किया गया है। आज यह बात बिना किसी संदेह के साबित हो चुकी है कि कारोबार, तकनीकी, मीडिया, खेल या शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर और प्रोत्साहन मिलने पर महिलाओं की क्षमता अपने समकक्ष पुरुषों से कतई कम नहीं हैं। नारियों ने समय-समय पर इस बात को साबित भी किया है।

कुछ वर्षों पहले तक स्त्रियों को शिक्षा से तकनीकी (प्रौद्योगिकी) से दूर रखा जाता था यह बोलकर की यह उनकी समझ के कार्य नहीं है, जबकि ऐसा नही है, नारी यदि चाह ले तो ऐसा कोई भी कार्य नहीं है जो वह नहीं कर सकती। अगर पुराणों का भी अनुसरण करें तो उसमें भी यही पाएंगे कि नारी शक्ति से ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड है। माता शक्ति से ही त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश है। देखा जाए तो नारी स्वयं एक तकनीकी है। वो जिस प्रकार अपने गर्भ में एक जीव का सृजन करती है, नौ माह तक अपने अंदर उसे पालती है। यह तकनीकी से कम नहीं है।

यह कई बार साबित हो चुका है कि महिलाएं वैज्ञानिक अनुसंधान करने और दुनिया को बदलने के लिए अपनी प्रतिभा का योगदान देने में पुरुषों से कम नहीं हैं। हमारे पास असंख्य उदाहरण हैं जो इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे हमने अपने– अपने क्षेत्रों में लड़कियों और महिलाओं के योगदान के कारण वैज्ञानिक क्षेत्रों में अपने विचारों को बदल दिया है। खगोलविज्ञान, जीवविज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, जैव प्रौद्योगिकी, नैनो टेक्नोलाजी, भूगोल, पर्यावरण, विज्ञान, नृजाति विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, परमाणु अनुसंधान, कम्प्यूटर विज्ञान, मौसम विज्ञान, ऋषि विज्ञान तथा इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में महिला वैज्ञानिको ने नित नये अनुसंधान कर अपनी बुद्धि व कौशल का लोहा मनवाया हैं।

तमाम तरह की चुनौतियों के बावजूद इसरो में चंद्रयान मिशन हो या फिर मंगल मिशन की सफलता, नासा से लेकर नोबेल पुरस्कार तक हर क्षेत्र में हमारी महिला वैज्ञानिकों ने अपनी कला कौशल का प्रदर्शन किया है। चारदीवारी की कैद व सामाजिक बेड़ियों को तोड़कर विज्ञान की दुनिया में कीर्तिमान स्थापित करने वाली कुछ महिला वैज्ञानिकों के नाम इस प्रकार हैं –

'आनंदीबाई गोपालराव जोशी' इनका जन्म 31 मार्च 1865 को पुणे शहर में हुआ था। ये भारत की पहली महिला थीं जिन्होंने विदेश में डॉक्टर की डिग्री हासिल की, और भारत की पहली महिला फिजीशयन बनी। इनकी शादी महज 9 साल की उम्र में हो गई थी और 14 साल की उम्र में मां भी बन गई थीं, लेकिन इन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं को दम तोड़ने नहीं दिया। किसी दवाई की कमी के कारण इनके बेटे की कम उम्र में ही मृत्यु हो गई। इस घटना ने इनके जीवन को बदलकर रख दिया और इन्हें दवाओं पर शोध करने के लिए प्रेरित किया। इन्होंने वुमंस मेडिकल कॉलेज, पेंसिलवेनिया से पढ़ाई की। भारत लौटने के बाद इन्होंने चिकित्सा विज्ञान और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी काम किया। जीवन में तमाम मुश्किलों के बावजूद उनका हौसला कभी डिगा नहीं। पर 26 फरवरी 1887 में महज 22 साल की उम्र में बीमारी के चलते इनका निधन हो गया।

'जानकी अम्मल' 4 नवंबर 1897 को केरल में जन्मी जानकी अम्मल एक साइटोजेनेटिकिस्ट और वनस्पतिशास्त्र की वैज्ञानिक थीं। इन्होंने समाज द्वारा लगाए गए रूढ़िवादी नियमों को तोड़कर हजारों पौधों की प्रजातियों के गुणसूत्रों पर व्यापक अध्ययन व शोध करने में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। इन्होंने गन्नों की हाइब्रिड प्रजाति की खोज की और क्रॉस ब्रीडिंग पर शोध किया था जिसे पूरी दुनिया में मान्यता मिली। इन्होंने ही चीनी को मीठा बनाने का कारण खोजा था। वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए साल 1957 में इन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। 7 फरवरी, 1984 को इनका निधन हो गया।

'कमल रणदिवे' जीव वैज्ञानिक कमल रणदिवे का जन्म 15 दिसंबर 1905 को हुआ था। इनका मूल नाम कमल समर्थ था। इनको विज्ञान के प्रति लगाव पुणे के विख्यात फर्ग्युसन कॉलेज में अपने प्रोफेसर पिता से विरासत में मिला था। देश में कैंसर के उपचार की व्यवस्था को शुरू करने में इनका अहम योगदान माना जाता है। अमेरिका के प्रतिष्ठित जॉन हॉपकिंस विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के बाद वह भारतीय कैंसर शोध केंद्र से जुड़ गईं, जहां उन्होंने कोशिका कल्चर का अध्ययन किया। चूहों पर प्रयोग से उन्होंने उनकी एक ऐसी कैंसर प्रतिरोधी किस्म विकसित की। जिससे इन्हें कुष्ठ रोग का टीका विकसित करने की दिशा में कुछ अहम सुराग मिले। कुष्ठ रोग निवारण के क्षेत्र में काम के लिए ही इन्हें देश के दूसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। कमल रणदिवे का योगदान केवल शोध और अनुसंधान तक ही सीमित नहीं था। उन्होंने भारतीय महिला वैज्ञानिक संघ की स्थापना भी की, जिसने आने वाली पीढ़ी की महिलाओं में वैज्ञानिक चेतना का प्रसार कर उन्हें इस क्षेत्र से जुड़ने के लिए अभिप्रेरित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 11 अगस्त 1970 को इनकी जीवनलीला समाप्त हो गई।

'असीमा चटर्जी' कैंसर चिकित्सा, मिर्गी और मलेरिया रोधी दवाओं के विकास के लिये प्रसिद्ध असीमा चटर्जी का जन्म 23 सितंबर 1917 को बंगाल में हुआ था। ये पहली भारतीय महिला थीं जिन्हें किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट ऑफ साइंस की उपाधि दी गई थी। 2006 में 90 साल की उम्र में इन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया।

'अन्ना मणि' मौसम वैज्ञानिक के तौर पर मशहूर अन्ना मणि का जन्म 23 अगस्त 1918 को केरल के त्रावणकोर में हुआ था। उस समय महिलाओं को विज्ञान पढ़ने या तथाकथित सामाजिक नियमों को तोड़ने की अनुमति नहीं थी। वह इन सभी नियमों को धता बताते हुए आगे बढ़ी और मौसम विज्ञान में अपना शोध शुरू किया। इन्होंने सौर विकिरण, ओजोन परत और वायु ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। वह भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) की उप निदेशक बनीं। 16 अगस्त 2001 को इनका देहांत हो गया।

'डॉ. दर्शन रंगनाथन' 4 जून 1941 को जन्मीं दर्शन रंगनाथन ने जैव रसायन यानी बायो–केमिस्ट्री क्षेत्र में अहम योगदान दिया। वह दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस कॉलेज में व्याख्याता रहीं और रॉयल कमीशन फॉर द एक्जिबिशन से छात्रवृत्ति मिलने के बाद शोध के लिए अमेरिका गईं। भारत लौटकर उन्होंने सुब्रमण्या रंगनाथन से विवाह किया, जो आईआईटी, कानपुर में पढ़ाते थे। उन्होंने आईआईटी, कानपुर में ही अपने शोधकार्य को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। लेकिन, तमाम गतिरोधों के कारण सफल नहीं हो सकीं। फिर भी, ये गतिरोध उन्हें प्रोटीन फोल्डिंग जैसे महत्वपूर्ण विषय में शोध करने से नहीं रोक सके। वह **'करंट हाईलाइट्स इन ऑर्गेनिक केमिस्ट्री'** नामक शोध पत्रिका के संपादन कार्य से भी जुड़ी रहीं। वह राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की फेलो भी रहीं। साथ ही, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल टेक्नोलॉजी, हैदराबाद की निदेशक भी रहीं। वर्ष 2001 में अपने जन्मदिवस के दिन ही उनका निधन हो गया।

'रितु करिधल' भारत की रॉकेट महिला के रूप में मशहूर हो चुकी एयरोस्पेस इंजीनियर रितु करिधल मंगलयान प्रोजेक्ट की

डिप्टी ऑपरेशन डायरेक्टर रह चुकी हैं। ये भारत के सबसे महत्वाकांक्षी मिशन चंद्रयान–2 की मिशन डायरेक्टर थीं। इन्होंने भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में डिग्री ली और 1997 से इसरो से जुड़ गई। साल 2007 में पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने इन्हें इसरो के यंग साइंटिस्ट ऑवार्ड से सम्मानित किया गया।

'मुथैया वनिता' यह इसरो के इतिहास में पहला मौका था जब सबसे महत्वपूर्ण अंतग्रहीय मिशन का जिम्मा एक महिला वैज्ञानिक को दिया गया। बतौर प्रोजेक्ट डायरेक्टर मुथैया वनिता ने चंद्रयान–2 की योजना, प्रक्षेपण से लेकर लैंडिंग तक पूरी प्रकिया का नेतृत्व किया। इन्होंने मैपिंग के लिये इस्तेमाल होने वाले पहले भारतीय रिमोट सेंसिंग उपग्रह कार्टोसैट–1 और दूसरे महासागर अनुप्रयोग उपग्रह ओशनसैट–2 मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साल 2006 में ऐस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया ने इन्हें सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक के पुरस्कार से सम्मानित किया गया, और प्रतिष्ठित साइंस जर्नल **'नेचर'** ने इनका नाम 2019 की पाँच सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक की श्रेणी में रखा।

'शकुंतला देवी' इनको भारत के मानव कंप्यूटर के रूप में जाना जाता है। इनमें कुछ ही सेकंड में जटिल से जटिल गणितीय ऑपरेशन करने की उल्लेखनीय शक्ति थी। शकुंतला देवी के पास कोई औपचारिक शिक्षा नहीं थी। फिर भी वह 6 वर्ष की आयु से ही अपनी गणितीय क्षमताओं का प्रदर्शन करती रही।

इन्होंने एक बार 201 अंकों वाली एक संख्या के 23 वें मूल की गणना की। इन्होंने इसे मानसिक रूप से बिना किसी उपकरण या कलम का उपयोग किए किया और यह कार्य इन्होंने 1977 के सबसे तेज कंप्यूटर UNIVAC से 12 सेकंड तेजी से किया।

'टेसी थॉमस' 1963 में जन्मी, इन्होंने मानक सामाजिक नियमों को तोड़ा और एक भारतीय मिसाइल परियोजना का नेतृत्व करने वाली अग्रणी वैज्ञानिकों में से एक बन गईं। कल्पना कीजिए कि कैसे वह रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) के एक पुरुष प्रधान वैज्ञानिक क्षेत्र में एक शानदार योगदानकर्ता बनने में कामयाब रही। वह इस तरह की एक महत्वपूर्ण परियोजना का नेतृत्व करने वाली पहली भारतीय वैज्ञानिक थीं, जिसने अब हमारे पास सैन्य शक्ति के स्तर को बढ़ा दिया है। वह अग्नि IV और V मिसाइलों के विकास के लिए परियोजना निदेशक बनीं। यह एक ठोस ईंधन वाली अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल है जिसकी मारक क्षमता 5,500 किलोमीटर होती है।

'कल्पना चावला' भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला के बारे में छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक हर कोई जानता है। कल्पना एक एरोनॉटिकल इंजीनियर थी और अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की पहली महिला। वह 376 घंटे 34 मिनट तक अंतरिक्ष में रहीं। इस दौरान उन्होंने धरती के 252 चक्कर लगाए थे। 1 फरवरी 2003 को हुई अंतरिक्ष इतिहास की एक मनहूस दुर्घटना में कल्पना चावला सहित सातों अंतरिक्ष यात्रियों की मौत हो गई।

'सुनीता विलियम्स' सुनीता विलियम्स अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के जरिये अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की दूसरी महिला हैं। सुनीता विलियम्स ने एक अंतरिक्ष यात्री के रूप में 195 दिनों तक अंतरिक्ष में रहने का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया।

ये सभी भारतीय मूल के नाम है और इस बात के प्रमाण हैं कि भारतीय महिलाओं ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी प्रकार पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महिलाओं ने बहुत संघर्ष किया और अपने कार्य से अपनी

एक अलग पहचान बनाई व पत्रकारिता को एक नई दिशा दी।

आज से कुछ वर्ष पहले तक मीडिया में महिलाओं के कुछ गिने–चुने नाम ही मुश्किल से याद आते हैं, क्योंकि मीडिया इंडस्ट्री में महिला पत्रकारों के सामने कई प्रकार की चुनौतियां रहीं है, क्योकि इस पुरुष प्रधान पेशे में महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार होता रहा। महिलाओं की प्रताड़ना, शोषण, अत्याचार के कई प्रकरण है जिसकी वजह से महिलाएं इस पेशे में आने से कतराती थी। महिलाओं का इस क्षेत्र में न कार्य न करने का एक कारण रात के समय कार्य करना भी रहा।

पर आज मीडिया–जगत का ऐसा कोई कोना नहीं जहाँ महिलाएँ आत्मविश्वास और दक्षता से मोर्चा नहीं संभाल रही हो। विगत वर्षों में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और इंटरनेट पत्रकारिता की दुनिया में महिला स्वर प्रखरता से उभर रहा है।

इस जगमगाहट का एक अहम कारण यह है कि पत्रकारिता के लिए जिस वांछित संवेदनशीलता की जरुरत होती है वह महिलाओं में नैसर्गिक रूप से पाई जाती है। पत्रकारिता में एक विशिष्ट किस्म की संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है और समानांतर रूप से कुशलतापूर्वक अभिव्यक्त करने की भी। संवाद और संवेदना के सुनियोजित सम्मिश्रण का नाम ही सुन्दर पत्रकारिता है। महिलाओं में संवाद के स्तर पर स्वयं को अभिव्यक्त करने का गुण भी पुरुषों की तुलना में अधिक बेहतर होता है। यही वजह रही है कि मीडिया में महिलाओं का गरिमामयी वर्चस्व बढ़ा है।

संवेदना के स्तर पर जब तक वंचितों की आह, पुकार और जरुरत एक पत्रकार को विचलित नहीं करती उसकी लेखनी में गहनता नहीं आ सकती। लेकिन महज संवेदनशील होकर पत्रकारिता नहीं की जा सकती क्योंकि इससे भी अधिक अहम है उस आह या पुकार को दृढ़तापूर्वक एक मंच प्रदान करना। यहाँ जिस सुयोग्य संतुलन की दरकार है वह भी निःसंदेह महिलाओं में निहित होती है, जिसे वैज्ञानिक भी प्रमाणित कर चुके हैं। इसके साथ ही पत्रकार में गहन अवलोकन क्षमता और पैनी दृष्टि होनी चाहिए, जोकि महिलाओं में कूट–कूट कर भरी होती है। क्योंकि, जिस बारीकी से वह बाल की खाल निकाल सकती है वह सिर्फ उन्हीं के बस की बात है। महिला पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान करने वाली ऐसी ही कुछ चुनिंदा महिला पत्रकारों के नाम इस प्रकार है –

'विद्या मुंशी' विद्या मुंशी को भारत की पहली महिला पत्रकार माना जाता है। मुंबई में जन्मी विद्या ने अनेक समाचार पत्र–पत्रिकाओं में कार्य किया। 1952–62 के बीच वे रूसी करंजिया के चर्चित अखबार ब्लिट्ज की कलकत्ता संवाददाता रहीं। उन्होंने उस वक्त सरकार की नीतियों पर प्रभावी लेखन किया। खोजी पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने स्मगलिंग, अवैध उत्खनन के कई स्कूप उजागर किए।

'विमला पाटिल' भारतीय महिला पत्रकारों में इनका नाम सम्मान से लिया जाता है। संभवतः ये पहली महिला थी जिन्होंने द टेलीग्राफ से जुड़कर लेखिका, स्तंभकार और पत्रकार के तौर पर अपना करियर शुरू किया। 1959 से 1993 तक वे लगातार संपादक और महत्वपूर्ण पदों पर रहीं। उन्होंने टाइम्स ग्रुप की पत्रिका फेमिना को भी एक ब्रांड के तौर पर स्थापित किया।

'प्रभा दत्त' ये 1965 के भारत–पाक युद्ध में कवरेज करने वाली प्रथम महिला थी। ये अंग्रेजी अखबार हिंदुस्तान टाइम्स के लिए कार्य करती थी। इनकी बेटी बरखा दत्त आज के समय की एक जानी मानी एनडीटीवी चौनल रिपोर्टर व एंकर है, जोकि कारगिल युद्ध की कवरेज करने के लिए बहुत प्रसिद्ध हुई।

'नीरजा चौधरी' ये आज भी महिला पत्रकारिता में एक मिसाल के तौर पर कार्य कर रही हैं। इन्होंने 60 के दशक में मुंबई के हिम्मत अखबार से अपनी यात्रा शुरू की। इन्होंने स्वयं को एक राजनैतिक पत्रकार के तौर पर स्थापित किया। ये आज दिल्ली में स्थित महिलाओं के प्रेस क्लब से जुड़ी है। देश–विदेश की पत्र–पत्रिकाओं में इनके लेख छपते है।

'मृणाल पाण्डे' इन्होंने उस वक्त सम्पादक की कुर्सी सम्भाली जब इस पेशे में महिलाओं का औसत बिल्कुल नगण्य था। इन्होंने उस वक्त के प्रतिष्ठित दैनिक व साप्ताहिक समाचार पत्र हिन्दुस्तान के संपादकीय दायित्व को निभाया। इन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में कई कीर्तिमान रचे। ये 2008 में पीटीआई बोर्ड की सदस्य बनी और बाद में प्रसार भारती की चेयरपर्सन भी रहीं।

'चित्रा सुब्रमण्यम' ये एक प्रभावशाली व्यक्तित्व है जिन्होंने अपनी खोजी पत्रकारिता से पत्रकारिता में महिला प्रभुत्व को स्थापित कर दिया। चित्रा सुब्रमण्यम ने जनसंचार में डिग्री–डिप्लोमा हासिल कर इंडिया टुडे में कार्य किया। द हिन्दू, इंडियन एक्सप्रेस, स्टेट्समैन से जुड़कर इन्होंने बोफोर्स कांड (तोपों की खरीदी में अवैध तरीके से भुगतान का मामला) को उजागर किया। यह भारतीय राजनीति का चर्चित स्कैण्डल रहा।

'मधु त्रेहान' ये भारत की प्रख्यात महिला पत्रकार हैं जिन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में मास्टर डिग्री लेने के बाद 1975 में इंडिया टुडे के अंग्रेजी संस्करण की नींव रखी। वे इसकी संस्थापक संपादक रही। 1986 में इन्होंने न्यूट्रेक नाम की पहली वीडियो मैगजीन की शुरुआत कर पत्रकारिता के क्षेत्र में तहलका मचा दिया। वे आज भी आउटलुक, हिंदुस्तान टाइम्स सहित अन्य स्थानों पर सक्रिय लेखन कर रही है।

इसके अतिरिक्त मालिनी पार्थसारथी द हिन्दू की मुख्य संपादक रही, आरती जेरथ टाइम्स ऑफ इंडिया में महत्वपूर्ण पद पर रहीं। कादंबरी मुरली स्पोर्ट्स इलेस्ट्रेट में खेल संपादक के तौर पर तो शोभा चौधरी तहलका की प्रबंध संपादक का दायित्व संभालती है। शोभा डे, वर्तिका नंदा, शारदा उगरा, सागरिका घोष, भाषा सिंह, क्षिप्रा माथुर, स्मिता मिश्र, उपमिता वाजपेयी जैसी महिलाएं पत्रकारिता के मोर्चे पर डटीं हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में नीलम शर्मा, निधि कुलपति, ऋचा अनिरुद्ध, मीमांसा मालिक, अनुराधा प्रसाद, श्वेता सिंह, अंजना ओम कश्यप, नेहा पंत, कादम्बिनी शर्मा सहित अनेकों नाम है, जिन्होंने अपनी अलग छाप छोड़ी है।

बसंत तुम्हारा अभिनंदन है

चेतना साबला
अंधेरी, मुंबई

मंद, मंद, शीतल, पवन हे फूलों से
भरा चमन है।
खुश धरा, खुश नील गगन हैं
बसंत तुम्हारा अभिनंदन है।
बसंत तुम्हारा अभिनंदन है,

जब प्रकृति ने ली अंगड़ाई और
चहूँओर घटा अलौकिक छाई,
बसन्ती चोला पहन धरती
दुल्हन जैसी शरमाई।
गूंज रहा नशा नस नस में,
बहका बहका सा यौवन हे
बसंत तुम्हारा अभिनंदन है
बसंत तुम्हारा अभिनंदन है

उषा की किरणों की लाली
लहराते फसलों की बाली।
हाथों में पूजा की थाली
कोयलिया गाये मतवाली।
खुशबू से भरा महका उपवन है
बसंत तुम्हारा अभिनंदन है,
बसंत तुम्हारा अभिनंदन है।

भवरों के दिलकश तराने ने
मन में सारंगी बसती।
रोम रोम पुलकित हो जाता
धड़कनें तेज चलने लगती।
पतझड़ का मौसम भी देता
बहारों को आमंत्रण।
बसंत तुम्हारा अभिनंदन है,
बसंत तुम्हारा अभिनंदन है।

पापा

संजय जांगिड 'भिरानी'
हनुमानगढ (राजस्थान)

पापा सिर्फ पापा नही होते है,
सारी दुनिया का अहसास होते है,
पापा की ताकत हम होते है,
जब सपने अपने सम्पन्न होते है।

पापा दुनिया मे सबसे अलग है,
हम उनकी होते सबमे पहल है,
ना जाने क्यो वो कष्ट सहते है,
साधारण सा सब कुछ पहनते है।

जब तक पापा का हाथ हम पर है,
दुनिया की सारी ताकत हम पर है,
ना जाने देगे हम ये सुनहरा मौका,
पार लगा देगे हम हमारी ये नौका।

रवि सा तेज प्रताप बनाते हमे,
दुनिया से लङना सीखाते हमे,
जिम्मेदारी से रूबरू कराते हमे,
पापा सिर्फ पापा नही लगते हमे।

दोस्त बनकर साथ निभाते वो,
सपनो का भव्य साज बनाते वो,
भूखे रह हमारी भूख मिटाते वो,
हिमालय सा हमारा घर बनाते वो।

स्थायी स्तम्भ

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह
भू–वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्
एवं हिन्दी रचनाकार, पटना

पर्यावरण चिन्तन 13

यह भलीभाँति ज्ञातव्य है कि सौर मंडल के ज्ञात ग्रहों में पृथ्वी एकमात्र ग्रह है, जहाँ जीवन मुस्कान भरता आ रहा हैं। इसका मूल कारण यहाँ का 'पर्यावरण' है। लेकिन वर्तमान इसकी सौम्यता का अभिशाप बनकर बलवान होता जा रहा है। आज हम जिस परिवेश में जीवन यापन कर रहे हैं, उस परिवेश में हमारे चतुर्दिक का पारितंत्र बहुत कुछ असन्तुलित हो रहा है। इस कारण प्रकृति अक्रांत हो रही है, जिससे स्वंय हम मानव परेशान हैं। प्रकृति की इस अक्रांतता के कारण वैश्विक तापन एवं जलवायु–परिवर्तन के साथ–साथ प्राकृतिक आपदाओं का सिलसिला त्वरित होने लगा है। फलस्वरूप जीवन संकटग्रस्त हो गया है।

वर्तमान युग में काफी विकास हुआ और हो भी रहा है। इसका नकारात्मक प्रभाव सबसे ज्यादा पर्यावरण पर हुआ। फलस्वरूप,हम सभी असन्तुलन और प्रदूषण के दुष्प्रभाव से ग्रसित होते गये। भविष्य पर ध्यान दिये बिना वर्तमान को कृत्रिम फूल और रंग–रोगन से सजाने लगे।

विकासशील कहलाने लगे। मगर विकास की अंधी दौड़ ने प्रकृति को बाहर–भीतर से खोखला करने पर तूल गई है। और हम भलीभाँति यह जानते हुए कि प्रकृति के आँचल में प्राकृतिक संसाधन सीमित मात्रा में उपलब्ध है,का अविवेकी रूप से उत्खनन और अतिदोहन करते जा रहे हैं। आजकल विकास के लिये ऊर्जा–संसाधन की अहमियत थोड़ी नहीं बल्कि काफी बढ़ती जा रही है। कोयला और पेट्रोल पर हमारी निर्भरता कम होती दिखाई नहीं दे रही है,जबकि प्रकृति में उपलब्ध प्रचुर मात्रावाली पवन–ऊर्जा एवं सौर–ऊर्जा की ओर कछुआ–चाल अख्तियार किये हुए चल रहे हैं। पवन–ऊर्जा क्षेत्र में धीमा उत्पादन और सौर–ऊर्जा क्षेत्र में मंहगा उत्पादन का रोना रोने में लगे हैं। अरे भाई, रोना यानि अक्षम्य छोड़कर सौर–ऊर्जा की असीम भंडार पर अपना ध्यान केन्द्रित करने में खरगोश बनें।

क्रमशः

08 मार्च पर विशेष

भक्ति और शक्ति का संगम 'महाशिवरात्रि'

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय विद्यालय, लखनऊ

'परमतत्व की चाहत करने वाले सभी लोगों के लिए महाशिवरात्रि बहुत महत्वपूर्ण है। शिवजी से प्रार्थना है कि यह रात संपूर्ण मानव जाति के चौतन्य जागृति की रात बन जाए'

भारतीय संस्कृति विभिन्न त्योहारों एवं उत्सवों से परिपूर्ण है, यहां के हर दिन को उत्सव के रूप में मनाना इस देश की सुन्दरता है जो कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक भावनाओं से ओत–प्रोत होते हैं। इन्हीं त्योहारों की खूबसूरत श्रृंखला में एक कड़ी है **'महाशिवरात्रि'**। प्रत्येक माह की अमावस्या से एक दिन पूर्व को शिवरात्रि के नाम से जाना जाता है अर्थात पूरे वर्ष में कुल बारह शिवरात्रि होती है जिसमें फागुन माह की शिवरात्रि को महाशिवरात्रि के नाम से जाना जाता है, यह शिवरात्रि धार्मिक, सामाजिक ,वैज्ञानिक एवं अध्यात्मिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह रात्रि पूरे वर्ष की सर्वाधिक अंधेरी रात होती है, इस रात्रि में पृथ्वी का उत्तरी गोलार्द्ध इस प्रकार अवस्थित होता है जो कि आराधक की आध्यात्मिक ऊर्जा को शिखर तक ले जाने में मदद करता है, इसी स्वर्णिम अवसर पर भक्त जन महाशिवरात्रि के पावन उत्सव को भक्ति, उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनाते हैं।

'महाशिवरात्रि' जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि यह देवों के देव महादेव उपासना की महान रात्रि जानी जाती है।। शिवजी परमात्मा के देवता है जिसका संस्कृत में अर्थ ही कल्याणकारी होता है, साथ में रात्रि शब्द जुड़े होने का कारण है कि रात्रि में सभी जीव अज्ञान रूपी माया के वश में होकर विभिन्न मानवीय विकारों से ग्रसित हो जाते हैं, ऐसे समय संपूर्ण संसार को जगाने एवं विश्व में प्रेम, पवित्रता, शांति एवं सदधर्म स्थापित करने हेतु शिवजी पृथ्वी पर अवतरण लेते हैं। महाशिवरात्रि के अध्यात्म को समझाने के लिए शिवलिंग परमात्मा शिव के ज्योतिर्लिंग रूप को प्रदर्शित करता है क्योंकि उनका कोई मानव स्वरूप है ही नहीं, शिव एक सूक्ष्म, पवित्र एवं स्वदीप्तिमान दिव्य पुंज हैं, जिसे एक अंडाकार रूप में अनुभव किया जा सकता है, इसीलिए उन्हें ज्योतिर्लिंग रूप में प्रदर्शित किया जाता है। शिव सत्य है, कल्याणकारी है और एक सुंदर आत्मा का प्रतीक है, यही कारण है कि शिव को सत्यम, शिवम, सुंदरम कहा जाता है।

मान्यता है कि महाशिवरात्रि की अर्धरात्रि को शिव जी निराकार रूप (लिंग रूप) में उद्भव हुआ था। देवों के देव महादेव की विशेषता है कि वह साकार और निराकार दोनों रूपों में पूजनीय है। जहां साकार शिव रूप में हम सभी के हृदय में विराजमान हैं वहीं उनका निराकार रूप सम्पूर्ण विश्व को अपनी असीम ऊर्जा से अभिसिंचित करता है। देश में कुल बारह ज्योतिर्लिंग स्थापित है जो सदैव पूजनीय हैं एवं प्रत्येक ज्योतिर्लिंग के साथ उनकी विशेषताएं भी जुड़ी हुई है। वैज्ञानिकों के अनुसार शिवलिंग एक ऊर्जा पिंड है जो गोल लंबा वृताकार एवं गोलाकार पटल पर शिव मंदिरों में स्थापित होता है, यह ऊर्जा पिंड ब्रह्मांड में व्याप्त समस्त रेडियोएक्टिव शक्तियों को शोषित करता रहता है, इसके निमित्त होने वाले रुद्राभिषेक, जलाभिषेक, भस्म आरती, भांग, धतूरा, बेलपत्र एवं आक पत्र आदि के अर्पण के माध्यम से उस शक्तिशाली ऊर्जा को स्वयं में समाहित करता रहता है जिसके परिणाम स्वरूप शुद्ध विचारों का उद्गम होता है और साथ ही शरीर और आत्मा को विभिन्न प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों से निवारण मिलता है ।

शिव का शाब्दिक अर्थ है **'जो नहीं है'** की धारणा ही सत्य एवं सुंदर है अर्थात संसार में सब शून्य है। हमारी सृष्टि का शून्य से जन्मना और शून्य में ही समाप्त हो जाना ही जीवन यात्रा है। शिव का निराकार रूप प्राणियों को भोग विलास से दूर रहकर, सादा जीवन एवं उच्च और सरल जीवन जीने की प्रेरणा देता है। भगवान शिव का पंचाक्षरी शब्द **'ओम नमः शिवाय'** बहुत ही शक्तिशाली एवं चमत्कारी मंत्र माना जाता है क्योंकि यह मंत्र भगवान शिव को अति पसंद है, इस मंत्र का तात्पर्य पांच महा तत्वों से है जो पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश है। भगवान शिव स्वयं प्रकृति पुरुष है इसलिए इस मंत्र का जाप करने से मानव इनके ब्रह्म स्वरूप को जानने में सक्षम हो जाता है साथ ही यह मंत्र शरीर में अपरिमित ऊर्जा का संचार करता है ।

मान्यता है कि शिव जी अनेकों रुपो में अपने भक्तों का कल्याण करते हैं और उनका हर रुप समाज को अलग अलग संदेश देता है। आइये उनके कुछ रूपों पर दृष्टि पात कर उनकी महिमा को समझते हैं।

कैलाश पति – शिव जी कैलाश पर्वत पर रहते थे जो कि चारों ओर बड़े बड़े चट्टानी और बर्फानी पहाड़ों से घिरा हुआ है, यही कारण है कि उन्हें कैलाशपति के नाम से जाना जाता है जो मानव को विकट एवं विपरीत परिस्थितियों में भी चट्टान के समान अडिग और मजबूती से खड़े रहने के प्रेरणा देता है।

नीलकंठ – शिव जी ने सुर और असुर के बीच हुए सागर मंथन के फलस्वरुप अनेक अनमोल रत्नों के साथ साथ निकले हलाहल विष को जन कल्याण हेतु स्वयं ही पी लिया था मगर उसे अपने गले के नीचे नहीं उतरने दिया जिससे उनका गला नीला पड़ गया तभी से उन्हें नीलकंठ का नाम पड़ गया। इनका नीलकंठ रूप यह प्रेरणा देता है कि अच्छाई के संवर्धन हेतु विष भी पीना पड़े तो उसे भी समाज हित में सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए।

पशुपतिनाथ – शिवजी सभी छोटे बड़े पशु जीव एवं विषैली प्रजातियों के स्वामी माने जाते हैं उनका यह रूप समाज को संदेश देता है कि सभी प्राणियों से प्रेम करो न कि उनसे घृणा और नफरत करके उनको कष्ट पहुंचाए।

भोला भण्डारी – उनका भोला भाला रूप समाज को सरल एवं स्वाभाविक जीवन जीने की प्रेरणा देता है क्योंकि ऐसे लोग सदैव प्रसन्न रहते हैं एवं सभी को प्रिय होते हैं। उनके इसी रूप से प्रभावित होकर लोग उन्हें भोला भण्डारी भी कहते है।

रुद्रावतार – शिवजी का रुद्रावतार समाज को संदेश देता है कि निर्बलों पर जुल्म एवं अन्याय होने पर अपने कर्तव्य से विमुक्त हुए बिना जुल्मी और अन्यायी के विरोध में खड़े होने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

अर्धनारीश्वर – समाज में नर और नारी के समान अधिकारों को दर्शाता हुआ उनका अर्धनारीश्वर रूप यह संदेश देता है कि सृष्टि के परिचालन में दोनों ही महत्वपूर्ण है, पुरुष जहां शिव का रूप है वही स्त्री शक्ति रूप है अतः स्पष्ट है कि जब तक सम्पूर्ण विश्व एवं समाज में शिव और शक्ति की धारा लयबद्ध होगी, तब तक आशुतोष भी लय में रहते हैं और लय के बाधित होने पर वे रौद्र एवं विकराल रूप धारण कर प्रलय उत्पन्न करने में भी विलंब नहीं करते हैं।

आशुतोष – शिवजी अपने आराधक की आराधना से शीघ्र प्रसन्न होकर उसका सदैव कल्याण करते हैं उनका यह रूप समाज को संदेश देता है कि सच्चे हृदय से शिव की शरण में चले जाने से उनका वरदहस्त सदैव अपने भक्तों पर बनाए रखते हैं।

त्रिमूर्ति – परमात्मा शिव त्रिमूर्ति हैं वे ब्रह्मा द्वारा स्वर्ण युग रूपी विश्व की स्थापना कराते हैं और उस विश्व का पालन श्री विष्णु जी के माध्यम से कराते हैं और शंकर द्वारा पुरानी अधर्म पूर्ण कलयुगी सृष्टि का विनाश भी करते हैं। शिवरात्रि में रात्रि को अज्ञानता के रूप में दर्शाया जाता है इसी अज्ञान रूपी अंधकार में खोकर मानव काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार रूपी विकारों से ग्रसित हो जाते हैं, तब स्वयं परमपिता शिव पृथ्वी पर आगमन कर विश्व में पुनः सुख, शांति, आनंद, प्रेम एवं पवित्रता जैसे उच्च मूल्यों की स्थापना करते हैं

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि महाशिवरात्रि का यही संदेश है जब सारा संसार अज्ञानता के घोर अंधकार में सुषुप्त हो जाय तब हम हमारे सुकर्मों के प्रति पूर्ण रूप से जागृत हो जाए और अपनी सत्कर्मों और और पवित्र विचारों को ईश्वर की कृपा से उच्चतम शिखर पर ले जाएं, जिससे हम चिरस्थाई सुख, शांति और सशक्त समाधान की प्रवृत्ति प्राप्त कर सके। इस महा शिवरात्रि पर हम सब संकल्प ले कि अपने अंदर निहित पांचों विकारों को दूर कर अपने बहुमूल्य जीवन को सुखमय शांतिमय और आनंदमय बनाएं। इसी के साथ भगवान शिव के सभी रूपों द्वारा प्रदत्त सभी शिक्षाओं एवं संदेशों को अपने जीवन में आत्मसात करने का प्रयास करें। अपनी अंतरात्मा को शुद्ध रखने हेतु इस पावन अवसर पर उपवास रख कर त्रिगुण शिव जी की उपासना कर तन और मन दोनों को शुद्ध रखने का प्रयास करें। महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर हम लोग प्रतिज्ञा लें कि इसको मात्र एक त्योहार न मान करके शिव जी के सभी रूपों के संदेशों और शिक्षाओं से प्रेरणा ले। आधुनिक समय में समाज में होने वाले मानवीय मूल्यों के ह्रास से जो सामाजिक पतन हो रहा है उसमें शिव के दर्शन को अपनाना अति आवश्यक है जिससे समाज को सही दिशा और दशा दोनों मिल जाएगी और वह एक लयबद्ध रुप में कल्याण कारी मार्ग पर अग्रसर हो जायेगा।

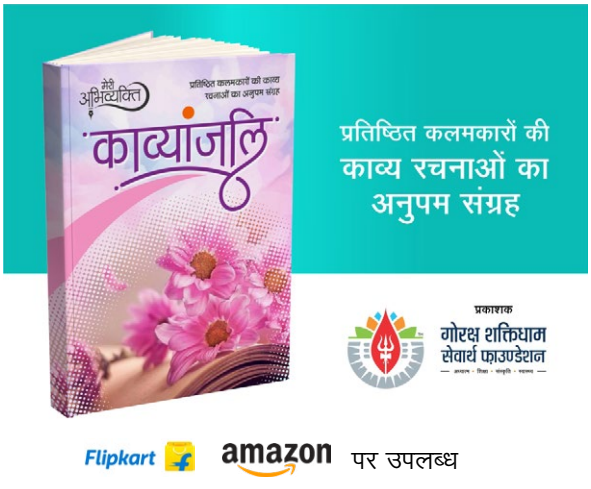

10 मार्च पर विशेष

क्रान्तिकारियों के बलिदान का साक्षी : सेल्युलर जेल

कृष्ण कुमार यादव
भारतीय डाक सेवा,
पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

भारत ने एक राष्ट्र के रूप में अपनी आजादी पाने के लिए तमाम बलिदान दिए और यातनाएँ सहीं। इनमें सबसे भयंकर काला पानी की सजा थी। आजादी के जिन दीवानों से अंग्रेजी हुकूमत को ज्यादा खतरा महसूस हुआ, उन सभी को सुदूर समुद्र पार अण्डमान के द्वीपों पर निर्वासित कर शारीरिक और मानसिक यातनाएँ दी गई। पोर्टब्लेयर में सेलुलर जेल स्थापित कर क्रूरता के नए आयाम स्थापित किये गए। पर यह सब उन क्रांतिकारियों का हौसला तोड़ नहीं सका, जो सर पर आजादी पाने के लिए कफन बाँधकर निकले थे। आज देश आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश कर 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है। ऐसे में जरुरी है कि क्रांतिकारियों के बलिदान के साक्षी सेलुलर जेल से उन्हें रूबरू कराया जाए, ताकि वे आजादी की कीमत समझ सकें।

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम ने अंग्रेजी सरकार को चौकन्ना कर दिया। व्यापार के बहाने भारत आये अंग्रेजों को भारतीय जनमानस द्वारा यह पहली कड़ी चुनौती थी जिसमें समाज के लगभग सभी वर्ग शामिल थे। जिस अंग्रेजी साम्राज्य के बारे में ब्रिटेन के मजदूर नेता अर्नेस्ट जोंस का दावा था कि–''अंग्रेजी राज्य में सूरज कभी डूबता नहीं और खून कभी सूखता नहीं'', उस दावे पर ग्रहण लगता नजर आया। दिल्ली में हुए युद्ध पर अंग्रेज हड्सन के शब्द गौर करने लायक हैं–''शहर की सीमा पर जबरदस्त विरोध का सामना करने के बाद हमारी फौजें शहर में दाखिल हुईं, तो जिस हिम्मत और दृढ़ता के साथ विद्रोहियों और हथियारबंद योद्धाओं ने जंग लड़ी, वह सब हमारी सोच से बाहर था।'' स्पष्ट है कि अंग्रेजों को आभास हो चुका था कि उन्होंने युद्ध अपनी बहादुरी व रणकौशलता की वजह से नहीं बल्कि षडयंत्रों, जासूसों, गद्दारी और कुछेक भारतीय राजाओं के सहयोग से जीता था। अपनी इन कमजोरियों को छुपाने के लिए जहाँ अंग्रेजी इतिहासकारों ने 1857 के स्वाधीनता संग्राम को सैनिक गदर मात्र कहकर इसके प्रभाव को कम करने की कोशिश की, वहीं इस संग्राम को कुचलने के लिए भारतीयों को असहनीय व अस्मरणीय यातनायें दी गई। एक तरफ लोगों को फांसी दी गयी, पेड़ों पर समूहों में लटका कर मृत्यु दण्ड दिया गया व तोपों से बांधकर दागा

गया वहीं जिन जीवित लोगों से अंग्रेजी सरकार को ज्यादा खतरा महसूस हुआ, उन्हें ऐसी जगह भेजा गया, जहाँ से जीवित वापस आने की बात तो दूर किसी अपने-पराये की खबर तक मिलने की कोई उम्मीद भी नहीं रख सकते थे। अन्तिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को अंग्रेजी सरकार ने रंगून भेज दिया, जबकि इसमें भाग लेने वाले अन्य क्रान्तिकारियों को काले पानी की सजा बतौर अण्डमान भेज दिया।

भौगोलिक रूप से कोलकाता के दक्षिण में लगभग 1200 किलोमीटर की दूरी पर बंगाल की खाड़ी में प्रकृति के खूबसूरत आगोश में 8249 वर्ग कि0मी0 में विस्तृत 572 द्वीपों (अंडमान-550, निकोबार-22) के अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में भले ही मात्र 38 द्वीपों (अंडमान-28, निकोबार-10) पर जन-जीवन है, पर इसका यही अनछुआपन ही आज इसे 'प्रकृति के स्वर्गरूप में परिभाषित करता है। अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्टब्लेयर, जो कि यहाँ का प्रमुख बन्दरगाह भी है, पर सेल्युलर जेल अवस्थित है। 1789 में यहाँ कब्जा करने वाले ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लेफ्टिनेंट लॉर्ड आर्किबल्ड पोर्ट ब्लेयर के नाम पर इसका नामकरण पोर्टब्लेयर किया गया। वनाच्छादित इन जंगलों में दुनिया की सबसे प्राचीन जनजाति शोम्पेन और जारवा बसी हुई हैं। इसी द्वीप पर 1857 के संग्राम पश्चात जनवरी 1858 में अंग्रेजों ने पुनः कब्जा कर स्वाधीनता सेनानियों के निष्कासन के लिए चुना, जिसे 'दण्डी बस्ती' कहा गया। इसी दण्ड को जनभाषा में **'काला पानी'** की सजा कहा गया। 10 मार्च 1858 को पहली बार 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले 200 लोगों के जत्थे को लेकर जेम्स पेरिकन वाकर जहाज से अण्डमान पहुँचा, तो अप्रैल 1868 में 737 स्वतंत्रता सेनानियों का दूसरा जत्था कराची से यहाँ लाया गया। इन सभी को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। अंग्रेजी सरकार को लगा कि सुदूर निर्वासन व यातनाओं के बाद ये स्वाधीनता सेनानी स्वतः निष्क्रय व खत्म हो जायेंगे पर दण्डी बस्ती में यह निर्वासन भी इन सेनानियों की गतिविधियों को नहीं रोक पाया। वे तो पहले से ही जान हथेली पर लेकर निकले थे, फिर भय किस बात का। अपने विद्रोही तेवरों के लिए मशहूर प्रथम जत्थे के 200 पंजाबी सेनानियों ने 1 अप्रैल 1859 को सुपरिन्टेण्डेण्ट वाकर को मारने का प्रयास किया, पर किसी तरह वाकर ने वहाँ से भागकर अपनी जान बचायी। इस विद्रोह में इन बन्दी सेनानियों ने बन्दूकों, चाकुओं व कुल्हाड़ियों की मदद से नौसैनिक प्रहरियों की हत्या कर बस्ती के गोदाम और प्रहरी नौकाओं पर कब्जा कर लिया था। बन्दी सेनानियों का यह प्रथम संगठित प्रयास था पर इससे पूर्व भी कई बन्दी सेनानियों ने विद्रोह कर भागने का प्रयास किया था।

दीनापुर कैण्टोनमेण्ट के सेनानी नारायण ने पहले जत्थे में अण्डमान पहुँचने के दिन से ही कैदी सेनानियों को विद्रोह के लिए प्रेरित किया और चौथे दिन ही चौथम द्वीप से पलायन करने का प्रयास किया। वह चौथम द्वीप से तैरकर मुख्य द्वीप पहुँचने ही वाला था कि उस पर गोली चलाकर वापस आने के लिए मजबूर कर दिया गया एवं तत्पश्चात मुकदमा चलाकर उसे मृत्यु दण्ड दे दिया गया। इसी प्रकार एक बन्दी सेनानी निर्गुण सिंह ने रॉस द्वीप पर आत्महत्या कर ली। 18 मार्च 1858 को रॉस द्वीप से 21 बन्दी सेनानी पलायन कर गये पर अन्ततः 30 मार्च को उन्हें चौथम द्वीप पर आत्मसमर्पण करना पड़ा। रॉस द्वीप से ही 23 मार्च को 11 कैदी पलायन कर गये, जिनका अन्त तक कोई पता नहीं चला। मात्र 2 महीनों के भीतर मार्च व अप्रैल 1858 में कुल 251 बन्दी सेनानियों ने वहाँ से पलायन करने का प्रयास किया, जिसमें 88 पकड़े गये और उनमें से 46 को सुपरिण्टेन्डेन्ट वाकर ने मृत्यु दण्ड दे दिया। पलायन करने वाले शेष बन्दी सेनानी या तो कबिलाइयों के हाथ मारे गये अथवा भूख-प्यास से ग्रस्त होकर खत्म हो गये। इसी प्रकार अंग्रेजी सरकार ने न जाने कितने स्वतंत्रता सेनानियों को अण्डमान निर्वासित करके भेजा पर इन सेनानियों ने हिम्मत नहीं हारी। 1868 में 238 बन्दी सेनानियों ने पलायन करने का प्रयास किया पर अन्ततः सभी पकड़ लिये गये। इनमें से 187 को सुपरिण्टेन्डेन्ट वाकर ने फाँसी पर लटका दिया और एक ने आत्महत्या कर ली।

8 फरवरी 1872 को वहाबी आन्दोलन से जुड़े शेरअली ने भारत के वायसराय लार्ड मेयो की हत्या कर दी। अंग्रेजी सरकार ने घबराकर शेरअली को मृत्युदण्ड की सजा देते हुये वाइपर नामक द्वीप पर फांसी पर लटका दिया। इस घटना ने अंग्रेजी सरकार को हिला कर रख दिया और अंततः अंग्रेजी सरकार ने दण्डी बस्ती को कारागार में बदलने का कठोर निर्णय लिया। बन्दी सेनानी से द्वीपों में जंगलों की सफाई, पेड़ काटने व पत्थर तोड़ने जैसे कार्य करवाये गये, ताकि कारागार का निर्माण हो सके। 1890 में सर चार्ल्स जे0 लायल एवं ए0 एस0 लेथ पोर्टब्लेयर आये तथा कारागार निर्माण की अनुमति दी। पर यह निर्माण कार्य 6 साल बाद 1896 में आरम्भ हुआ तथा 10 साल बाद 10 मार्च 1906 को पूरा हुआ। सेलुलर जेल के नाम से प्रसिद्ध इस कारागार में 698 बैरक (सेल) तथा 7 खण्ड थे, जो सात दिशाओं में फैल कर पंखुडीदार फूल की आकृति का एहसास कराते थे। इसके मध्य में बुर्जयुक्त मीनार थी, और हर खण्ड में तीन मंजिलें थीं। सेलुलर जेल के निर्माण के बाद यहाँ दिये जाने वाले दण्डों की भयावहता और भी बढ़ गयी। इस दौरान मोपला आन्दोलन (1921)ए रम्पा आन्दोलन (1879-1922), तरावड़ी किसान आन्दोलन, बर्मा आन्दोलन (1930) इत्यादि में भाग लेने वाले तमाम स्वाधीनता सेनानियों को काले पानी का आजीवन कारावास भोगने के लिये इस सेलुलर जेल में भेजा गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के पश्चात क्रान्तिकारियों को स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रियता से भाग लेने के कारण चार वर्ष की अवधि में ही 488 क्रान्तिकारी कालापानी की सजा हेतु सेलुलर जेल भेज दिये गये। इन क्रान्तिकारियों का मनोबल तोड़ने और उनके उत्पीड़न हेतु यहाँ पर तमाम रास्ते अख्तियार किये गये। स्वाधीनता सेनानियों और क्रातिकारियों को राजनैतिक बंदी मानने की बजाय उन्हें एक सामान्य कैदी माना गया। यही कारण था कि उन्हें लोहे के कोल्हू चलाने हेतु बैल की जगह जोता गया और प्रतिदिन 15 सेर तेल निकालने की सजा दी गयी। यह अलग बात है कि सौ में एकाध ही ऐसा होता जो दिन-भर कोल्हू में जुतकर 15 सेर तेल निकाल पाता। तेल पूरा न होने पर थप्पड़ पड़ते, और बेतें बरसतीं। इतिहास गवाह है कि अलीपुर षडयंत्र से जुड़े क्रान्तिकारी उल्लासकर इसी प्रकार की सजा के चलते अपना

मानसिक संतुलन खो बैठे और 14 साल तक मद्रास के मानसिक चिकित्सालय में भर्ती रहे। बन्दी सेनानियों को खाने के लिए दी जाने वाली रोटी में कचरे के साथ कीड़ों-मकोड़ों का मिश्रण होता, सब्जी में उन्हें जंगली घास उबाल कर दी जाती, पहनने हेतु मोटे खुरदुरे टाट के कपड़े दिये जाते, जो कोड़ां से छिले बदन पर सुई की भांति चुभते और ये कपड़ा न पहनने पर नंगे छिले बदन को समुद्री पानी की नमकीन वायु की तीक्ष्ण जलन सहनी पड़ती थी। बेंत की मार, एकांतावास की सजा, कोल्हू में जुतना इत्यादि के साथ मल-मूत्र करने पर भी रोक-टोक थी। सुबह-शाम व दोपहर को छोड़कर अन्य समय शौच जाना अपराध माना जाता था। कोठरी में रात को एक ही कैदी रहता था तथा पेशाब करने के लिए एक मटका कोठरी में रहता। रात के बारह घंटों में कोई शौच न कर पाता था। यदि किसी को शौच लगता तो उसे डाक्टर से कहकर बारी से आज्ञा लेनी पड़ती। उस पर भी यदि कोई बन्दी कमरे में ही शौच कर देता तो उसे तीन-चार दिन तक दिन-भर खड़े रहने की सजा दी जाती। उस हालत में सबेरे छः से दस और दोपहर को बारह से पाँच बजे तक हथकड़ी में खड़ा होना पड़ता और उस समय शौच तो क्या पेशाब पर प्रतिबन्ध होता।

कालापानी की सजा कोई साधारण सजा नहीं होती थी। कितने ही कैदी उस सजा से घबराकर आत्महत्या कर लेते थे, तो वहाँ की खराब आबोहवा व तकलीफों के चलते कई लोग बीच में ही दम तोड़ देते थे। अरविन्द घोष, वीरेन्द्र घोष, आशुतोष लाहिड़ी, पृथ्वी सिंह, भाई परमानन्द और पंडित परमानन्द झांसीवाले जैसे अनेक क्रान्तिकारियों को अंडमान में कालापानी की सजा दी गई। अलीपुर षड्यंत्र (1908) के मामले में 1909 में बरिन घोष, उल्लास्कर दत्त, उपेन्द्र नाथ बनर्जी व हेमचन्द्र दास सहित 34 क्रान्तिकारियों को, नासिक षड्यंत्र मामले में 7 अप्रैल 1911 को सावरकर को, गदर पार्टी से जुड़े क्रान्तिकारियों को 1914 में, लाहौर षड्यंत्र मामले में 1930 में बटुकेश्वर दत्त, जयदेव कपूर, शिव वर्मा, महावीर सिंह, विजय कुमार सिन्हा, कमलनाथ तिवारी, डॉ. गया प्रसाद को, चटगाँव विद्रोह (1930) में 1934 में अम्बिका चक्रवर्ती, अनन्त सिंह, गणेश घोष, आनन्द गुप्ता, लोकनाथ बल, फकीर सेन, रणधीर दास गुप्ता इत्यादि को आजीवन करावास सहित अंडमान में कालापानी की सजा दी गई। काकोरी काण्ड में शचीन्द्र नाथ सान्याल व शचीन्द्र बख्शी को कालापानी की सजा हुई तो योगेश चन्द्र चटर्जी, मुकुन्दी लालजी, गोविन्दचरण कार, राजकुमार सिंह व रामकृष्ण खत्री, जिन्हें काकोरी काण्ड में 10 साल की सजा हुई थी, को भी बढ़ाकर कालापानी में तब्दील कर दिया गया। गौरतलब है कि चीन और रूस की सफल क्रान्ति पश्चात भारत में इससे प्रेरणा लेकर तमाम आन्दोलन आरम्भ हुए। बंगाल में बंगाल रिवोल्यूशनरी पार्टी, अनुशीलन समिति, युगान्तर, तो उत्तर प्रदेश व पंजाब में नौजवान भारत सभा व हिन्दुस्तान रिपब्लिकन पार्टी जैसे क्रान्तिकारी संगठनों से जुड़े तमाम लोगों को 1921 के बाद काला पानी की सजा देकर अण्डमान भेजा गया।

सावरकर ने अपनी आत्मकथा में कालापानी के दिनों का वर्णन किया है, जिन्हें पढ़कर अहसास होता है कि आजादी के दीवाने गुलामी के दंश को खत्म करने हेतु किस हद तक यातनायें और कष्ट झेलते रहे। सावरकर ने अपनी आत्मकथा में लिखा है-''हमें तेल का कोल्हू चलाने का काम सौंपा गया, जो बैल के ही योग्य काम माना जाता है। जेल में सबसे कठिन काम कोल्हू चलाना है-सबेरे उठते ही लंगोटी पहनकर कमरे में बन्द होना तथा शाम तक कोल्हू का डंडा हाथ से घुमाते रहना। कोल्हू में घानी के पड़ते ही वह इतना भारी चलने लगता कि हृष्ट-पुष्ट शरीर के व्यक्ति भी उसकी बीस फेरियां करके रोने लग जाते। राजनीतिक कैदियों का स्वास्थ्य खराब हो या अच्छा, ये सब सख्त काम उन्हें दिये ही जाते थे। सबेरे से दस बजे तक लगातार चक्कर लगाने से साँस लेना भारी हो जाता और प्रायः सभी को चक्कर आ जाता और कुछ तो बेहोश भी हो जाते। दोपहर को भोजन आते ही दरवाजा खुल पड़ता, कैदी थाली भर लेता और अन्दर जाता कि दरवाजा बन्द। यदि इस बीच कोई अभागा कैदी यह कोशिश करता कि हाथ-पैर धो ले या बदन पर थोड़ी धूप लगा ले तो नंबरदार का पारा चढ़ जाता था। वह माँ-बहन की सैकड़ों गालियाँ देना शुरू कर देता। हाथ धोने को पानी नहीं मिलता था। कोल्हू चलाते-चलाते पसीने से तर हो जाते, प्यास लग आती और पानी माँगते तो पानी वाला पानी नहीं देता था। नंबरदार को यदि कहीं से इन्तजाम कर एकाध चुटकी तम्बाकू की दे दी तो अच्छी बात, नहीं तो उल्टी शिकायत कर दी जाती कि ये पानी बेकार बहाते हैं। पानी बेकार खर्च करना जेल में एक भारी जुर्म है। यदि किसी ने जमादार से शिकायत की तो वह गुस्से में कह उठा-'दो कटोरी का हुक्म है, तुम तो तीन पी गया, और पानी क्या तुम्हारे बाप के यहाँ से आयेगा।' नहाने की तो कल्पना ही अपराध था। हाँ, वर्षा हो तो भले ही नहा लो। भोजन की स्थिति तो और भी बुरी थी। बाजरे की बेकार-सी रोटी, न मालूम कैसी खट्टी तरकारी कि मुँह में रखना भी कठिन। रोटी का एक टुकड़ा काटा, थोड़ा चबाया, ऊपर घूँट-भर पानी पिया और उसी के साथ कौर निगल लिया। बहुत से ऐसा करते कि मुँह में कौर रख लिया और कोल्हू में चलने लगे। कोल्हू पेरते-पेरते, थालियों में पसीना टपकाते-टपकाते उसी कौर को उठा-उठाकर मुँह में भरकर निगलते-निगलते ही कोल्हू पेरते रहते।''

काला पानी की अमानवीय यातनाओं के बीच भी ये बन्दी सेनानी अपना उल्लास नहीं खोते थे। 16 वर्षीय किशोर बेनी गोपाल मुखर्जी तो अण्डमान आते ही जेल में चल रही भूख हड़ताल में शामिल हो गया। क्रान्तिकारी पत्र 'स्वराज' के सम्पादक नन्द गोपाल चोपड़ा ने तो अपनी हाजिरजवाबी से वहाँ के स्टाफ को खूब परेशान किया। उन्होंने कोल्हू में चलने से इनकार कर दिया और जब जोर-जबरदस्ती की गई तो खूब धीमे-धीमे चलते रहे। नतीजन खाने के समय तक अपने हिस्से का एक तिहाई तेल ही निकाल पाये। जब खाने की बारी आयी तो जमादार ने उनसे जल्दी खाकर काम में जुटने को कहा तो मुस्कराते हुये उन्होंने जमादार को जल्दी-जल्दी खाने से होने वाले पेट के विकारों पर लम्बा भाषण दे डाला। खीझकर जमादार जेलर को बुला लाया और जब जेलर ने उन्हें कोड़े लगाने की धमकी दी तो सम्पादक जी ने बड़ी मासूमियत से जेलर साहब को याद दिलाया कि खाने का समय 10 से 12 बजे तक नियत है और उन्हें इस सम्बन्ध में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। खाना खाकर नन्द गोपाल चोपड़ा ने एक लम्बी नींद ली। अनुशासन भंग के कारण जेलर ने उन्हें एकान्तवास की सजा दी, पर इसी बहाने वे कोल्हू में जुतने से बच गये। देशभक्ति के जज्बे से भरे इन देशभक्तों ने सेल्युलर जेल की दीवारों पर भी अपने शब्द चित्र अंकित किये हैं।

सेल्युलर जेल में कैद राजनैतिक बन्दियों ने 12 मई 1933 को यातनाओं के विरोध में प्रथम बार सामूहिक रूप से आमरण अनशन शुरू कर दिया। उन्होंने उन सभी सुविधाओं, मसलन-अखबार, पत्र-पत्रिकायें और कोठरियों में बिजली इत्यादि की व्यवस्था की माँग की, जो भारत की अन्य जेलों में दी जा रही थीं। पंजाब का जेलर वाकर, जो अपनी क्रूरता के लिए जाना जाता था, इस भूख हड़ताल को तोड़ने के लिए तत्काल बुलवाया गया। वाकर ने बन्दी सेनानियों पर दबाव डालने के लिये उन्हें पानी से भी वंचित कर दिया। इस दौरान उत्तर प्रदेश के महावीर सिंह और बंगाल के मोहन किशोर, नामोदास और मोहित मित्र की मृत्यु हो गयी। मामला ज्यादा तूल न पकड़े, इसलिये उनकी लाशों को पत्थर से बाँधकर रातों-रात समुद्र में फिंकवा दिया गया। इसके बावजूद बन्दी सेनानी अडिग रहे और पूरे 46 दिनों तक यह हड़ताल चली। अन्ततः, अंग्रेजी सरकार को बन्दी सेनानियों की माँगों को मानना पड़ा व तब जाकर 26 जून 1933 को भूख हड़ताल खत्म हुई और उन्हें एक-दूसरे से मिलने जुलने की अनुमति प्रदान की गई।

इस बीच द्वितीय विश्व युद्ध की आहट सुनायी देने लगी थी। 26 अप्रैल 1935 को 39 बन्दियों का एक दल गठित हुआ जिसकी संख्या बाद में बढ़कर 200 तक हो गयी। सेल्युलर जेल के राजनैतिक बंदियों ने 9 जुलाई 1937 को अंग्रेजी सरकार को एक याचिका भेजकर समस्त राजनैतिक कैदियों को अबिलम्ब रिहा कर स्वदेश वापसी की माँग की। यही नहीं, अपनी माँग मनवाने के लिये बन्दी सेनानियों ने 25 जुलाई 1937 को सामूहिक रूप से भूख हड़ताल भी आरम्भ कर दी। अंडमान में कैद इन बन्दियों के समर्थन में भारत में भी देशव्यापी प्रदर्शन आरम्भ हो गये तथा अन्य बन्दीगृहों में कैद राजनैतिक बन्दियों ने भी उनके समर्थन में भूख हड़ताल आरम्भ कर दी। उस समय चुनाव पश्चात् तमाम प्रान्तों में कांग्रेस मंत्रिमण्डल गठित था और ज्यों-ज्यों इस हड़ताल का दायरा बढ़ता गया तो सारे राष्ट्रीय नेता चिन्तित हो उठे। गाँधीजी, नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, रवीन्द्र नाथ टैगोर इत्यादि ने बंदियों से भूख हड़ताल खत्म करने का आग्रह किया। 28 अगस्त 1937 को इन नेताओं द्वारा तार भेजे गये कि -''सम्पूर्ण राष्ट्र आप लोगों से भूख हड़ताल खत्म करने की अपील करता है तथा आपको आश्वस्त करता है कि आपकी माँगों को पूरा कराया जायेगा।'' अन्ततः 36 दिन की भूख हड़ताल और भारत में अंग्रेजी सरकार पर राष्ट्रीय नेताओं के पड़ते दबाव से अंग्रेजी सरकार झुकने को मजबूर हो गयी व बंदियों की सभी माँगों को मान लिया। काला पानी की सजा झेल रहे बन्दी सेनानियों और भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के राष्ट्रीय नेताओं हेतु यह एक बड़ी विजय थी। इसके पश्चात सितम्बर 1937 से अंडमान की सेल्युलर जेल से बन्दी सेनानियों के वापस आने का सिलसिला आरम्भ हुआ। उस समय कुल 385 बन्दी सेनानियों में से बंगाल के 339, बिहार के 19, उत्तर प्रदेश के 11, असम से 5, पंजाब से 3 एवं दिल्ली व मद्रास से 2-2 स्वतंत्रता सेनानी थे। 1937 के बाद राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाले किसी भी सेनानी को काले पानी का मुँह नहीं देखना पड़ा और सेल्युलर जेल एक इतिहास बन गया।

कहा जाता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 23 मार्च 1942 को जब अंडमान जापानियों के कब्जे में था, उस दौरान वहाँ के सभी दस्तावेज जला दिये गये। यह एक रहस्य ही है कि यह किसके निर्देश पर व क्यों जलाया गया? 1943 में आजाद हिन्द फौज ने पोर्टब्लेयर पर पदार्पण किया और सुभाषचन्द्र बोस ने 30 दिसम्बर 1943 को वहाँ तिरंगा झण्डा फहरा दिया और सेल्युलर जेल में यातना पा रहे क्रान्तिकारियों की तुलना फ्रांसीसी क्रान्ति के सजायाफ्ता कैदियों से की। 1945 में अंग्रेजों ने अंडमान व निकोबार द्वीप समूहों पर पुनः कब्जा कर लिया। 1906 में निर्मित सेल्यूलर जेल की शताब्दी पर 10 मार्च 2006 को अंडमान व निकोबार द्वीप पर सेल्यूलर जेल का शताब्दी उत्सव मनाया गया, जिसमें काला पानी की सजा भुगत चुके तीन जीवित बन्दी सेनानी-अधीर नाग, कार्तिक सरकार व विमल भौमिक भी सम्मिलित हुये। कार्तिक सरकार ने इस अवसर पर इच्छा व्यक्त की कि देश के हरेक व्यक्ति विशेषकर बच्चों को सेल्युलर जेल के दर्शन करने चाहिए ताकि आजादी की कीमत का अहसास उन्हें भी हो सके। इस शताब्दी उत्सव में शामिल अधिकतर लोगों ने सेल्युलर जेल को एक ऐसा तीर्थ माना जो मंदिर-मस्जिद-गुरूद्वारे से भी ज्यादा महान व विलक्षण हैं। सेलुलर जेल, पोर्टब्लेयर 10 मार्च, 2024 को अपनी स्थापना के 118 वर्ष पूरे कर रहा है। बदलते वक्त के साथ सेल्युलर जेल इतिहास की चीज बन गया है पर क्रान्तिकारियों के संघर्ष, बलिदान एवं यातनाओं का साक्षी यह स्थल आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश कर 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहे देशवासियों को हमेशा याद दिलाता रहेगा कि स्वतंत्रता यूँ ही नहीं मिली है, बल्कि इसके पीछे क्रान्तिकारियों के संघर्ष, त्याग व बलिदान की गाथा है।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

भारतीय संस्कृति की जड़ो को खोखला करती बॉलीवुड व ओ टी टी (OTT) फिल्में

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

भारतीय संस्कृति में मानव जीवन यात्रा को चार आश्रमो में विभक्त किया है। जो क्रमशः – ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, व सन्यास इन नामों से जाने जाते है। जिनमे जीवन के पहले 25 वर्ष शिक्षण के लिए सर्वोत्तम व ब्रह्मचर्य के नाम से जाने जाते थे। यह विद्यार्थी जीवन सबसे महत्व पूर्ण समय माना जाता था। इसी समय विद्यार्थियों को समस्त वैदिक ज्ञान, अन्य विषयों का सम्यक ज्ञान, धर्म सम्यक ज्ञान, व्यवहारिक ज्ञान देने ले साथ–साथ उनके आंतरिक गुणों के विकास के साथ चारित्रिक उत्थान पर पूर्ण बल दिया जाता था ताकि वे सभी विद्याओं में निपुण बनकर अपने सुदृढ चारित्रिक बल की आभा से चमकते सुवर्ण की भांति तेजस्वी बनकर अपने राष्ट्र के विकास में सहयोगी बने।

हर काल खंड में विद्याथियों के चारित्रिक बल पर विशेष ध्यान दिया जाता था। क्योंकि किसी राष्ट्र को समाप्त करने के लिए हथियारों की आवश्यकता नही पड़ती उसकी युवा पीढ़ी यदि व्यसनी हो जाये तो कोई भी राष्ट्र स्वतः समाप्त हो जाता है। इसलिए युवाओ को प्रारम्भ से ही धर्म की शिक्षा दी जाती थी। अंधकार युक्त स्थान पर यदि एक दीपक प्रज्जवलित कर दिया जाए तो वह छोटा सा दीपक अंधकार को समूल नष्ट करता है इसी प्रकार धर्म हमारे जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। उचित अनुचित करणीय अकरणीय का भेद बताता है। प्राचीन काल में समस्त जीवन की पूर्ण शिक्षा गुरुकुलो द्वारा दी जाती थी।

लेकिन वर्तमान में स्कूलों में दी जाने वाली शिक्षा में नैतिक शिक्षा का नितांत अभाव है ऊपर से घर घर मे मौजूद कम्प्यूटर, मोबाईल फोन, गूगल आदि के कारण बच्चे उम्र से पहले समस्त जानकारी लेकर परिपक्व हो रहे है। उनकी मासूमियत न जाने कहाँ गायब हो गयी है। इसी कारण उनकी शिक्षा में अरुचि व दूषित विचारों से मन चलायमान हो जाता है। ऊपर से अधिकांश वेब सीरीज, ओ टी टी मूवी व बश्वलीवुड फिल्मों में मनोरंजन के नाम पर परोसे गए अश्लील दृश्य, हिंसा, मारधाड़, चोरी डकैती, अपराध आदि अधिकता विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति से दूर करके तमस की ओर ले जा रही है। यही सब मिलकर आपराधिक प्रवृतियों को को जन्म देता है ।

वर्तमान परिपेक्ष्य मे युवावर्ग के लिए फिल्मों के नायक – नायिका मानो महापुरुष ही नही बल्कि भगवान स्वरूप हो गए है। गाली गलौच लूटपाट, हत्या, खून खराबा धोखाधड़ी, बड़ो का अपमान, महिलाओं से दुर्व्यवहार, बॉलीवुड की फिल्मों का गिरता स्तर, फूहड़ हास्य, असभ्य शब्दावली गाली गलौच, अभद्र टिप्पणी, आदि से भरपूर फिल्में वास्तव में चिंता का विषय है इस प्रकार की फिल्में भारतीय संस्कृति पर सीधा कुठाराघात है। क्योंकि युवापीढ़ी के आदर्श नायक नायिकाएं जिनके बोलने, चलने, कपड़ों, हेयरस्टाइल का युवापीढ़ी अंधानुकरण करती है कुछ नायक नायिकाएं धन व प्रसिद्धि के लिए निम्न स्तर की फिल्में व अभद्र विज्ञापन करते है।

कुछ पान मसाला गुटका तम्बाकू का विज्ञापन करते है जो युवाओं को दिग्भ्रमित करने के लिए पर्याप्त है। क्योंकि किशोरावस्था में युवाओं को अच्छे बुरे का पूर्ण ज्ञान न होने के कारण नकारात्मक प्रवर्तियाँ उन्हें आकृष्ट करती है। और जब तक उन्हें समझ आता है तब तक बहुत देर हो जाती है युवाओं को व्यसन अपनी गिरफ्त में पूर्ण रूपेण ले लेते है। अधिकांश फिल्मों, वेब, सीरीज में स्कूली बच्चों के प्रेम प्रसंगों को दर्शाया जा रहा है ताकि बच्चे अमर्यादित होकर पाश्चात्य संस्कृति में आकंठ डूब जाए

हमे इस विषय को गंभीरता से लेते हुए इस समस्या के निराकरण की दिशा ठोस कदम उठाने होंगे। एक पुरानी कहावत है– ***प्यास लगने पर कुआँ नही खोदा जाता।***

यदि हमे अपने देश के कर्ण धार युवाओं के चरित्र को सुदृढ बनाना है, तो उनके मनोमस्तिष्क को विषाक्त होने से बचाना होगा। क्योंकि जैसा हम देखते है उसी का चिंतन करते है वैसा ही हम बनने लगते है। समाज मे तामसिक प्रवत्तियों को बढ़ावा देने वाले विषयो से युवाओं को रोकना होगा। जब एक वायरस शरीर मे प्रवेश करता है या हम दूषित भोजन ग्रहण करते है तो हम पूर्णतः अस्वस्थ हो जाते है। दुर्बल हो जाते है। अब कल्पना करिए जब छोटे बच्चे या युवा प्रतिदिन मारधाड़, हिंसा, हत्या, चोरी, नशे, शराब में डूबे लोगो के अभद्र व्यवहार को देखेंगे तो उनके मन को भी विषाक्त होते देर नही लगेगी।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में सुंदर सामाजिक व्यवस्था के लिए कल्याकारी विषय देखने, सुनने व बोलने के निर्देश दिए है –

ॐ भद्रम कर्णेभिः श्रुणुयाम देवा।

भद्रम पश्येमाक्ष भिरयजत्रा।

वेदों के इस मंत्र से स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन काल मे सभी को बाल्यकाल से ही अपनी ज्ञानेन्द्रियो को केवल कल्याणकारी विषयो में ही प्रवृत्त होने के निर्देश दिए गए है। ताकि युवा पीढ़ी निरंतर सन्मार्ग की ओर अग्रसर हो। बाल्यावस्था के दिनों में जो शुभ ज्ञान स्कूल या घर मे दिया जाता है कोई भी उसे आजीवन नही भूलता। मुद्दते गुजर जाने पर भी मेरे स्कूल की नैतिक शिक्षा की प्रार्थना आज भी मेरे कानों में गूंजती है –

वह शक्ति हमे दो दयानिधे
कर्तव्य मार्ग पर जुट जाएं
जो है अटके भूले भटके
उनको तारे खुद तर जाए।

पहले फिल्में सेंसर की जाती थी पर मुझे आश्चर्य है कि आज कल सेंसर बोर्ड आखिर कहां पर है? मुझे लगता है आज युवाओ का नैतिक पतन कराने की मानो होड़ लगी है। हमे अपने बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ना होगा। उचित अनुचित का ज्ञान देना होगा अपने देश के भावी कर्णधारों को समझाना होगा –

हम लाये है तूफान से किश्ती निकल के
इस देश को रखना बच्चों संभाल के

फिल्म निर्माताओ से भी आग्रह है कि सकारात्मक प्रेरक, ज्ञानवर्धक, महापुरुषों के उदात्त चरित्र पर फिल्में बनाकर स्वस्थ समाज के निर्माण में अपना योगदान दे।

मेरे कहने का यही अभिप्राय है कि फिल्म निर्माताओ को अपनी सामाजिक जिम्मेदारी समझनी चाहिये उच्च कोटि की और युवाओं को जीवन मूल्यों से जोड़ने वाली देशभक्ति की भावना को प्रबल बनाने वाली हमारे पूर्वजों के जीवन वृत पर आधारित प्रेरक फिल्में बनानी चाहिए। इस विषय मे फिल्म निर्माताओ, संबंधित अधिकारियों से यही अनुरोध है कि समाज मे सद्गुण, सौहार्द्र बढ़ाने वाली, युवाओं के चरित्र निर्माण में सहायक फिल्में बनाकर राष्ट्र निर्माण में अपनी विशेष भूमिका का निर्वहन करे।

नारी ही परिवार और
समाज की केंद्रबिंदु है।

-स्वामी विवेकानंद

मेरा गाँव

दोहे

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

गाँव बहुत नेहिल लगे, लगता नित अभिराम।
सब कुछ प्यारा है वहाँ, सृष्टि–चक्र अविराम।।

सुंदरता है गाँव में, फलता है मधुमास।
जी भर देखो जो इसे, तो हर गम का नाश।।

सुंदर हैं नदियाँ सभी, भाता पर्वतराज।
वन–उपवन मोहित करें, दिल खुश होता आज।।

हरियाली है गाँव में, गूँजें मंगलगान।
प्रकृति सदा ही कर रही, गाँवों का यशगान।।

खेतों में धन–धान्य है, लगते मस्त किसान।
हैं लहरातीं बालियाँ, करें सुरक्षित शान।।

कभी शीत,आतप कभी, पावस का है दौर।
नयन खोल देखो जरा, करो प्रकृति पर गौर।।

खग चहकें,दौड़ें हिरण, कूके कोयल,मोर।
प्रकृति–शिल्प मन–मोहता, किंचित भी ना शोर।।

जीवन हर्षाने लगा, पा मीठा अहसास।
प्रकृति–प्रांगण में सदा, स्वर्गिक सुख–आभास।।

जीवन को नित दे रही, प्रकृति सतत उल्लास।
हर पल ऐसा लग रहा, गाँव सदा ही खास।।

सखि! वसंत ऋतु आए

डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

बौरे आमों के वृक्षों पर, भ्रमरावलि मंडराए,
गुनगुन गुनगुन गाए, मधु मधुमास सुहाए,
ऋतुपति चहुंदिशि छाए,
सखि! वसंत ऋतु आए।।
फूली पीलीसरसों में अब मधुपराग भर आए,
सरसिज सर सरसाये कमल नयन हर्षाए,
जन मन मुदित बनाए,
सखि! वसंत ऋतु आए।।
दिवससुखद सुखकारीरजनी रतिपति मदन बढ़ाए,
चंदा मन अति भाए, स्नेह सुधा बरसाए,
विरह की प्यास बुझाए,
सखि! वसंत ऋतु आए।।
कोकीकोक भए निशि संयुत, मधुमधुरीति सिखाए,
पिया मिलन सुख पाए, मन संताप मिटाए,
मुख सरोज खिल जाए,
सखि! वसंत ऋतु आए।।
आम्रनिकुंजो में कोयलिया मधुरिम तान सुनाए,
पुष्पित पल्लव शोभित तरुवर हरे भरे मन भाए,
तन मन राग जगाए,
सखि! वसंत ऋतु आए।।
फूले काश और वनराजी उपवन शोभा पाए,
खगकुल कलरव गाए, कुसुमाकर तुम आए,
मंजुल मधुगीत सुभाए,
सखि! वसंत ऋतु आए।।
दिक्दिगंत पुष्पों से वासित मलयज वायु बहाए,
गांव खेतखलिहान नगर सब सौरभ से भर जाए,
हिय पुलकित हो जाए,
सखि! वसंत ऋतु आए।।

ईमानदारी स्वयं में ही एक बहुत बड़ा पुरस्कार है

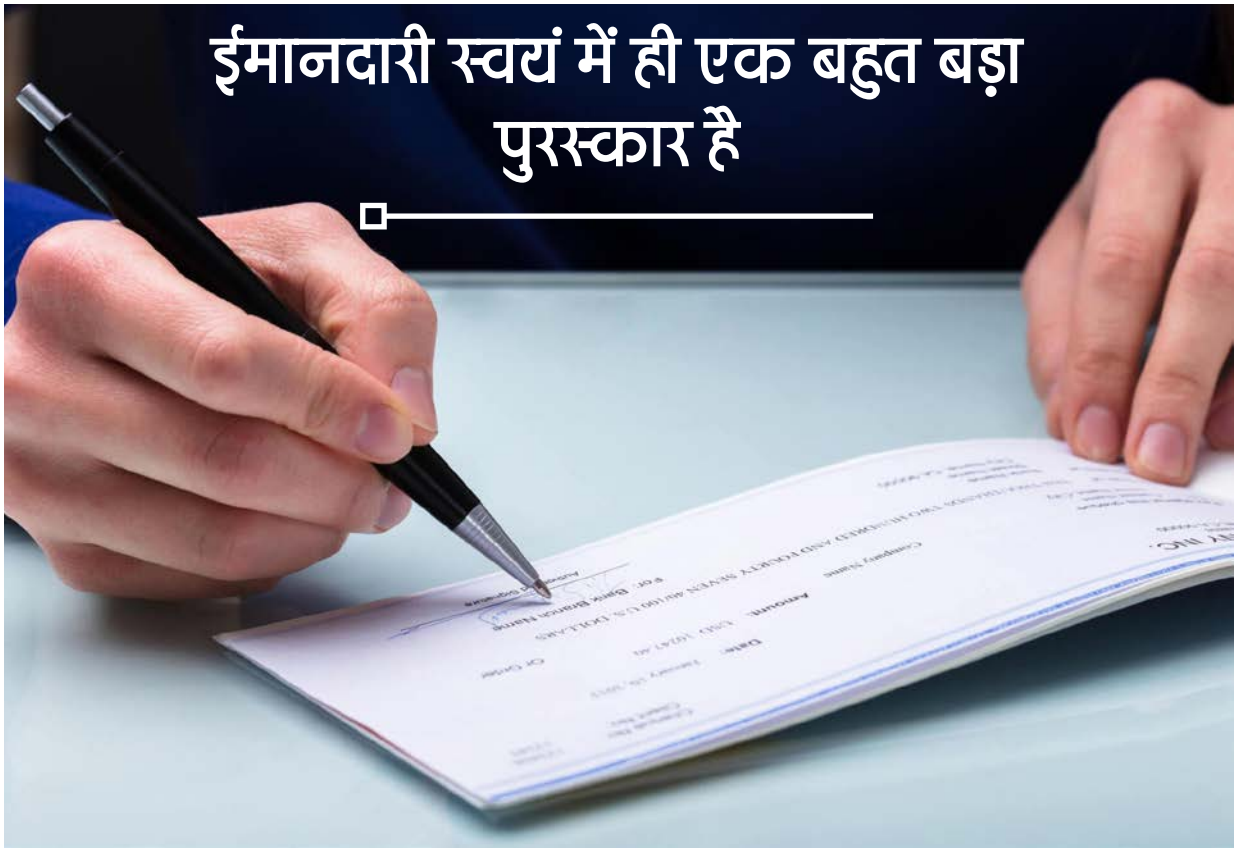

सीताराम गुप्ता
स्वतंत्र लेखन व विचारक
पीतम पुरा, दिल्ली

सुबह दस सवा दस बजे के करीब जगमोहन वर्मा के बेटे अंकित का फोन आया। अंकित ने कहा कि पापा मुझे डेढ़ लाख रुपए चाहिएं और आज ही। क्या आप रुपयों का प्रबंध कर सकोगे? अंकित ने कुछ दिन पहले ही अपना एक छोटा–सा व्यवसाय शुरू किया था। जगमोहन वर्मा जानते हैं कि अंकित को सचमुच पैसों की जरूरत होगी और वो कभी एक पैसा भी व्यर्थ में खर्च नहीं करता इसलिए मना करने का तो प्रश्न ही नहीं था। वैसे भी उनके पास इतने पैसे थे। घर में तो उनके पास सिर्फ दस हजार रुपए ही थे लेकिन बैंक में पर्याप्त पैसे थे। उन्होंने अंकित से कहा कि दोपहर तक पैसों की व्यवस्था हो जाएगी आकर ले जाना। जगमोहन वर्मा ने अपनी चेकबुक व पासबुक निकाली और बैंक की ओर रवाना हो गए। बैंक में उस दिन कोई विशेष भीड़–भाड़ नहीं थी।

जगमोहन वर्मा ने बैंक पहुँचते ही अपेक्षित राशि का चेक काटा, काउण्टर पर पासबुक के साथ चेक देकर टोकन लिया और कैश काउण्टर पर जा पहुँचे। संयोग से उस समय कैश काउण्टर पर भी अन्य कोई कस्टमर नहीं था। कैशियर अपने मोबाइल पर किसी से बातें कर रहा था। उसी समय चेक भी पास होकर कैशियर के पास आ पहुँचा। कैशियर ने काउण्टर पर खड़े जगमोहन वर्मा से टोकन माँगा, चेक पर उनके सिग्नेचर करवाए और मोबाइल पर बातें करते–करते ही उन्हें पेमेंट कर दी। जगमोहन वर्मा बाहर से ही कैशियर को नोटों की गड्डियाँ उठाकर गिनते हुए देख रहे थे। जैसे ही कैशियर ने पेमेंट दी जगमोहन वर्मा ने चुपचाप उसे अपने बैग में रखा और चल दिए। हड़बड़ी में उन्हें काउण्टर से पासबुक लेने का ध्यान भी नहीं रहा।

जगमोहन वर्मा ने एक लाख चालीस हजार रुपए निकलवाए थे। वो देख रहे थे कि कैशियर ने पहले हजार के नोटों की एक गड्डी उठाई, फिर पाँच सौ के नोटों की एक गड्डी उठाई

और अंत में हजार–हजार के दस नोट गिनकर पूरी रकम जगमोहन वर्मा को दे दी। उन्हें पता था कि कैशियर ने एक लाख चालीस हजार रुपए देने के बजाय एक लाख साठ हजार रुपए उन्हें दे दिए हैं लेकिन उन्होंने ये आभास कराते हुए कि उन्होंने पैसे गिने ही नहीं और कैशियर की ईमानदारी पर उन्हें पूरा भरोसा है चुपचाप पैसे रख लिए। अब भला इसमें उनका क्या दोष था? इसमें उनका कोई दोष था या नहीं लेकिन पैसे बैग में रखते ही फालतू पैसों को लेकर उनके मन में उधेड़–बुन शुरू हो गई।

एक बार जगमोहन वर्मा के मन में आया कि फालतू पैसे वापस लौटा दूँ लेकिन दूसरे ही पल उन्होंने सोचा कि जब मैं गलती से किसी को फालतू पेमेंट कर देता हूँ तो मुझे कौन लौटाने आता है? वैसे खूब जोर डालने पर भी उनके दिमाग में ऐसा कोई वाकिआ नहीं आया जब गलती से उन्होंने फालतू पेमेंट कर दी हो और फालतू पैसे वापस न मिले हों। हाँ, उन्हें याद आया कि इसी कैशियर ने कई बार उन्हें इतने गंदे नोट दिए हैं कि उन्हें चलाने में उनको बहुत मुश्किल हुई थी। इनकी गलतियों का खमियाजा हमें न जाने कितनी बार भुगतना पड़ा है एक आध बार ये खुद भी तो भुगतें। फिर इसकी गलती में मेरा क्या कसूर है? मैंने थोड़े ही कोई बेईमानी की है?

जगमोहन वर्मा जानते थे कि ये जो बीस हजार रुपए कैशियर ने ज़्यादा दे दिए हैं कैशियर को अपनी जेब से भरने पड़ेंगे लेकिन इसमें दोष उसी का है। कैश काउण्टर पर इतनी गफलत? काम के वक्त मोबाइल पर बातें करते रहेंगे। सरकारी समय का दुरुपयोग करते रहते हैं ये उसी की सजा है। ये भी तो भ्रष्टाचार का ही एक रूप है। दोषी को सजा मिलनी ही चाहिए। लेकिन यदि गलती से पैसे ज्यादा आ गए तो उन्हें न लौटाना भी तो गलती ही है। फालतू पैसे न लौटाने पर मुझे भी तो सजा मिल सकती है। लेकिन मैंने चोरी थोड़े ही की है, कोई गबन थोड़े ही किया है जो मुझे सजा मिले। वैसे भी दूसरों की गलती की सजा मुझे क्यों मिले? कई बार मन में आया कि पैसे लौटा दें लेकिन हर बार कोई न कोई बहाना या कोई न कोई वजह मिल जाती पैसे न लौटाने की।

हर बहाने के साथ उसकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। बिना चोरी किए चोर की सी हालत हो रही थी। तनाव बढ़ता ही जा रहा था। यदि सब कुछ ठीक है और मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है तो मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? अचानक जगमोहन वर्मा के दिमाग में एक बात आई। ऐसी घटनाएँ जीवन में रोज–रोज थोड़े ही होती हैं। हो सकता है कि ऐसी कोई भी घटना जीवन में दोबारा हो ही नहीं। माना कि बीस हजार रुपए का कैशियर पर भी शायद कोई खास असर न पड़े लेकिन जीवन में केवल एक इस घटना के लिए मैं पूरी उम्र अपराधबोध से दबा रहूँगा।

बार–बार मन में आता रहेगा कि तुम किसी की गलती से फायदा उठाने से नहीं चूकते और ऊपर से बेईमान न होने का ढोंग भी करते हो। क्या यही ईमानदारी है? उन्होंने बैग में से बीस हजार रुपए निकाले और जेब में डालकर बैंक की ओर चल दिए। उसकी बेचैनी और तनाव कम होने लगा था। वह हल्का और स्वस्थ अनुभव कर रहे थे। वो कोई बीमार थोड़े ही थे लेकिन उन्हें लग रहा था जैसे उन्हें किसी बीमारी से मुक्ति मिल गई हो। उनके चेहरे पर किसी जंग को जीतने जैसी प्रसन्नता व्याप्त हो गई थी।

जैसे ही जगमोहन वर्मा बैंक पहुँचे वहाँ कैशियर हिसाब न मिलने के कारण परेशान हो रहा था। जगमोहन वर्मा ने जाते ही बीस हजार रुपए कैशियर के हाथों में देते हुए कहा, ''भाई साहब मोबाइल पर ही मत चिपके रहा करो हर समय। इसी चक्कर में आपने मुझे बीस हजार रुपए फालतू दे दिए वही लौटाने आया हूँ।'' रुपए पाकर कैशियर ने चैन की सांस ली। उसने जगमोहन वर्मा का कई बार धन्यवाद किया और अपनी जेब से हजार रुपए का एक नोट निकालकर उन्हें देते हुए कहा, ''भाई साहब आपका बहुत–बहुत आभार! आज मेरी तरफ से बच्चों के लिए मिठाई ले जाना। प्लीज मना मत करना।'' ''भाई आभारी तो मैं हूँ आपका और आज मिठाई भी मैं ही आप सबको खिलाऊँगा, '' जगमोहन वर्मा ने कहा।

कैशियर ने पूछा, '' भाई आप किस बात का आभार प्रकट कर रहे हो और किस खुशी में मिठाई खिला रहे हो?'' जगमोहन वर्मा ने जवाब दिया, ''आभार इस बात का कि आपने मुझे आत्म–मूल्यांकन का अवसर प्रदान किया। आपसे ये गलती न होती तो न तो मैं द्वंद्व में फँसता और न ही उससे निकल कर अपनी लोभवृत्ति पर काबू पाता। यह बहुत मुश्किल काम था। घंटों के द्वंद्व के बाद ही मैं जीत पाया। दुर्लभ होते हैं जीवन में ऐसे अवसर। इस रूपांतरणकारी दुर्लभ अवसर को प्रदान करने के लिए आपका बारंबार आभार। आज आपकी गलती ने मेरे लिए सचमुच उत्प्रेरक तत्त्व की भूमिका निभाई है।''

तभी बैंक मैनेजर भी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने कहा, '' वर्मा साहब आप धन्य हैं! कहाँ तो वो लोग हैं जो अपनी ईमानदारी का पुरस्कार और प्रशंसा पाने का अवसर नही चूकना चाहते और कहाँ आप जो स्वयं ईमानदारी पर चलने के बाद भी औरों को पुरस्कृत कर रहे हो।'' ''मैनेजर साहब, ईमानदारी का कोई पुरस्कार नहीं होता। मैं तो यही अनुभव कर रहा हूँ कि ईमानदारी स्वयं में एक बहुत बड़ा पुरस्कार है। ऐसे अवसर भी जीवन में सौभाग्य से ही मिलते होंगे, '' ये कहकर जगमोहन वर्मा मिठाई मँगवाने के लिए अपनी जेब से पैसे निकालने लगे।

मैं किसी समाज की प्रगति उस समाज में महिलाओं द्वारा की गई प्रगति से आंकता हूं।

–बाबा साहेब भीम राव आम्बेडकर

08 मार्च पर विशेष

महाशिवरात्रि का महत्व

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

प्रत्येक वर्ष की फागुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष 2024 में 8 मार्च को महाशिवरात्रि मनाई जाएगी। महाशिवरात्रि पर सर्वार्थ सिद्धि योग, संध्या 5:00 बजे से अगले दिन सुबह 6:00 बजे तक है। जो लोग महाशिवरात्रि की निशिता पूजा करेंगे उनके लिए सर्वार्थ सिद्धि योग अत्यंत फलदाई है।

महाशिवरात्रि पर भगवान शिव को जो लिंग रूप में स्थित है, उसे पंचामृत से स्नान कराएं। इसके बाद केसर चंदन के त्रिपुंड बना कर शिवलिंग पर बेलपत्र, धतूरा, गन्ना, बेल, बेर आदि चढ़ाए जाते हैं। यदि मंदिर जाना संभव न हो तो घर पर ही अस्थाई शिवलिंग स्थापित कर के पूजा अर्चना की जा सकती है। शिवरात्रि की पूजा रात्रि में भी की जाती है। महाशिवरात्रि की पूजा स्नान ध्यान एवं व्रत उपवास के साथ की जाती है ।बहुत से भक्त गण शिवरात्रि पर भगवान शिव का रुद्र अभिषेक भी कराते हैं। यह पूजा जानकार आचार्य या पंडित से विधि पूर्वक कराई जाती है।

वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो भी महाशिवरात्रि की रात बेहद खास होती है। मान्यता है कि इस रात्रि में ग्रहों का उत्तरी गोलार्ध इस प्रकार अवस्थित होता है कि मनुष्य के भीतर की ऊर्जा प्राकृतिक रूप से ऊपर की ओर जाने लगती है। प्रकृति स्वयं मनुष्य को उसके आध्यात्मिक शिखर तक जाने में मदद करती है।

महाशिवरात्रि के धार्मिक महत्व की बात करें तो महाशिवरात्रि की रात को शिव और माता पार्वती के विवाह की रात मानी जाती है। इसी दिन शिव ने वैराग्य जीवन से गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया था। ऐसी मान्यता है कि जो भक्त इस रात्रि में जागरण करके, शिव पार्वती की पूजा आराधना करते हैं, उन पर भगवान शिव एवं माता पार्वती की विशेष कृपा रहती है।

एक मानता यह भी है कि शिव को प्रकृति पुरुष भी माना जाता है, इसलिए शिवरात्रि पर प्रकृति मनुष्य को परमात्मा से जोड़ती है। शिवरात्रि एवं महाशिवरात्रि में भी अंतर है। शिवरात्रि हर माह की अमावस्या से एक दिन पहले यानी कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाई जाती है। जबकि महाशिवरात्रि वर्ष में एक बार केवल फाल्गुन माह की कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को मनाई जाती है।

एक मान्यता ये भी है कि सृष्टि के प्रारम्भ में इसी दिन अर्धरात्रि के समय भगवान शिव निराकार से साकार रूप में ब्रह्म से रूद्र रूप में अवतरित हुए थे। इशांन संहिता में बताया गया है कि फागुन कृष्ण चतुर्दशी की रात आदि देव शिव करोड़ों सूर्यो के समान प्रभाव वाले लिंग रूप में प्रकट हुए थे ।

योगिक परम्परा में शिव को किसी देवता की तरह नहीं पूजा जाता, वरन उन्हें आदि गुरु माना जाता है। वह पहले गुरु हैं जिनसे ज्ञान उपजा था। ध्यान की अनेक सहस्त्राब्दियों के पश्चात एक दिन वे पूर्ण रूप से स्थिर हो गए, वही दिन महाशिवरात्रि का था। इसलिए योगिक साधक महाशिवरात्रि को स्थिरता की रात्रि के रूप में मनाते हैं।

महाशिवरात्रि एक अवसर और संभावना है, जब आप स्वयं को हर व्यक्ति के भीतर बसी असीम रिक्तता के अनुभव से जोड़ सकते हैं। जो कि सारे सृजन का एक स्रोत है। महाशिवरात्रि कुछ ग्रहण करने के लिए भी एक विशेष रात्रि है। इस रात्रि में कम से कम एक पल के लिए ही उस असीम विस्तार का अनुभव करें जिसे हम शिव कहते हैं। यह केवल एक नींद से जागते रहने की रात न होकर यह आपके ज्ञान चक्षु के जागरण जागृत होने की रात है। ये मानसिक चेतना की जागरूकता भरी रात है।

महाशिवरात्रि पर्व मनाने के पीछे अनेक मान्यताएं हैं। शिव पुराण में लिखा है कि इसी दिन भगवान शिव ने सृष्टि को बचाने के लिए हलाहल यानी विष को ग्रहण के पूरी सृष्टि को भयंकर विष से मुक्त कराया था । इस विष के प्रभाव से भगवान शिव ने सुंदर नृत्य किया था। जिसे भक्त जनों एवं शिव गणों ने भगवान शिव की पूजा आराधना में उपयोगी माना और रात्रि जागरण की प्रथा में इसी नृत्य का उपयोग करने लगे।

शिवरात्रि के दिन भगवान शिव की आराधना के लिए व्यक्ति को ऊर्जा कुंज के साथ सीधे बैठना पड़ता है, जिससे रीढ़ की हड्डी मजबूत होती है और व्यक्ति एक सुपर नेचुरल पावर का एहसास महसूस करते हैं। इसी शक्ति से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास भी होता है।

सत्य ही शिव है और शिव ही सुंदर है। तभी तो भगवान आशुतोष को सत्यम शिवम सुंदरम कहा जाता है। हमारे धर्म शास्त्रों में महाशिवरात्रि को मोक्ष प्रदान करने वाला व्रत कहा गया है। इस व्रत को रखने से साधक के सभी दुखों पीड़ाओं का अंत तो होता ही है सभी मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं।

हिंदू धर्म शास्त्रों में प्रदोष काल यानि सूर्यास्त के बाद दो घंटे चौबिस मिनट की अवधि प्रदोष काल कहलाती है। इसी समय भगवान शिव प्रसन्न मुद्रा में नृत्य करते हैं, और इसी समय शिव पार्वती का विवाह भी हुआ था। अतएव प्रदोष काल में शिव पूजा और रात्रि जागरण करना विशेष फलदाई माना गया है। सनातन धर्म में द्वादश ज्योतिर्लिंग है जिनका प्रादुर्भाव भी प्रदोष काल में एवं महाशिवरात्रि तिथि में ही हुआ था। सभी सनातन धर्मी इस त्यौहार का विशेष उत्साह एवं आस्था से मनाते हैं।

संदर्भ –
1. ईशा साधु गुरु.कॉम
2. इजी हिन्दी.कॉम
3. ए बी पी न्यूज.कॉम

शिवरात्रि पर जो व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से शिव लिंग पर जल अर्पण के साथ ये आठ आंतरिक प्रसन्न भाव से पुष्प 1. अहिंसा, 2. इंद्रिय निग्रह 3. प्राणियो पर दया, 4. क्षमा, 5. शांति, 6. मन का निग्रह, 7. ध्यान, 8. सत्य । अर्पित करता है वह शिव को प्रिय हो जाता है। इस लोक में उसका कोई भी अहित नहीं कर सकता। वह सर्वत्र प्रसन्न रहता है।

अहमियत (लघुकथा)

दया शर्मा
स्वतंत्र लेखन
शिलांग, मेघालय

Listen Vasuda I am going to market, Can I get u something? अम्बर ने घर से बाहर निकलते हुए वसुधा से पूछा।

'आप जानते हैं मुझे बेवजह अंग्रेजी बोलने से चिढ़ है फिर भी ..वसुधा कुछ कहते कहते चुप हो गई ।

हाँ, हाँ तुम रहो गंवार की गंवार। इतने बड़े नामी स्कूल में पढ़ाने के बाद भी पता नही क्यों तुम्हें इंग्लिश से इतनी चिढ़ है? ऐसा ही रहा तो जिंदगी में कभी कुछ नही कर पाओगी।' कहते कहते अम्बर घर से बाहर निकल गया।

अम्बर की बातों ने वसुधा को अन्दर तक दुखी कर दिया सिर्फ आज की बात नही वह उसे जब तब अंग्रेजी न बोलने की वजह से ताने देता रहता है वह जानी मानी हिन्दी की अध्यापिका है। ऐसा नही कि वह अंग्रेजी नही जानती, इसका उपयोग तब करती है जहां इसकी जरूरत हो। अम्बर ने उसकी किसी भी अच्छी बात को लेकर उसे कभी अहमियत नही दी और न ही उसके किसी काम की सराहना की। ज्यादातर पार्टियों में भी वह अकेले जाना पसन्द करता है। उसके मन में ये सब विचार उठ ही रहे थे कि कॉल बेल की आवाज से उसकी तंद्रा भंग हो गई। दरवाजा खोला तो सामने अम्बर को पाया और ठीक उसके पीछे उसकी सखी और सहपाठी प्रिया खड़ी थी जो कि विद्यालय कमेटी की सदस्य भी थी। प्रिया अन्दर आते ही बोली 'Congratulations वसुधा!'

भई किस बात की बधाई दे रही हो हमें भी तो पता चले। 'वसुधा ने प्रिया से पूछा।' जानती हो इस बार वार्षिक उत्सव के दौरान तुम्हें प्रधानाध्यापिका बनाने की घोषणा की जायेगी, उस दौरान शहर के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहेंगे।'

'Wow! Excellent! तब तो मैं भी अवश्य जाना चाहूँगा।'

अम्बर ने अपनी खुशी जाहिर की। वसुधा अवाक हो अम्बर को देख कर सोच रही थी कि वह उसके लिए खुश हो रहा है या गणमान्य व्यक्तियों से मिलने के लिए।

गीत– मैं खिलौना हूँ उसका

डॉ. निशा नंदिनी भारतीय
तिनसुकिया, असम

मैं खिलौना हूँ उसका
खेल रहा वो मुझसे खेल।
रात–दिन नचा–नचा कर
देख रहा जीवन की रेल।

एक मुसाफिर आया जग में
धन पर लगा हाथ सेंकने।
भूल कर वो कर्म गति को
भाग्य को फिर लगा कोसने।
दुख आने पर रोया गया
कर्म योग को समझ न पाया।

मैं खिलौना हूँ उसका
खेल रहा वो मुझसे खेल।
रात–दिन नचा–नचा कर
देख रहा जीवन की रेल।

जिस देह का मोह है तुझको
वो काया तो नश्वर है।
आत्मा के संस्कार की
पूंजी शाश्वत उज्ज्वल है।
ढेला ढेला जमा रहा तू
ज्ञान योग को समझ न पाया।

मैं खिलौना हूँ उसका
खेल रहा वो मुझसे खेल।
रात–दिन नचा–नचा कर
देख रहा जीवन की रेल।

अंत समय तू पछताएगा
तिनका तक न ले जाएगा।
संगी साथी तेरे अपने
छूट जायेंगे सारे सपने
तू डूबा था भौतिक सुख में
भक्ति योग को समझ न पाया।

मैं खिलौना हूँ उसका
खेल रहा वो मुझसे खेल।
रात–दिन नचा नचा कर
देख रहा जीवन की रेल।

आत्मिक सुख , शांति एवं आनंद की अखंड अनुभूति

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

"मानवीय नजरिया सामान्यतः वास्तविकता के प्रति पूर्णतः ठोस एवं विश्वास से भरा हुआ रहता है तथा संदेह की कोई भी गुंजाइश मानव के मस्तिष्क पटल पर परिलक्षित नहीं होती है , सत्यता के समीप से दर्शन की अभिलाषा प्राणी जगत में रहती है तथा वह प्रमाणिकता के वास्तविक स्वरुप का अखंड दर्शन करना चाहता है यहां पर यह अनुभूति होना जिसमें विश्वास को दीर्घ समय से संजोकर रखा जाना सम्मिलित है वही आज दर्शनीय मूर्ति के रूप में समाज के सम्मुख प्रकट होने के लिए तत्पर है। आत्मिक सुख, शांति एवं संतोष की अनुभूति जब आत्मा शरीर के माध्यम से करती है तो वह इसका प्रकटीकरण भी हमारे शरीर के विभिन्न भाव – भंगिमाओं के माध्यम से सभी मानव के समक्ष कर देती हैं आत्मा अखंड है तथा उसका नाश कभी किसी अवस्था में नहीं होता परन्तु आत्मा की कीर्ति पर आंच का प्रभाव अवश्य पड़ता है और वह कहीं सम्मान एवं आलोचना के पात्र के रूप में परिलक्षित होती है । "

अंतर को आत्मसात करके उत्थान : भिन्न – भिन्न अवस्थाओं के अंतर्गत सम– विषम परिस्थितियों में अंतर कर लेना तथा उसके वास्तविक स्वरुप के अनुसार समझ लेना और निश्चिन्त हो जाना कदाचित् स्वरूपगत सफलता की निशानी हो सकती है लेकिन इससे यह तथ्य प्रमाणित नहीं होता है कि व्यक्ति द्वारा मात्र वस्तु या विषय के सम्पूर्ण विश्लेषण कर लेने से ही पुरुषार्थ अनवरत गतिमान रहेगा अपितु संकल्पित कार्य में सफलता हेतु पुरोधाओं को भी अदृश्य शक्तियों द्वारा अभिप्रेरित सहयोगात्मक शक्तियों की आवश्यकता होती है और यह शक्तियां ईश्वर के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं से प्राप्त नहीं हो सकती हैं ।

अतः शक्तियों की प्राप्ति के लिए निरंतर परम सत्ता के गुणों का मनन – चिंतन करना होगा तथा स्मृति को शक्तिशाली बनाने के लिए उस असीम की अनुभूति में रहना एक

अनिवार्य शर्त है इस प्रकार आनंद की प्राप्ति होती रहेगी तथा मानव शक्तिशाली बन जाएगा फलस्वरूप प्रबल क्रियमाण में निरंतरता का समावेश होता रहेगा और सफलता कदम चूमने के लिए प्रतीक्षा करेगी तथा व्यावहारिक लक्ष्य तक पहुँचने हेतु मानव की चाहत पूर्ण होने में जो अवरोध उत्पन्न होते हैं, उन बाधाओं को प्रायः कोसा जाता है जो प्रायः स्थूल गतिरोध की सीमा में सम्मिलित किये जाते हैं ।

सामान्यतः मानव का सांसारिक – 'विस्मृति' में परिवर्तित होना प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित नहीं होता और इस ओर ध्यान भी नहीं जाता, जिसमें सोच के आरंभिक स्तर एवं चिंतन की दिशा का पता चल सके अतः परिवेश तथा परम्परागत चिंतन धारा के सामंजस्य से प्रवाहित 'अंतर' को आत्मसात कर उत्थान के मार्ग की ओर प्रशस्त करने की आज आवश्यकता है।

अंधकार से प्रकाश की ओर : मानव की यह पुकार जिसमें अंधकार से प्रकाश की ओर चलने की बात यह स्पष्ट संकेत करती है कि वह वातावरण में सकारात्मक परिवर्तन करना चाहता है एवं स्वयं की अभिलाषा को प्रार्थना के समय व्यक्त किया जाता है जिससे मनोकामना पूर्ण हो सके परन्तु यहाँ प्रश्न उपस्थित होता है कि दीर्घ अवधि के व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी – " मैं मूरख खल कामी...पाप हरो देवा..." को यथावत प्रार्थना में उपयोग किया जाना यह प्रमाणित करता है कि मानवीय सोच एवं हृदय परिवर्तन के साथ व्यवस्थित सुधार के लिए कोई महत्वपूर्ण प्रयास नहीं किया गया है।

प्रायः सभी तथ्यों तथा वाक्यांशों को सामान्य बात समझते हुए परम्परागत विधि से अर्चना करने में स्वयं को संलग्न रखने की प्रथा आज भी प्रचलित है इस प्रकार आराधना का अभिप्राय है मनरूस्थिति एवं दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन है , जो निजी सोच को औचित्यपूर्ण बनाये रखने में मददगार बन जीवन के व्यावहारिक पक्ष को सक्षमता प्रदान कर सके।

सम्पूर्ण सुरक्षा हेतु प्रार्थना सच्चे हृदय से होनी चाहिए क्योंकि 'सांच को आंच नहीं ' जैसी सूक्तियां विभिन्न प्रकार के घटनाक्रमों द्वारा मानव जीवन में घटित होती रहती हैं तथा मानव को सचेत करती हैं कि – विजय सत्य की ही होगी जो वास्तविक रूप से – "असतो मा सद्गमय..तमसो मा ज्योतिर्गमय ..." अर्थात् असत्य से सत्य की ओर तथा 'अंधकार' से प्रकाश की ओर प्रवृत होने का मूलभूत महामंत्र है अतः आज यह मंत्र अमिट शिलालेख की भांति दिशा निर्देशक बन, मानव जाति को सम्पूर्ण आशावादी होने की अभिप्रेरणा प्रदान कर रहा है।

अकस्मात स्थिति में निमित्त भाव : जीवन में अनेक घटनाएं होती रहती हैं और इन घटित होने वाली घटनाओं में मानवीय दृष्टिकोण के अनुसार शुभ – अशुभ का संकेत प्राकृतिक माध्यमों द्वारा किसी न किसी प्रकार से मानव को प्राप्त हो जाया करता है और प्रायः यह मान लिया जाता है कि पूर्वाभास हो जाने के पश्चात् यदि कोई कदम उठाया जाता है तो परिणिति होनी एवं अनहोनी के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हो जाती है तो क्या इस प्रकार के संकेतों को जानने के बाद उस दिशा में कुछ ना कुछ सकारात्मक प्रयास करते रहना चाहिए ।

मानव अपनी सामर्थ्य के अनुसार विभिन्न उपागमों द्वारा नवीन प्रयत्न करता रहता है अतः इस प्रक्रिया में घटनाओं के व्यावहारिक स्वरुप में परिवर्तन होने के पश्चात् स्वविवेक एवं आपसी परामर्श के अनुसार उस निश्चित दिशा में पुरुषार्थ की योजना बनाई जाती है तथा प्रकृति के निर्णय के अनुसार यदि घटनाक्रम उनके पक्ष में जाता है तो अपने पुरुषार्थ को सफलता का घोतक मानते हैं और यदि घटना उनकी सोच के प्रतिकूल घटी तो सम्पूर्ण दोष – 'होनी' अर्थात् 'ईश्वर को यही मंजूर था' के रूप में निरुपित करते हैं।

इस प्रकार मानव बुद्धि का प्रयोग कार्य सिद्धि की दिशा में स्वयं को श्रेय एवं क्षति की दशा में ईश्वर पर सहज भाव से दोषारोपण कर दिया जाता है अतः नियंता द्वारा रचित सृष्टि में मानवीय कर्म की दिशा यदि सत्कर्म की ओर रहती है तो समस्त घटनाक्रम उसके पक्ष में चले जाते हैं तथा विपरीत दिशा में कदम बढ़ाने के फलस्वरूप मानव को बीज रूपी कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति होती है इस प्रकार कर्म, अकर्म एवं विकर्म के सिद्धांतों के व्यावहारिक अनुपालन द्वारा परिणाम की प्राप्ति पक्ष – विपक्ष अथवा 'अकस्मात' होने पर भी निमित्त भाव बना रहता है।

अक्सर विधि द्वारा कार्य संपन्नता : मनुष्य किसी भी कार्य को महत्ता प्रदान करने हेतु दृढ़ – संकल्प करता है और उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए यत्न पूर्वक प्रयत्न करता है तथा प्रयास करने की श्रृंखला उस समय तक मानव को संकल्प निभाने में सहयोग करती है जब तक कि मानवीय कोशिश सही दिशा में गतिशील है और किसी को दुःख पंहुचाने के निमित्त नहीं बनती यदि संकल्प की पूर्णता में अन्य व्यक्तियों को शारीरिक या मानसिक कष्ट पहुँचता है तो इसका तात्पर्य है प्रयास सार्थक रूप से पूर्ण नहीं किया गया है।

यहां प्रयास की स्थिति इस सच्चाई के प्रति वास्तविक रूप से प्रतिबद्ध नहीं है कि सफलता के सोपान में जो भी कठिनाईयां आएं उसका समाधान स्वतः खोज निकालें तथा उसे स्वयं ही सकारात्मक शक्ति के रूप में ग्रहण करें तथा कार्य पूर्णता के मार्ग में प्राप्त हुए कष्टों का निवारण श्रम द्वारा संपन्न हो, भले ही इसके लिए स्वयं पर अत्यधिक नियंत्रण ही क्यों न करना पड़े और उस नियंत्रण की परिणिति 'समय पर कार्य की सम्पन्नता' से ही क्यों न जुड़ी हो क्योंकि संकल्प की पूर्णता में संदेह का समावेश उस वक्त होता है जब वह समय पर सम्पन्न न किया जाए।

पुनश्च निर्धारित कर्तव्य हेतु जो प्रयास मानव द्वारा समय पर किये जाते हैं उनमें प्रकृति भी विभिन्न रूपों में सहयोगी ही नहीं अपितु प्रेरणा स्रोत बन कार्य संपादन की विधा को सापेक्ष स्वरुप प्रदान करती है अतः समस्त बाधाओं से सुरक्षित रह संकल्प सिद्धि हेतु मानव द्वारा किए जाने वाले कर्मों में लोचशीलता का समावेश किन्ही विशेष परिस्थिति में किया जाना उपयोगी हो सकता है परन्तु मानवीय पुरुषार्थ और पूर्णता की दिशा में बढ़ते कदम के मध्य 'अक्सर' समयबद्ध तरीके से कार्य संपन्न होना सकारात्मक स्थिति का परिचायक होता है ।

अखण्डता द्वारा आनंद की अनुभूति : मानवीय नजरिया सामान्यतः वास्तविकता के प्रति पूर्णतः ठोस एवं विश्वास से भरा हुआ रहता है तथा संदेह की कोई भी गुंजाइश मानव के मस्तिष्क पटल पर परिलक्षित नहीं होती है, सत्यता के समीप से दर्शन की अभिलाषा प्राणी जगत में रहती है तथा वह प्रमाणिकता के वास्तविक स्वरुप का अखंड दर्शन करना चाहता है यहां पर यह अनुभूति होना जिसमें विश्वास को दीर्घ समय से संजोकर रखा जाना सम्मिलित है वही आज दर्शनीय मूर्ति के रूप में समाज के सम्मुख प्रकट होने के लिए तत्पर है ।

आत्मिक सुख, शांति एवं संतोष की अनुभूति जब आत्मा शरीर के माध्यम से करती है तो वह इसका प्रकटीकरण भी हमारे शरीर के विभिन्न भाव – भंगिमाओं के माध्यम से सभी मानव के समक्ष कर देती हैं आत्मा अखंड है तथा उसका नाश कभी किसी अवस्था में नहीं होता परन्तु आत्मा की कीर्ति पर आंच का प्रभाव अवश्य पड़ता है और वह कहीं सम्मान एवं आलोचना के पात्र के रूप में परिलक्षित होती है ।

यह पूर्णतः सत्य है कि शरीर रूपी मंदिर में विराजित आत्मा का अपमान मंदिर की पवित्रता में खंडन होने के कारण अथवा मंदिर की कर्मेन्द्रियों द्वारा शुद्धता की महत्ता से परिचित न हो पाने के कारण होता है तथा इस सत्यता को भी झुठलाया नहीं जा सकता कि – खंडित मूर्ति कभी भी दर्शनीय नहीं होती और न ही मानव की कामना व विश्वास की रक्षा में सफल हो सकती है अतः ईश्वर की संतान होने के नाते सर्व मानव को पवित्रता की 'अखण्डता' द्वारा आनंद की अनुभूति कराने की आज आवश्यकता है।

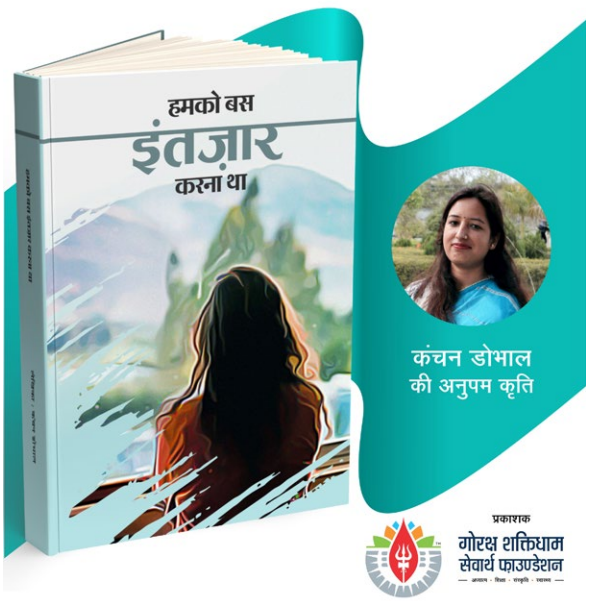

Flipkart amazon पर उपलब्ध

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई–पत्रिका

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?

क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज – कलम उठाते हैं?

क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनांए आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 मार्च 2024

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेंजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह ई पत्रिका पूर्णतः निः शुल्क है। अपनी रचनाएँ ई–मेलः **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

सन्तश्रेष्ठ तुकाराम

भावना दामले
स्वतंत्र लेखन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

हमारी भारत भूमि महान संतों की भूमि है। यहाँ पर अनेक संत तथा महात्मा हुए हैं, जिन्होंने समाज सुधार का अलौकिक कार्य किया है। इनमें भक्त कवियों का नाम इतिहास में अमर है। इन भक्त कवियों ने भगवान की भक्ति करने के साथ–साथ जन जागरण का महत्वपूर्ण कार्य किया है। ऐसे ही एक संत हुए हैं, संत तुकाराम।

इनका जन्म महाराष्ट्र में पुणे के पास देहू नामक गाँव में हुआ था। इनका परिवार आर्थिक रूप से संपन्न था, इनकी 2 पत्नियां थी, पहली पत्नी की 2 संताने थी। दूसरी की नही थी। कुछ समय बाद माता पिता का देहान्त हो गया। उनका मन उदास हो गया। भयंकर अकाल पड़ा। उसमें धन सम्पति चली गयी। पहली पत्नी का भी निधन हो गया। गरीबी आने पर गाँव में उनका मान सम्मान भी नही रहा लोग उनको टालने लग। काम धंधा भी बंद हो गया। दिन काटना मुश्किल हो गया। ऐसे हालात में तुकाराम के मन में विरक्ति उत्पन्न हो गयी। मन संसार से ऊब गया।

गाँव में एक पुराना मंदिर था। उसकी साफ–सफाई कर भगवान विट्ठल का नाम जपते हुए वहीं रहने लगे। एकादशी का व्रत तथा भगवान का नाम कीर्तन करने लगे। आने जाने वाले तीर्थ यात्रियों की तथा अकाल पीड़ित जानवरों की सेवा कर अपने दिन बिताने लगे। इन सबका परिणाम यह हुआ कि वे अपने मन का भक्ति भाव और अपने मन के विचार काव्य के रुप में प्रगट कर अभंग रचना करने लगे। अभंग भक्ति काव्य का रुप है, जो भगवान की स्तुति में गाया जाता है। उनका कहना था कि भगवान विट्ठल का नाम अमृत से भी श्रेष्ठ है। वे भगवान के सच्चे भक्त थे। कुछ लोग उनको मानते थे तो कुछ लोग उनकी निंदा करते थे। तुकाराम उनके साथ समान व्यवहार करते थे और हरि भजन में मग्न रहते थे।

तुकाराम जी भक्ति की प्रसिद्धि चारों ओर फैलने लगी। भगवान पांडुरंग तुकाराम जी के साथ भोजन करते हैं, ऐसा लोग मानने लगे स चिंचवड में देव नाम का एक गणेश भक्त था,

उसपर भगवान की विशेष कृपा थी। उसके मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई कि मैं प्रतिष्ठित ब्राह्मण हूँ और गणेशजी मुझपर प्रसन्न है। यह साधारण तुकाराम भगवान को कैसे वश में कर लेता है, इसकी परीक्षा लेनी चाहिए। तुकाराम को जब यह बात पता चली तो वह खुद उस ब्राह्मण से मिलने गये। दोपहर के समय सभी ब्राह्मण लोग भोजन के लिए बैठे। तुकाराम जी के पास एक थाली भगवान पांडुरंग की लगाई गई, तब तुकाराम जी ने कहा कि एक थाली गणेश जी के लिये भी लगाये और उनकी प्रार्थना करें वे भोजन के लिए आयेंगे। उस देव ब्राह्मण तथा अन्य ब्राह्मणों ने गणेशजी की बहुत प्रकार से प्रार्थना की पर गणेश जी भोजन के लिए नही आये। तब वे सभी तुकाराम से बोले कि पाषाण मूर्ति भोजन कैसे करेगी? हम जो भोग लगाते हैं उसकी सुगंध ईश्वर तक पहुँचती है। तुकाराम जी बोले मैं ईश्वर से विनती कर उन्हें बुलाता हूँ। कुछ पल बाद ही उन्होंने कहा कि तुम लोग भोग लगाते हो, पर गणेशजी यहाँ पर नही है, उनका एक भक्त पानी में डूब रहा था, उसे ही बचाने के लिए वो बहुत दूर गये हैं। सच्चाई देखने के लिए थोड़ी देर रुको। सभी ब्राह्मणों को आश्चर्य हुआ। थोड़ी देर बाद उन्होंने मुर्ति की तरफ देखा तो मुर्ति पूरी तरह से पानी में भीगी हुई थी और पीताम्बर, (धोती) को हाथ लगातार देखा तो वह भी पानी में भीगा हुआ था। तुकाराम जी से पूछने पर उन्होंने कहा कि भक्त को बचाने के लिए भगवान ने पानी में डुबकी लगाई है और उसे किनारे पर रखकर गणेश जी यहाँ आ गये हैं। तुकाराम जी से पूछने पर स्वयं गणेश जी ने ही कहा कि तुकाराम पर शेषशायी भगवान विष्णू प्रसन्न है, इसलिए हम भी प्रसन्न है। तब तुकाराम जी ने कहा कि भगवान पांडुरंग भोजन के लिए आ गये हैं तब लोग तुकाराम जी से कहते हैं कि अब तुम गणेशजी को भी बुला लो तो अच्छा रहेगा तुकाराम जी गणेश जी स्तुति कर उन्हें भोजन के लिए बुलाते हैं। सभी लोग आश्चर्य से देखते हैं कि भगवान पांडुरंग और गणेश जी की थालियों के भोज्य पदार्थ खत्म हो रहे थे पर खाते हुए कोई भी नही दिख रहा था। सभी ब्राह्मण कहने लगे कि हमने गणेशजी की इतनी आराधना की पर प्रत्यक्ष गणेशजी ने कभी भोजन नही किया। तुकाराम जी ने यह असाध्य कार्य कर दिखाया। भगवान की सच्चे मन से भक्ति की जाये तो भगवान भी भक्तों के वश में हो जाते हैं।

तुकाराम अपने गाँव देहू की ओर आने लगे। रास्ते में एक माली उनको आदर सहित अपने बगीचे में ले जाता है और बहुत ही प्रेम से गन्ने का मीठा रस पिलाता है। कुछ गन्ने घर ले जाने के लिए देता है। तुकाराम गन्ने लेकर अपने गाँव आते हैं। गाँव के बच्चे उनसे गन्ना माँगते हैं। उनके मन में अपने तथा पराये बच्चों के बीच कोई भेदभाव नहीं था इसलिए गन्ना उन बच्चों को बाँट देते हैं। घर आने तक केवल एक ही गन्ना बचता है। तुकाराम की पत्नी यह सब देखती है। उसका स्वभाव तेज था। तुकाराम पत्नी को समझाने की कोशिश करते हैं, तब तक वह उनके हाथ से गन्ना छीन लेती है और चिल्लाकर कहतीं है कि घर पर बच्चे भूखे हैं और तुमने गन्ना दूसरे बच्चों को बाँट दिया। गुस्से में गन्ना तुकाराम की पीठ पर मारती है। गन्ने के तीन टुकड़े होते हैं, एक उसके हाथ में रहता है और दो नीचे गिर जाते हैं। तुकाराम अत्यन्त शान्ति से कहते है कि बहुत अच्छा बंटवारा किया तुम्हारा हिस्सा तुम्हारे पास रहा बचे हुए को मैं और बच्चे बाँट लेंगे। उनकी पत्नी समझ जाती है कि अपने पति का घर परिवार की ओर ध्यान नही है। वे स्वभाव से विरक्त है।

तुकाराम जी हमेशा पंढरपुर जाकर भगवान पांडुरंग के दर्शन करते थे। एक बार वे बीमार हो गए तो पंढरपुर जा नही सके, तब जो लोग जा रहे थे उनके साथ भगवान के लिए एक पत्र लिखकर भेजा, जिसमें करुण रस से ओतप्रोत अभंग लिखे थे। उसमें अनेक प्रकार से प्रभु से विनती की गयी थी। भगवान के सच्चे विरही भक्त की अवस्था दृष्टि गोचर होती हैं।

तुकाराम जी ईश्वर का कीर्तन करते हुए लोक जागरण का महती कार्य करते थे। उन्होंने हजारों अभंग लिखे जो भगवान पांडुरंग को समर्पित थे। सहज, सरल भाषा में लिखे गए अभंग लोगों को पसन्द आने लगे। लोग उनको मानने लगे, लोगों में उनकी कीर्ति फैलने लगी। कुछ लोगों को उनकी लोकप्रियता सहन नही हुई। उन लोगों ने तुकाराम की लिखी हुई अभंगो की बहियों को पानी में डुबोने की सोची। उनका कहना था कि इसने कर्म मार्ग छोड़ दिया है, भक्ति मार्ग के सिवाय कुछ भी नही सोचता है, यह ठीक नहीं है। वे तुकाराम के पास आकर कहते हैं कि तुम प्राकृत अशुद्ध भाषा में लिखते हो, जो कोई भी नही सुन सकता है। इसलिए हम तुम्हारी इन बहियों को इंद्रायणी नदी में डूबो रहे हैं। तेरह दिन बाद इन्हें बाहर निकालेंगे। यदि ये सूखी रहीं तो तुम्हारी कवित्त प्रतिभा को मान लेंगे। तुम्हें भगवान का सच्चा भक्त मानेंगे। उन लोगों ने तुकाराम की अभंग की बहियों को पत्थर के साथ बांधकर इंद्रायणी नदी में डुबो दिया। तुकाराम जी को बहुत बुरा लगा। वे भगवान पांडुरंग के मन्दिर में धरना देकर ही बैठ गए। पूर्ण समर्पण तथा भक्तिभाव से प्रार्थना करने लगे। कहने लगे। आपने मुझसे अभंग लिखवा लिए, वे डुबाने के लिए ही लिखवाये थे क्या? आप को जो उचित लगे वो करना। भगवान पांडुरंग का नाम जपते हुए मन्दिर में ही बैठे रहे। तब भगवान ने बाल रुप में प्रगट होकर संकट दूर करने का अभय वचन दिया। तेरह दिन तक तुकाराम जी मन्दिर में उपोषण पर बैठे रहे। तेरह दिन बाद जब उनकी अभंग की बहियों को नदी में से निकाला गया तब वह जरा भी भींगी हुई नही थी, पूर्ण रूप से सूखी थी। लोगों को पश्चाताप हुआ कि उन्हों ने तुकाराम पर आरोप लगाया। लोगों ने उन बहियों को तुकाराम के सामने रखा और उनसे क्षमा माँगी। अपनी बहियों को देखकर तुकाराम जी बहुत आनंदित हुये और वहीं पर सात अभंगो की रचना की। विनीत भाव से कहने लगे, हे देव, मैंने आपको बहुत कष्ट दिया। मेरा सब भार आप पर डाला। तेरह दिन तक आपको पानी में खड़ा रखकर बहियों को सम्भालने को कहा, आगे अब कभी ऐसी गलती नही करूँगा। ऐसा कहकर क्षमा माँगी और पांडुरंग भगवान का स्तुति गान किया। मन ही मन भगवान का आलिंगन किया।

तुकाराम महाराज ने भगवान के प्रति अपने निस्सीम प्रेम और अगाध भक्ति के द्वारा यह दर्शाया कि भगवान तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग भक्ति मार्ग ही है। तुकाराम का जीवन चरित्र हमेशा प्रेरणा देता रहेगा और हमारा मार्ग दर्शन करता रहेगा। ■

लघुकथा

पंडित कैलाशनारायण
ज्योतिषाचार्य
उज्जैन, मध्य प्रदेश

एक दिन किसी निर्माण के दौरान भवन की छटी मंजिल से सुपरवाईजर ने नीचे कार्य करने वाले मजदूर को आवाज दी। निर्माण कार्य की तेज आवाज के कारण नीचे काम करनेवाला मजदूर कुछ समझ नहीं सका की उसका सुपरवाईजर उसे आवाज दे रहा है। फिर सुपरवाईजर ने उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए एक १० रु का नोट नीचे फैंका, जो ठीक मजदूर के सामने जा कर गिरा मजदूर ने नोट उठाया और अपनी जेब मे रख लिया, और फिर अपने काम मे लग गया। अब उसका ध्यान खींचने के लिए सुपर वाईजर ने पुनः एक ५00 रु का नोट नीचे फैंका। उस मजदूर ने फिर वही किया और नोट जेब मे रख कर अपने काम मे लग गया। ये देख अब सुपर वाईजरने एक छोटा सा पत्थर का टुकड़ा लिया और मजदूर के उपर फैंका जो सीधा मजदूर के सिर पर लगा। अब मजदूर ने ऊपर देखा और उसकी सुपरवाईजर से बात चालू हो गयी। ये वैसा ही है जो हमारी जिन्दगी मे होता है.....

भगवान् हमसे संपर्क करना, मिलना चाहता है, लेकिन हम दुनियादारी के कामो मे व्यस्त रहते है, अतः भगवान् को याद नहीं करते। भगवान् हमें छोटी छोटी खुशियों के रूप मे उपहार देता रहता है, लेकिन हम उसे याद नहीं करते, और वो खुशियां और उपहार कहाँ से आये ये ना देखते हुए, उनका उपयोग कर लेते है, और भगवान् को याद नहीं करते। भगवान् हमें और भी खुशियों रूपी उपहार भेजता है, लेकिन उसेभी हम हमारा भाग्य समझ कर रख लेते है, भगवान का धन्यवाद नहीं करते, उसे भूल जाते है। तब भगवान् हम पर एकछोटा सा पत्थर फैंकते है, जिसे हम कठिनाई कहते है, और तुरंत उसके निराकरण के लिए भगवान् की और देखते है, याद करते है। यही जिन्दगी में हो रहा है। यदि हम हमारी छोटी से छोटी खुशी भी भगवान् के साथ उसका धन्यवाद देते हुए बाँटें, तो हमें भगवान् के द्वारा फैंके हुए पत्थर का इन्तजार ही नहीं करना पड़ेगा।

सांस्कृतिक कवयित्री महादेवी

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

अपने देश की जो सांस्कृतिक परंपरा रही है, महादेवी सच्चे अर्थों में उसकी प्रतिनिधि थीं। वे छायावादी, राष्ट्रवादी कवयित्री से ऊपर उठकर सांस्कृतिक कवयित्री थीं, जिसमें सर्जनात्मक काव्य की सरसता और चिंतनात्मक दर्शन की गंभीरता दोनों तत्व समान रूप से मिलते हैं। वैदिक ऋषियों ने जिस आध्यात्मिक अनुभूति के महत्व की स्थापना करते हुए भारतीय संस्कृति का सूत्र संचालन किया, इस युग में महादेवी ने वह कार्य किया है। उनका कृतित्व और व्यक्तित्व इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उन्होंने लिखा है कि– इस बुद्धिवाद के युग में भी मुझे जिस अध्यात्म की आवश्यकता है, वह किसी रुढ़ि, धर्म या संप्रदायगत न होकर उस सूक्ष्मता की परिभाषा है, जो व्यष्टि की समग्रता से समष्टिगत एक प्राणता का आभास देती है। इस प्रकार वह मेरे संपूर्ण जीवन का एक ऐसा सक्रिय पूरक है, जो जीवन के सब रूपों के प्रति मेरी ममता समान रूप से जगा सकता है। सब रूपों के प्रति समान रूप से ममता जगाने वाले भाव को ही समात्व भाव कहा गया है। महादेवी इसी भावोन्मेष की सांस्कृतिक कवयित्री हैं।

एक नया आकलन : आज की परिस्थिति में जब मूल्यों का इतना विघटन हो रहा है, तब महादेवी की रचनाओं को बिल्कुल नए सिरे से देखने–पढ़ने की आवश्यकता हो गई है। यदि भारत की धरती को भारत की ही धरती बने रहना है, जिसकी एक अत्यंत विकसित, समृद्ध परंपरा, मूल्यवत्ता रही है, तो उनकी रचनाओं का अध्ययन–मनन, उनका प्रचार–प्रसार व्यापक पैमाने पर आवश्यक है। साहित्य के इतिहास में महादेवी के समान मौलिक चिंतन–शीलता और विशद कल्पना के उदाहरण कम ही मिलेंगे। भावना, विचार और चिंतन

के क्षेत्र में उन–जैसी प्रौढ़ और आत्मविश्वासी नारी का मिलना भारतीय साहित्य में ही नहीं विश्व साहित्य में भी कठिन है। वे आस्था, आनंद और सौंदर्यमय जीवन की गायिका रही हैं। दर्शन, अध्यात्म तथा काव्य एकरस होकर जिस महारस की रचना करते हैं, वही रस उनके काव्य की अपनी उपलब्धि हैं। उनकी कविता का मुख्य गुण संभवतः उसकी कोमलता, उसका भोलापन है। उनकी कविताओं को पढ़ते हुए बार–बार ऐसा लगता है कि अगर कहीं यह गीत छुए जा सकते, तो वे निश्चय ही बिखर जाते, झर जाते– हरसिंगार के फूलों की तरह। उनके गीतों की पहली और अंतिम पंक्तियों तो अपने संकेतों से एक इतिहास कह देती हैं। इन गीतों का कला पक्ष भी उतना प्रबल है जितना भाव पक्ष। गीत के छंद और लय पर इतना सहज अधिकार कम मिलता है। उसमें कहीं भी प्रयास नहीं दीख पड़ता। समूचा गीत सांचे में ढाला–सा लगता है। गेयता उनमें इतनी है कि पढ़ते समय व्यक्ति बरबस गुनगुनाने लगता है और बार–बार गुनगुनाने का मन होता है।

बहुमुखी प्रतिभा : उनकी अद्‌भुत प्रतिभा को देखकर चमत्कृत रह जाना पड़ता है। कितना बहुआयामी व्यक्तित्व था उनका। कवि, गद्यकार, आलोचक, संस्मरण लेखिका, चित्रकर्ती, प्रबुद्ध वक्ता, शिक्षाविद और इतने सारे गुणों का समन्वय एक साथ उनमें विचित्र रूप से समाहित था। उनका व्यक्तित्व समात्मभाव की साधना से जितना सरल, मधुर, करुण और कोमल था उनका कृतित्व उतना ही उदात्त, व्यापक, विराट और महान है। हिमालय को संबोधित करते हुए उन्होंने जैसे अपने व्यक्तित्व और कृतित्व का अनायास ही परिचय दे दिया हो–

हो चिर महान
मेरे जीवन का आज मूक, तेरी छाया से हो मिलाप,
तन तेरी साधकता छू ले मन ले करुण की थाह–नाप,
उर में पावस दृग में विहान

महादेवी का संपूर्ण साहित्य आस्था, उपासना और उत्सर्ग का साहित्य है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य–गीत और दीपशिखा तथा उनकी 'प्रथम आयाम' काव्य पुस्तके मंगलमय यात्रा के ज्योतिर्मय चरण चिह्न हैं। उनका मानना था कि– दर्शन पूर्ण होने का दावा कर सकता है, धर्म अपने निर्भ्रात होने की घोषणा कर सकता है, परंतु साहित्य मनुष्य की शक्ति, दुर्बलता, जय–पराजय, ह्रास–अश्रु और जीवन–मृत्यु की कथा है। वह मनुष्य से अवतरित होने पर स्वयं ईश्वर को भी पूर्ण मानना अस्वीकार कर देता है। उन्होंने लिखा है– ''कला के पारस का स्पर्श पा लेने वाले कलाकार के अतिरिक्त कोई नाम नहीं, साधक के अतिरिक्त कोई स्वर्ग नहीं, सप्त के अतिरिक्त कोई पूंजी नहीं, भाव–सौंदर्य के अतिरिक्त कोई व्यापार नहीं और कल्याण के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं।'' अपने 7 दशक से ऊपर की लेखन अवधि में उन्होंने एकनिष्ठ होकर अबाधगति से अपने भावमय सृजन और कर्ममय जीवन की साधना में साथ–साथ संलग्न रहकर अपनी लिखी हुई बात को सार्थक बनाया है।

साहित्य में विविधता

महादेवी की संपूर्ण काव्य–यात्रा न सिर्फ आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास बनाने की साक्षी है, वरन भारतीय मनीषा की महिमा का भी वह जीवंत प्रतीक है। उनकी कविताएं हिंदी साहित्य की कालजई उपलब्ध है। सीता की अग्नि परीक्षा, बुद्ध का गृहत्याग और महादेवी का विद्रोह सत्य को सुंदर और सुंदर को शिव बनाने की प्रक्रिया का प्रतीक है। जिसके द्वारा राग–द्वेष से मुक्त होकर मनुष्य जीवन की उच्चतम भूमि पर चढ़ सकता है। इनके विद्रोह में आग की लपटों का आवेग नहीं, दीपक की लौ की आलोकवादी स्निग्धता है। चमत्कारी बुद्धि का उतावलापन नहीं, भावावेश को स्पंदित कर देने वाली हार्दिकता का विश्वास है, संकोच, संदेह तथा भय–पराजय का भाव नहीं, विजय की वह विनम्रता और उदारता है, जिस पर साधना का पानी चढ़ा हुआ है। विद्रोह की मंगलमुखी भावना पर ही इनकी आस्था है।

महादेवी अपनी विराट संवेदनशीलता के उन्मेष में लोक–कल्याण की भावना को व्यक्तिगत मोक्ष से कई गुना अधिक महत्व देती जान पड़ती हैं। वे संसार से विषाद, क्लेश और ताप को दूर करके उल्लास, आनंद और शीतलता की रचना करने को उत्सुक हैं–

मैं उन मुरझाए फूलों पर संध्या के रंग जमा जाती
मैं पक के संगी फूलों को, सौरभ के पंख लगा जाती।

अपने को गलाकर पृथ्वी को शीतलता देने वाले– **''उस घन की हर कंपन पर मैं शत–शत निर्वाण लूटा जाती।''** केवल इतना ही नहीं यदि कवयित्री में क्षमता होती, तो वह विश्व को इतना रम्य, साधनापीठ और आनंदमय बना जाती कि इसका सृष्टा भी इसके प्रति आकर्षित हो उठता–

सूधि विद्युत की तूली लेकर
मृदु मोम फलक सा उर उन्मन
मैं घोल अश्रुओं में ज्वाला कण
चिर मुक्त तुम्हीं को जीवन के
बंधन हित विकल दिखा जाती।

तुलसी ने लोकमंगल की भावना से जिस बल पर आत्म–विश्वास के साथ कहा था– **''संभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी, रामचरित मानस कवि तुलसी।''** उसी अकंप विश्वास के साथ महादेवी ने भी कहा है–

विद्युत घन में बुझने आती
ज्वाला सागर में घुल जाती
मैं अपने आंसू में बुझ, घुल देती आलोक विशेष रही।
जो ज्वारों में पलकर न बहे,
अंगार चुगें जल जात रहें

मैं गत आगत के चिर–संगी सपनों का कर उन्मेष रही

एक ही चैतन्य कहीं दीप बनकर जल रहा है, तो कहीं फूल बनकर खिल रहा है–

''लघु हृदय तुम्हारा अमर छंद, स्पंदन में स्वर लहरी अमंद

हर स्वप्न स्नेह का चिर निबंध, हर पूलक तुम्हारा

भाव बंध निज सांस तुम्हारी रचना का लगती अखंड विश्वास मुझे

समन्वय, सामंजस्य और सापेक्षताओं के साथ समत्व की भावना का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत है–

हो गई आराध्य मैं विरह की आराधना ले
विरह का युग आज दीखा मिलन के लघु पल सरीखा
दु:ख–सुख में कौन तीखा मैं न जानी औ न सीखा
मधुर मुझको हो गए सब मधुर प्रिय की भावना ले

महादेवी की समात्मभावना, रागात्मक अनुभूति की तीव्रता से सर्वव्यापक होकर इतनी प्रत्यक्ष और जीवंत हो उठती है कि सर्व भूत हितरत क्रियाओं में उसका स्वरूप परिलक्षित होने लगता है। भाव, क्रिया और बोध का यही समन्वय अध्यात्म की चरम परिणति और काव्य की उच्चतम उपलब्धि है।

महादेवी ने लिखा है– ''इस युग का कवि हृदयवादी हो चाहे बुद्धिवादी, स्वप्नदृष्टा हो चाहे, यथार्थ का चित्रकार, अध्यात्म से बंधा हो या भौतिकता का अनुगत, उसके निकट एक ही मार्ग शेष है कि अध्ययन से मिली जीवन की चित्रशाला से बाहर आकर जड़ सिद्धांत का पाथेय छोड़कर अपनी संपूर्ण संवेदना–शक्ति के साथ जीवन में घुल–मिल जाए। उसकी केवल व्यक्तिगत सुविधा–असुविधा आज गौण है, उसकी केवल व्यक्तिगत हार–जीत आज महत्व नहीं रखती, क्योंकि उसके सारे व्यक्तिगत सत्य की आज समष्टिगत परीक्षक है।

उनकी कविता की निम्नलिखित पंक्तियों के साथ उनकी स्मृति को प्रणाम।

घिरती रहे रात
न पक रुंधतीं ये गहनतम शिलायें
न गति रोक पातीं पिघल मिल दिशायें
चली मुक्त मैं, ज्यों मलय की मधुर वात
न आंसू गिरे औ न कांटे सजोये
न पग–चाप दिग्भ्रांत उच्छावास खोये
मुझे भेंटता हर पलके–पात में प्रात घिरती रहे रात।

जिस घर में औरतें खुले मन से मुस्कुराती हैं, खुशियां वहां दौड़ी चली आती हैं।

संग्रह करना बुरी बात

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ

एक पथिक सरिता से बोला
'सरिते! तू छोटी इतनी ।
तेरा जल कितना मीठा है
पीकर तृप्ति मिले कितनी!

सागर अति विशाल होता है
लेकिन उसका जल खारा।
इसका क्या रहस्य बतलाओ?
मैं तो सोच – सोच हारा।'

सरिता बोली 'अरे! पथिक जी
मेरा समय न नष्ट करो।
सागर से ही स्वयं पूछ लो
जाने का कुछ कष्ट करो।'

पहुँचा सागर निकट पथिक जब
देखा, वह फैला विस्तृत।
खूब कर रहा गर्जन – तर्जन
दृश्य न पलभर हो विस्मृत।

पथिक ने प्रश्न किया सागर से
वह बोला – 'मैं बहुत हूँ व्यस्त।
जाओ थोड़ी दूर झील है
वह ही उत्तर देगी मस्त।'

कहा झील ने, 'सुनो पथिक जी!
सरिता दीदी है दानी।
जो कुछ मिले दान कर देती
पास नहीं रखती पानी।

संग्रह करना बुरी बात है
परहित हो जीवन सारा।
सागर नहीं बाँटता निज जल
इसीलिए होता खारा।'

तूं विद्या की देवी है हंसवाहिनी...!

मधुबाला शांडिल्य
गोंड्डा, झारखंड

सरस्वती पूजा भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण पर्व है। मां सरस्वती की पूजा बसंत ऋतु के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। इसलिए यह त्योहार **'बसंत पंचमी'** के नाम से भी प्रसिद्ध है। मां सरस्वती को ज्ञान, कला, संगीत और साहित्य की देवी माना जाता है। इसलिए यह पूजा विद्यार्थियों के द्वारा विशेष रूप से आयोजित किया जाता है। हर विद्यार्थी इस दिन मां सरस्वती की पूजा अर्चना कर उनके चरणों में खुद को समर्पित कर उनसे विशेष प्रार्थना कर मां सरस्वती से आशीर्वाद ग्रहण करते हैं–

'मैं वंदन करूं तेरी मां शारदे,
चरणों में तुझको मैं अर्पित करूं,
तूं विद्या की देवी है हंसवाहिनी,
शब्दों को तूं अपनी सुर ताल दे,
है तेरे बिना हर शब्द अधूरा,
जगत को तिमिर से तूं वार दे,
मैं वंदन करुं तेरी मां शारदे,
चरणों में तुझको मैं अर्पित करुं...'

मां सरस्वती अपने मुखमंडल पर तेज लिए, श्वेत वस्त्र धारण करने वाली मां सफेद कमल पर विराजमान है। मां सरस्वती अपनी चार भुजाओं में वीणा, पुस्तक, सफेद कमल और माला को धारण किए हुए है। मां सरस्वती की वीणा, पुस्तक और माला, ज्ञान, संगीत और तपस्या का प्रतीक है। यह हमेशा सतत प्रयास करने को प्रेरणा देती है। उनका सफेद रंग शाश्वत प्रवाह होने का प्रतीक है। यह सफेद रंग पवित्रता, सच्चाई एवं दिव्य ज्ञान का प्रतीक है। यह दिन विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए बेहद महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह दिन उन्हें ज्ञान और शिक्षा की महत्वपूर्णता को याद दिलाता है।

मां सरस्वती की पूजा बड़े ही सम्मान, प्रतिष्ठा और प्रेम के साथ की जाती है। इस दिन मां सरस्वती की मूर्ति को बड़े ही प्रेम और स्नेह से सजाया जाता है। फिर दीप प्रज्ज्वलित कर बड़े ही धूमधाम से उनकी पूजा अर्चना की जाती है। मिठाई और मौसमी फलों का भोग लगाया जाता है। आरती और हवन के साथ ही पूजा को संपन्न किया जाता है। सभी विद्यार्थी मां सरस्वती के चरणों में अपनी पुस्तक, कलम और विद्या से संबंधित अन्य सामग्री को रखते हैं और उनसे ज्ञान की वृद्धि और सफलता की प्रार्थना करते हैं। सरस्वती पूजा भारत के अलावा अन्य कई देशों में भी बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन सभी बच्चे और महिलाएं पीला या श्वेत वस्त्र धारण करना ज्यादा पसंद करते हैं।

सरस्वती पूजा भारतीय समाज में ज्ञान, संगीत और कला की महत्वपूर्णता को प्रकट करने वाला पर्व है। इस पूजा के माध्यम से यह सिखाया जाता है कि, ज्ञान ही असली धन है और उसे प्राप्त करने के लिए हमें निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। सरस्वती पूजा हमें अध्यात्मिक रूप से ईश्वर के साथ जोड़ती है साथ ही यह समाज में एकता, संस्कृति जागरुकता और शैक्षिक प्रोत्साहन को भी बढ़ावा देती है।

"पराई निंदा, चुगलखोरी, असत्य, पीड़ाजनक वचन, परपत्नी, परद्रव्य और हिंसा से जो बचा है, देवता, ब्राह्मण, माता-पिता, गुरु आदि की सेवा करता है, अपने तथा पुत्र के समान सबका भला जाता है और हृदय राग, द्वेष , ईर्ष्या , छल-कपट से मैला नहीं है अर्थात जिसका चित्त- शुद्ध है, उस व्यक्ति से भगवान शिव सदा प्रसन्न रहते हैं।"

उठो हो गई भोर

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
स्वतंत्र लेखन
बिहार

अब उठो हो गई भोर,
रघुबीर दुलारे मेरे।
उल्लू छिपलें सूरज निकलें,
चिड़ियों के कलरव गान भले,
देखो नाचत मोर चकोर।
रघुबीर दुलारे मेरे।
अब उठो हो गई भोर

चंदा निज गेह पधारे,
देखो छीन भए सब तारे,
मिट गए अँधेरे घोर।
रघुबीर दुलारे मेरे।
अब उठो हो गई भोर

खिल गए कमल बावलियों में,
बालक निकले गलि गलियों में,
छाए प्रकाश चहुँ ओर ।
रघुबीर दुलारे मेरे।
अब उठो हो गई भोर

मंदिर घंटा धुनि बाजे,
करने पूजन सब लागे,
चहुँ दिशी मची है शोर।
रघुबीर दुलारे मेरे।
अब उठो हो गई भोर